॥ श्री ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

तेरहवाँ हिस्सा

दुर्गाप्रसाद खत्री रचित

और प्रकाशित

[illegible] १९२७ [मूल्य— ॥

पुस्तक मिलने का पता

नहीं झुर्रियाँ

बनारस मिश्र

॥ श्री ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

चौथा खण्ड

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

रचित और प्रकाशित

दुर्गाप्रसाद खत्रीद्वारा लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

चौथा खण्ड

तेरहवां हिस्सा

पहिला बयान

सुबह का समय है, सूर्योदय होने में अभी विलम्ब है, ठंढी ठंढी दक्षिणी हवा चल रही है और पलंग पर लेटने वालों को नींद में और भी मस्त कर रही है।

खास बाग के महल में अपने सोने वाले कमरे में गोपालसिंह एक सुन्दर पलंग पर लेटे हुए हैं। एक पतली चादर उनके बदन पर पड़ी हुई है पर सिर्फ गर्दन तक, मुंह का हिस्सा खुला हुआ है। वे सोये हुए नहीं हैं बल्कि अभी अभी उनकी आंख खुली है और वे पलंग पर लेटे ही लेटे सामने की खिड़की से नीचे के नजरबाग पर निगाह डाल रहे हैं।

यह छोटा सा नजर बाग खास महल से सटा हुआ और खास बाग के दूसरे दर्जे में है। हमारे पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में इस खास बाग और उसके चारों दर्जों का हाल अच्छी तरह पढ़ चुके हैं। अस्तु यहां पर उसका हाल लिखने की कोई भी जरूरत नहीं है हां सिर्फ इतना कह देना चाहते हैं कि तीसरे दर्जे में बने हुए उस ऊंचे बुर्ज का एक भाग इस खिड़की में से दिखाई पड़ रहा है जिसके सामने गोपालसिंह का पलंग बिछा हुआ है।

इधर उधर निगाहें डालते हुए यकायक गोपालसिंह कुछ चौंक से गये और तकिया के सहारे कुछ उठंग कर गौर से नीचे की तरफ देखने लगे। थोड़ी देर बाद वे पलंग पर उठकर बैठ गये और जब इससे भी मन न माना तो पलंग छोड़ खिड़की के पास आ कर खड़े होगये और नीचे की तरफ देखने लगे। अब हमें भी मालूम हुआ कि जिसने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर किया है वह एक कमसिन औरत है जो इस बाग की रविशों पर इधर से उधर टहल रही है। गोपालसिंह कुछ देर तक खिड़की के पास खड़े सोचते रहे कि यह कौन औरत हो सकती है और उसे यहां आने की क्या जरूरत पड़ सकती है, पहिले तो उनका खयाल महल की लौंडियों की तरफ गया पर थोड़ी ही देर में विश्वास हो गया कि यह उनके महल से सम्बन्ध रखने वाली कोई औरत नहीं है क्योंकि घूमते ही फिरते वह औरत चमेली की एक भाड़ी के पास पहुँची और

उसकी आड़ में कहीं लोप हो गई । कुछ देर तक तो गोपाल-सिंह इस आशा में रहे कि वह झाड़ी की आड़ से बाहर निकलेगी पर जब देर तक राह देखने पर भी उसकी सूरत दिखाई न पड़ी तो उन्होंने आप ही आप धीरे से कहा, "उस झाड़ी में से तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता है, कहीं यह वहीं तो चली नहीं गई ।" मगर इस खयाल पर भी उनका ध्यान न जमा क्योंकि विश्वास नहीं कर सकते थे कि उनके सिवाय और कोई अनजान आदमी उस रास्ते का हाल जानता है । आखिर उनका मन न माना और वे जांच करने के लिये उस कमरे के बाहर निकले ।

कमरे के बाहर के दालान से नीचे की मंजिल में उतर जाने के लिये संगमर्मर की छोटी छोटी खूबसूरत सीढ़ियां बनी हुई थीं, जिसकी राह उतर कर गोपालसिंह बात की बात में बाग नजर बाग में जा पहुंचे । घूमते हुये और चारो तरफ गौर के साथ देखते हुए वे उस चमेली की झाड़ी के पास पहुंचे, पर यहां भी उन्हें किसी की सूरत दिखाई न पड़ी और वे तरह तरह की बातें सोचते हुए इधर उधर देखने लगे । इस समय महल में बहुत थोड़े आदमी जागे थे और इस बाग में अभी और किसी की भी सूरत दिखाई नहीं पड़ती थी ।

गोपालसिंह ने उस झाड़ी के कई चक्कर लगाये और इधर उधर भी तलाश किया पर उस औरत का कहीं भी पता न लगा और अन्त में उन्हें विश्वास करना पड़ा कि वह

तिलिस्मी राह से बाग के तीसरे दर्जे में चली गई है। इस विचार ने गोपालसिंह के दिल में तरद्दुद और डर भी पैदा कर दिया क्योंकि आज कल उनके चारो तरफ जिस तरह की साजिशें और चालबाजियें हो रही थीं उनसे वे बहुत ही परेशान और घबड़ाये हुए हो रहे थे। कुछ देर तक वे वहीं खड़े कुछ सोचते रहे और तब उसी झाड़ी के अन्दर घुस गये जिसके अन्दर वह औरत गायब हो गई थी।

यह झाड़ी भीतर से कुशादा और इस लायक थी कि दो तीन आदमी उसके अन्दर बखूबी खड़े हो सकते थे। इसके बीचोबीच में जमीन के साथ एक पीतल का बड़ा सा मुट्ठा जड़ा दिखाई पड़ रहा था। गोपालसिंह ने उस मुट्ठे को किसी क्रम के साथ घुमाना शुरू किया और देखते देखते वहां एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा, छोटी छोटी घूमघुमौवा सीढ़ियां नीचे को गई हुई दिखाई दीं जिनके ऊपर गोपालसिंह ने कदम रक्खा और धीरे धीरे नीचे उतरने लगे। नीचे एक अंधेरी सुरंग दिखाई पड़ी जिसमें उन्होंने पैर रक्खा और इसके साथ ही ऊपर वाला रास्ता पुनः ज्यों का त्यों बन्द हो गया।

लगभग एक घड़ी तक गोपालसिंह को इस सुरंग में चलना पड़ा और तब वे एक छोटे से दालान में पहुँचे जहां ऊपर की तरफ बने हुये कई रोशनदानों की राह काफी रोशनी और हवा आ रही थी। इस दालान को पार करने पर दो छोटी २

की ठडियां मिलीं और तब ऊपर चढ़ने को सीढ़ियां दिखाई दीं। गोपालसिंह सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचे और अब उन्होंने अपने को तिलिस्मी बाग के तीसरे दर्जे में पाया।

यह एक बड़ा बाग था जिसके बीच से एक नहर भी जारी थी और बहुत से मेवे तथा फलों के पेड़ भी मौजूद थे। गोपालसिंह इस बाग में चारो तरफ नजर दौड़ा रहे थे कि सामने की तरफ थोड़ी ही दूर पर बने हुए संगमर्मर के चबूतरे की तरफ उनकी नजर पड़ी और साथ ही वे कुछ चौंक से गये, क्योंकि उस चौतरे के ऊपर उन्होंने उसी औरत को बेहोश पड़े हुए देखा जिसकी खोज में वे यहां तक आये थे। तेजी के साथ चल कर वे उस चबूतरे के पास पहुँचे और एक टक उस बेहोश औरत की तरफ देखने लगे।

हम नहीं कह सकते कि अपनी उम्र में अब तक गोपालसिंह ने किसी ऐसी औरत को देखा था या नहीं जो खूबसूरती में इस औरत का मुकाबला कर सके। इसका चेहरा, नख-सिख, कद और ढांचा ऐसा था कि बड़े बड़े योगियों और तपस्वियों को बस में कर ले, गोपालसिंह तो चीज ही क्या थे। वे सकते की सी हालत में एक टक खड़े उसके चेहरे की तरफ देखने लगे। कभी उसके सुडौल मुखड़े को देखते, कभी पतली गरदन को, कभी मुलायम मुलायम हाथों पर निगाह डालते और कभी नाजुक पैरों पर। देखते देखते उनकी यह हालत हो गई कि तनोबदन की सुध जाती रही। वे अप-

बेहोश औरत के पास बैठ गए और धीरे से उन्होंने उसके बदन पर हाथ रक्खा। हाथ रखते ही वे चौंक गये क्योंकि उसका बदन बर्फ की तरह ठंढा था। उन्हें ताज्जुब और डर पैदा हुआ और वे अच्छी तरह जांच करने की नीयत से उसके नाक पर हाथ रख कर देखने लगे कि सांस आ जा रही है या नहीं। एक दफे तो यह जान उनका जी धड़क उठा कि सांस बिल्कुल बन्द है पर फिर गौर के साथ देखने पर बहुत ही धीरे धीरे सांस चलने की आहट मिली और गोपालसिंह का डर कुछ दूर हुआ। यह सोच कर कि किसी तरह से यह औरत बेहोश हो गई है और शायद पानी से चेहरा तर कर हवा करने से यह होश में आ जाय वे वहां से उठे और उस नहर की तरफ चले जो थोड़ी ही दूर पर बह रही थी और जिसका साफ निर्मल जल मोती की तरह चमक रहा था। उन्होंने ठंढे पानी में अपना दुपट्टा तर किया और उसे लिये हुए पुनः उस चबूतरे की तरफ लौटे। पर हैं! यह क्या! वह चबूतरा खाली था और उस बेहोश औरत का वहां कहीं भी पता न था!!

भौंचक से हो कर वे चारो तरफ देखने लगे। अभी अभी वे उस औरत को यहां छोड़ गये हैं और देखते देखते वह गायब होगई! क्या कोई गैर आदमी आ कर उसे उठा ले गया अथवा वह आप ही होश में आकर कहीं चली गई? मगर ऐसी तो उसकी हालत न थी कि वह इतनी जल्दी होश में

आ जाती, खैर देखना चाहिये वह किधर गई। इत्यादि बातें सोचते हुये गोपालसिंह ने हाथ का दुपट्टा उसी जगह छोड़ दिया और बड़े गौर से चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे कि कहीं किसी तरह का निशान ऐसा मिलता है या नहीं जिससे उस औरत के यकायक इस प्रकार गायब होने का कारण मालूम हो सके।

उस बड़े बाग में देर तक राजा गोपालसिंह ढूंढ़ते रहे। हर एक झाड़ी तक छान मारी परन्तु उस औरत का कोई भी पता न लगा। आखिर जब वे एक प्रकार से बिलकुल निराश हो गये तो उसी नहर के किनारे आ कर खड़े हो गये और कुछ सोचने लगे।

यकायक नहर के साफ पानी में उन्हें कोई चीज बहती हुई दिखाई पड़ी, वह कपड़े का एक टुकड़ा था जिसके साथ एक कागज बंधा हुआ था। गोपालसिंह को खयाल हुआ कि यह टुकड़ा उस औरत की साड़ी में का है। उन्होंने उत्कंठा के साथ उसे बाहर निकाला और कोने में बंधी हुई चीठी खोली, किसी फूल या पौधे के रस से लिखी गई एक हलकी लिखावट इस पर नजर आई जिसका पढ़ना अत्यन्त कठिन था। बड़ी देर तक गौर से देखने बाद राजा गोपालसिंह को उसका मतलब समझ में आया। चीठी का मजमून केवल यह था, "मैं चक्रव्यूह में कैद हूं।"

चक्रव्यूह का नाम सुनते ही गोपालसिंह चौंक गये। अपने पिता और भैयाराजा से सुन चुके थे कि चक्रव्यूह उनके जमानिया वाले तिलस्म का ही एक हिस्सा है। मगर वह इतना भयानक है कि उनके आगे जमानिया बाग का चौथा दर्जा भी कुछ नहीं है। वह यह भी जानते थे कि चक्रव्यूह में फंसा हुआ आदमी उस समय तक कदापि नहीं छूट सकता जब तक कि उसका तिलस्म तोड़ा न जाय। अस्तु इस चीठी में चक्रव्यूह का नाम सुनकर उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। वे उसी चबूतरे पर बैठ गये और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

चक्रव्यूह तो बड़ा भयानक तिलस्म है। वहां यह औरत क्योंकर फंस गई? आपसे आप गई या किसी ने उसे कैद किया? अगर कैद किया तो किसने? फिर अभी अभी तो वह मेरे सामने बेहोश पड़ी हुई थी! मेरे दुपट्टा गीला करके लाने तक में चक्रव्यूह क्योंकर जा पहुँची? फिर वह होश में भी आई और पत्र भी लिख कर भेजने योग्य हुई। नहीं नहीं यह धोखा है। मालूम होता है कि वह औरत अथवा उसकी मदद से और कुछ लोग मुझे किसी आफत में डाला चाहते हैं। इस भेद का अवश्य पता लगाना चाहिये। इत्यादि बातें कुछ देर तक राजा गोपालसिंह सोचते रहे और अन्त में यह कह कर उठ खड़े हुए, "बिना इन्द्रदेव से सलाह लिये यह मामला तय न होगा।"

मामूली रास्ते से लौट कर वे अपने महल में आ पहुंचे और आते ही उन्होंने इन्द्रदेव को बुलाने के लिये अपने खास खिदमतगार को भेजा। इन्द्रदेव उन दिनों जमानिया ही में थे और उनका डेरा महल से बहुत दूर न था। अस्तु खिदमतगार बहुत जल्द ही उन्हें साथ ले कर वापस लौटा। गोपालसिंह का चेहरा देखते ही बुद्धिमान इन्द्रदेव समझ गये कि आज वे कुछ चिन्तित हैं अस्तु तखलिया होते ही उन्होंने पूछा, "क्यों क्या मामला है, आप उदास मालूम होते हैं?"

इसके जवाब में गोपालसिंह ने शुरू से आखीर तक सुबह वाला हाल कह सुनाया और अन्त में वह कपड़े का टुकड़ा और चीठी भी सामने रख दी। कपड़ा देखते ही और चीठी की लिखावट पर निगाह पड़ते ही इन्द्रदेव चौंके पर उन्होंने अपने आश्चर्य को गंभीरता के पर्दे में इस तरह छिपाया कि गोपालसिंह पर कुछ भी प्रगट होने न पाया।

कुछ देर तक इन्द्रदेव मन ही मन कुछ सोच विचार करते रहे और इस बीच में गोपालसिंह बेचैनी के साथ उनका मुंह देखते रहे। आखिर उनसे न रहा गया और उन्होंने इन्द्रदेव से पूछा, "आप किस गौर में पड़ गये?"

इन्द्र०। इस "चक्रव्यूह" शब्द ने मुझे फिक्र में डाल दिया है।

गोपाल०। यह शब्द जिस भयानक स्थान की ओर इशारा करता है उससे तो आप वाकिफ ही होंगे।

इन्द्र०। हां कुछ कुछ! क्या आप उसके विषय में कुछ जानते हैं?

गोपा०। सिर्फ इतना ही कि वह एक भयानक तिलिस्म है और उसमें फंसा हुआ मनुष्य किसी तरह छूट नहीं सकता। भैयाराजा की जुबानी मैंने कुछ हाल इसके विषय में सुना था पर पूरा हाल वे कह ही न सके और अन्तर्ध्यान हो गये।

गोपालसिंह की आंखें डबडबा आईं और उन्होंने बड़ी कोशिश करके अपने को सम्हाला, इन्द्रदेव बोले, "मैं भी चक्रव्यूह के विषय में विशेष कुछ नहीं जानता मगर फिर भी जो कुछ जानता हूं आपके सामने कह देना पसन्द करूंगा।

गोपाल०। हां हां जरूर कहिये क्योंकि मेरा मन इस औरत के कारण बेचैन हो रहा है और उसके बारे में जरूर कुछ करने की इच्छा करता हूं।

इन्द्रदेव ने यह सुन कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि यकायक उन्हें अपने सामने ऊंचाई पर कमरे की दीवार के पास लगे शीशे में यह दिखाई पड़ा कि जहां पर वे और राजा गोपालसिंह बैठे हुए थे उस के पीछे का दर्वाजा खुला और फिर बन्द हो गया। इन्द्रदेव की तेज निगाहों ने उस दर्वाजे के अन्दर किसी औरत का होना भी बता दिया और वे बात कहते कहते रुक गये, मगर फिर उन्होंने तुरन्तही कहा, "हां हां सुनिये मैं कहता हूं [धीरे से] "पीकोडी बासू" सुनते ही गोपालसिंह समझ गये कि इन्द्रदेव का मतलब यह है कि

उन के पीछे खड़ा हुआ कोई आदमी छिप कर उनकी बातें सुन रहा है। उनके महल तथा जमानिया राज्य में इस समय जैसा षड्यन्त्र चारों ओर मच रहा था उसके कारण और उन्हें बचाने की नीयत से इन्द्रदेव ने उनके साथ बहुत से गुप्त इशारे पर मुकर्रर कर रक्खे थे जिसके द्वारा थोड़े में वे अपना मतलब गुप्त रूप से उन्हें बता सकते थे। उनका इशारा सुनते ही गोपालसिंह चौकन्ने होगये और धीरे से उन्होंने पूछा, "काची" (तब क्या करना चाहिये ?) इन्द्रदेव ने जवाब दिया "अब मै दू !" (आप चुपचाप बैठिये मैं देखता हूं।)

इसके साथही वे कुछ ऊंचे स्वर में बोले, 'मैं अपना लबादा बाहर छोड़ आया हूं जिसकी जेब में कुछ कागजात हैं जिनसे इस स्थान का पूरा भेद प्रगट होता है। ठहरिये मैं पहिले उन कागजों को ले आऊं।"

इतना कह इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर चले गये मगर गोपालसिंह उसी जगह बैठे रहे। इन्द्रदेव का शक बहुत ही ठीक था। जिस जगह ये दोनों बैठे हुए थे उसके पीछे वाले दर्वाजे के साथ खड़ी एक लौंडी इन दोनों की बातें बड़े गौर के साथ सुन रही थी। जब इन्द्रदेव कुछ कागजात लाने का बहाना करके उठ खड़े हुए तो इस धूर्त लौंडी को भी कुछ संदेह हुआ और वह फुर्ती से उस जगह से हट बगल वाले कमरे में से होती भीतर महल की तरफ चल पड़ी मगर अभी

उसने दो ही दर्वाजे लांघे थे कि लपकते हुए इन्द्रदेव उसके पीछे जा पहुंचे और डपट कर बोले, "खड़ी रह !"

इन्द्रदेव की सूरत देखते ही उस लौंडी की एक दफे तो यह हालत होगई कि काटो तो लहू नहीं पर फिर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और अदब से इन्द्रदेव को सलाम कर खड़ी हो गई। इन्द्रदेव ने पूछा, "तू यहां क्या कर रही थी?"

लौंडी०। जी सरकार आप सुबह से अभी तक स्नानादि से निवृत्त नहीं हुए है, उसी विषय में आज्ञा लेने आई थी मगर बात में देख लौट चली हूं।

इन्द्रदेव ने यह बात सुन सिर से पैर तक गौर से एकबार उस लौंडी को अच्छी तरह देखा और कहा, "झूठ बिल्कुल झूठ तू दगाबाज है ! सच बता कि तू हम दोनों की बातें क्यों सुन रही थी ! जल्दी बता नहीं अभी मैं तुझे जहन्नुम में भेजवा दूंगा।"

उस लौंडी पर इन्द्रदेव का डर और रोब इतना आगया कि वह बिल्कुल घबड़ा गई और डर के मारे कांपने लगी। इन्द्रदेव को विश्वास तो हो ही गया था कि जरूर कुछ दालमें काला है अस्तु वे बोले, "अगर तू सच सच हाल बता देगी तो तेरी जान छोड़ दी जायगी।"

इनकी बातचीत की आहट पा इसी समय राजा गोपाल-सिंह भी उस जगह आ पहुंचे। अब तो उस लौंडी को अपनी ज़िन्दगी से पूरी नाउम्मीदी हो गई, फिर भी उसने हिम्मत न

हारी और गोपालसिंह को सामने देख अदब से उसने कहा, "मैं यह जानने आई थी कि सरकार के हुक्म में क्या देर है।"

आंखों के ही किसी इशारे से इन्द्रदेव ने अपना विचार गोपालसिंह पर प्रगट कर दिया जिसे समझ गोपालसिंह ने तालियों का एक गुच्छा उनकी तरफ बढ़ाया और कहा, "इस समय तो इस कम्बख्त को ठिकाने पहुँचाओ, फिर जाँच की जायगी।"

दूसरा बयान

फौलादी पंजा जब उस कमसिन औरत को लेकर कूएं के अन्दर चला गया तो भूतनाथ भी अपने को रोक न सका और उसी कूएं में कूद पड़ा।

ताज्जुब की बात थी कि उस समय वह कुंआ न तो गहरा ही मालूम हुआ और न उसमें पानी ही दिखाई दिया। सैकड़ों दफे भूतनाथ को इस कूंए के पास होकर गुजरने का मौका पड़ चुका था और वह अच्छी तरह जानता था कि यह बहुत ही गहरा है और इसमें पानी भी अथाह है परन्तु इस समय इसकी गहराई दो फुट से ज्यादा न होगी। नीचे कूदने पर भूतनाथ को चोट कुछ भी न आई किसी तरह के बहुत ही मुलायम गद्दे पर उसके पैर पड़े जो एक तरफ को ढालुआं था और इसके पहिले कि वह सम्हले या अपने को

रोक सके,भूतनाथ लुढ़कता हुआ एक तरफ को खसक गया। कूएं की एक तरफ एक दीवार में उसे एक छोटा दर्वाजा दिखाई पड़ा जिसके अन्दर वह ढाल के कारण खुद ब खुद चला गया और तब वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया।

यहाँ पर घोर अन्धकार था। भूतनाथ कुछ देर तक तो चुपचाप रहा पर शीघ्र ही उसने होश सम्हाला और बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की। उस समय उसे मालूम हुआ कि वह लंबे चौड़े कमरे के अन्दर है जिसके चारो तरफ बहुत से दर्वाजे, जो सब बन्द थे, दिखाई पड़ रहे हैं। भूतनाथ सोचने लगा कि वह औरत जिसने इनके मन पर इस कदर काबू कर लिया था कहां होगी मगर इसी समय उसका सन्देह आप से दूर होगया क्योंकि यकायक एक दर्वाजे के अन्दर से उसी औरत के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी। चीख सुनतेही भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और पूरब तरफ वाले दर्वाजे के पास पहुंचा। हाथ से धक्का देतेही वह दर्वाजा खुल गया और भूतनाथ ने उसी औरत को उसके अन्दर पाया मगर बड़ी ही विचित्र अवस्था में।

भूतनाथ ने देखा कि उस कोठड़ी की दीवार के साथ एक बहुत ही बड़ी लोहे की मूरत बैठी हुई बनी हुई है जो इतनी बड़ी है कि बैठी होने पर भी उसका सर कोठड़ी की छत के साथ छूआ हुआ है। इस मूरत ने एक हाथ से उस बेचारी औरत की कमर पकड़ी हुई है और वह छूटने के लिये छट-

पड़ा और चिल्ला रही है। भूतनाथ को देख उसने चिल्लाना और छटपटाना बन्द कर दिया और हाथ जोड़ कर कहा,—"किसी तरह मेरी जान इस बेरहम पंजे से बचाओ।"

भूतनाथ ने यह देख कोठड़ी के अन्दर घुसना चाहा पर उस औरत ने चिल्ला कर कहा, "खबरदार भीतर पैर न रखना नहीं तो मेरी तरह तुम भी कैद हो जाओगे।"

भूतनाथ डर कर रुक गया और कुछ सोचने लगा। जो कुछ हालत उसने देखी उससे इतना उसे विश्वास हो गया कि यह जरूर किसी तरह का तिलिस्म है जिसमें यह औरत फंस गई है, अस्तु इसमें खुद भी फंस कर लाचार हो जाना बुद्धिमानी भी नहीं। आखिर उसने औरत से पूछा, "तुम किस प्रकार इस तरह फंस गई हो और कैसे छूट सकती हो।"

औरत ने अपनी आंसुओं से तर आंखों को अपने आंचल से पोछा और कहा, "किस तरह से फंसी यह तो एक लंबी कहानी है जिसे सुनने से कोई फायदा न होगा, हां अगर आपको मेरी हालत पर कुछ रहम आता हो और आप मेरे छुड़ाने के लिये कुछ तकलीफ उठाना पसंद करें तो मैं अपने छूटने का उपाय बता सकती हूं।"

भूत०। हां हां, जल्दी बताओ, मैं दिलोजान से तुम्हें छुड़ाने का उद्योग करूंगा।

औरत०। अच्छा तो सुनिये। नौगढ़ के राजा वीरेन्द्रसिंह के पास एक तिलिस्मी किताब है जिसे लोग "रिक्तगन्थ" कहते

है। वह किताब उन्हें चुनार के तिलिस्म में मिली थी। अगर आप वह किताब ला सकें तो उसकी मदद से मुझे सहज ही में छुड़ा सकते हैं।

औरत की बात सुन भूतनाथ गौर में पड़ गया। रिक्तगन्थ का नाम वह बखूबी सुन चुका था और उसके बारे में वह बहुत कुछ जानता भी था, अस्तु इस औरत के मुंह से इस ग्रन्थ का नाम सुन उसे बहुत अचम्भा हुआ क्योंकि उसे मालूम था कि जिसे तिलिस्म और तिलिस्मी बातों से कुछ जानकारी है वही उस किताब का हाल जानता है। भूतनाथ इस गौर में पड़ गया कि यह औरत कौन है और इसे तिलिस्म से क्या सम्बन्ध है। आखिर उसने पूछा, "तुम्हें उस खूनी किताब का हाल कैसे मालूम हुआ ?"

औरत०। यह मैं आपको तभी बताऊंगी जब आप वह किताब लेकर मेरे सामने आवेंगे, यों कुछ कहना सुनना फजूल है।

भूत०। तुम जानती हो वह किताब कैसी भयानक है और यह भी तुम्हें मालूम होगा कि कैसे प्रतापी के हाथ में वह है, अस्तु उसका लाना कितना कठिन है यह भी तुम समझ सकती हो। क्या कोई और उपाय तुम्हारे छुड़ाने का नहीं हो सकता ?

औरत०। (टेढ़ी निगाह से भूतनाथ की तरफ देख कर) मुझे सन्देह होता है कि आप मुझे धोखा दे रहे हैं।

भूत०। तअज्जुब से, धोखा कैसा ?

औरत०। यही कि आप वास्तव में भूतनाथ नहीं हैं, केवल मुझे भुलावा देने के लिये आप अपने को इस नाम से पुकार रहे हैं।

भूत०। (हंसकर) यह सन्देह तुम्हें क्यों कर हुआ ?

औरत०। यह कभी सम्भव ही नहीं कि भूतनाथ ऐयार और किसी काम को असम्भव कहे !! जिसने अपने अद्भुत कामों से जमाने भर में हलचल मचा रक्खी है वह एक ऐसे साधारण काम से जी चुरावे यह आश्चर्य की बात है।

इतना कह कर उस औरत ने टेढ़ी निगाह से भूतनाथ पर एक ऐसी नजर डाली कि उसका मन एक दम हाथ से जाता रहा। उसने भी एक मतलब से भरी निगाह औरत पर डाली जिसे देख और जिसका तात्पर्य समझ उसने सिर झुका लिया पर साथ ही उसके होठों पर हंसी की मुस्कुराहट भी दिखाई देने लगी। भूतनाथ ने कुछ सोच कर कहा, "खैर मैं उस किताब को लाने की कोशिश करूंगा पर कम से कम यह तो बता रक्खो कि अगर मैं उस रिक्तगन्थ को लाने में सफल न हुआ तो उस हालत में तुम्हें छुड़ाने का कोई और भी उपाय या नहीं ?"

औरत यह बात सुन कुछ गौर में पड़ गई और कुछ देर बाद बोली, "एक तर्कीब और हो सकती है पर शायद आप उसे मन्जूर न करें।"

भूत० । वह क्या ?

औरत० । जमानियां के दारोगा साहब के पास एक छोटी किताब है जिसमें इस कैदखाने का पूरा हाल लिखा हुआ है। अगर आप उस किताब को उनसे मांग लें तब भी मैं छूट सकती हूं।

भूत० । यह तो पहले से भी कठिन है।

औरत० । (मुंह उदास बना कर) हां कठिन तो जरूर ही है! एक बेवस गरीब औरत को छुड़ाने के लिये भला कोई इतनी तकलीफ उठावेहीगा क्यों ?

भूत० । नहीं यह बात नहीं है, बात यह है कि मुझसे और दारोगा से गहरी दुश्मनी है, वह भला मेरे लिये कोई इतना काम क्यों करने लगा ?

औरत० । यह तो आप उसे समझाइये जो ऐयारों की खसलत से वाकिफ न हो। मैं खूब जानती हूं कि वक्त पड़ने पर ऐयार गधे को बाप बना लेते हैं और काम निकल जाने पर दूध की मक्खी की तरह दूर फेंक देते हैं।

औरत की बात सुन कर भूतनाथ हंस पड़ा और बोला, "तो तुम्हारा विचार है कि मैं तुम्हारे लिये दारोगा की खुशामद करूं जिसे आजकल जूतों से ठुकरा रहा हूं।"

औरत० । नहीं नहीं मैं ऐसा क्यों कहूं, मैं तो आप से यह भी नहीं कहती कि मुझे यहां से छुड़ाइये। आप जाइये अपना काम कीजिये क्यों एक बदकिस्मत के फेर में पड़ अपना समय

बर याद करते हैं और झूठी आशाएं उठा कर कटे पर नमक छिड़कते हैं। जाइये अपना काम देखिये। जिस तरह इतने दिन मैंने काटे हैं जिन्दगी के बाकी दिन भी उसी तरह गुजारूंगी और अन्त में सिसक सिसक कर किसी बेदर्द की याद करती हुई इस दुनिया को छोड़ दूंगी।

इतना कह उस औरत ने सिर लटका लिया और फूट फूट कर रोने लगी। उसके आंसुओं ने भूतनाथ के दिल पर बेतरह घाव किया और उसे दिलासा देने वाली बातें कहता हुआ वह तरह तरह से उसे ढाढ़स देने लगा। उसने उसे बहुत कुछ समझाया और अन्त में कहा, "तुम घबड़ाओ नहीं मैं जैसे होगा वैसे तुम्हें इस भयानक जगह से छुड़ाऊंगा।"

उस औरत ने धीरे धीरे अपने को सम्हाला और रोना बन्द किया। लगभग एक घड़ी तक भूतनाथ उससे और बातें करता रहा और बहुत सी बातें पूछ तथा तरह तरह के वादे कर और करा कर वह उस औरत के सामने से हटा। जिस दर्वाजे की राह वह उस कोठड़ी के अन्दर पहुंचा था उसी को पार कर वह पुनः उस कूएं की ढालुई सतह पर पहुंचा और वहां से सहज ही में कमन्द द्वारा बाहर हो गया। आश्चर्य की बात थी कि जैसे ही भूतनाथ कुएं के बाहर पहुंचा वैसे ही कुएं के अन्दर से एक शंख के बजने की आवाज हुई और उसके साथ ही एक भारी धमाके की आवाज भी आई।

भूत०। वह क्या ?

औरत०। जमानियां के दारोगा साहब के पास एक छोटी किताब है जिसमें इस कैदखाने का पूरा हाल लिखा हुआ है। अगर आप उस किताब को उनसे मांग लें तब भी मैं छूट सकती हूं।

भूत०। यह तो पहले से भी कठिन है।

औरत०। (मुंह उदास बना कर) हां कठिन तो जरूर ही है! एक बेवस गरीब औरत को छुड़ाने के लिये भला कोई इतनी तकलीफ उठावेगा क्यों ?

भूत०। नहीं यह बात नहीं है, बात यह है कि मुझसे और दारोगा से गहरी दुश्मनी है, वह भला मेरे लिये कोई इतना काम क्यों करने लगा ?

औरत०। यह तो आप उसे समझाइये जो ऐयारों की खसलत से वाकिफ न हो। मैं खूब जानती हूं कि वक्त पड़ने पर ऐयार गधे को बाप बना लेते हैं और काम निकल जाने पर दूध की मक्खी की तरह दूर फेंक देते हैं।

औरत की बात सुन कर भूतनाथ हंस पड़ा और बोला, "तो तुम्हारा विचार है कि मैं तुम्हारे लिये दारोगा को खुशामद करूं जिसे आजकल जूतों से ठुकरा रहा हूं।"

औरत०। नहीं नहीं मैं ऐसा क्यों कहूं, मैं तो आप से यह भी नहीं कहती कि मुझे यहां से छुड़ाइये। आप जाइये अपना काम कीजिये क्यों एक बदकिस्मत के फेर में पड़ अपना समय

बर्बाद करते हैं और झूठी आशाएं उठा कर कटे पर नमक छिड़कते हैं। जाइये अपना काम देखिये। जिस तरह इतने दिन मैंने काटे हैं जिन्दगी के बाकी दिन भी उसी तरह गुजारूंगी और अन्त में सिसक सिसक कर किसी बेदर्द को याद करती हुई इस दुनिया को छोड़ दूंगी।

इतना कह उस औरत ने सिर लटका लिया और फूट फूट कर रोने लगी। उसके आंसुओं ने भूतनाथ के दिल पर बेतरह घाव किया और उसे दिलासा देने वाली बातें कहता हुआ वह तरह तरह से उसे ढाढ़स देने लगा। उसने उसे बहुत कुछ समझाया और अन्त में कहा, "तुम घबड़ाओ नहीं मैं जैसे होगा वैसे तुम्हें इस भयानक जगह से छुड़ाऊंगा।"

उस औरत ने धीरे धीरे अपने को सम्हाला और रोना बन्द किया। लगभग एक घड़ी तक भूतनाथ उससे और बातें करता रहा और बहुत सी बातें पूछ तथा तरह तरह के वादे कर और करा कर वह उस औरत के सामने से हटा। जिस दर्वाजे की राह वह उस कोठड़ी के अन्दर पहुंचा था उसी को पार कर वह पुनः उस कूएं की ढालुईं सतह पर पहुंचा और वहां से सहज ही में कमन्द द्वारा बाहर हो गया। आश्चर्य की बात थी कि जैसेही भूतनाथ कुएं के बाहर पहुंचा वैसे ही कुएं के अन्दर से एक शंख के बजने की आवाज हुई और उसके साथ ही एक भारी धमाके की आवाज भी आई।

भूतनाथ ने झांक कर देखा तो मालूम हुआ कि जो चीज कुएं के बीचोबीच में गई थी और जिस पर वह कूदा था उसका अब कहीं नाम निशान भी नहीं है और उस गहरे कुएं की तह में पुनः अथाह पानी दिखाई पड़ रहा है। भूतनाथ ने यह देख धीरे से कहा, "बड़ा विचित्र कुआं है!" और तब अपना सब सामान जिसे कुएं की जगत ही पर छोड़ वह कुएं में कूदा था बटोर कर वह वहां से रवाना होने की फिक्र करने लगा पर उसी समय उसके कान में सीटी की आवाज आई जो बहुत दूर पर बजती हुई मालूम होती थी। इस आवाज को सुन भूतनाथ का दिल खटका और वह गौर से सुनने लगा। पुनः आवाज आई और इस बार पहिले से कुछ नजदीक पर मालूम हुई साथ ही यह भी मालूम हुआ कि सीटी द्वारा कुछ इशारा किया जा रहा है। भूतनाथ ने अब अपने बटुए में से एक जफील निकाली और खास तौर पर बजाई। तेज आवाज जंगल के कोने कोने में फैल गई और साथ ही कई तरफ से सीटी बजने की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। आधी घड़ी के बाद पैरों की आहट ने बता दिया कि कई आदमी उसी कुएं की तरफ आ रहे हैं।

बेचैनी के साथ भूतनाथ उन लोगों के आने की राह देख रहा था क्योंकि इशारे ने बता दिया था कि ये उसके ही शागिर्द हैं और किसी जरूरी काम के लिये उसे खोज रहे हैं। देखते ही देखते पांच आदमी जंगल में से निकल कर

उस कुएं के पास आ पहुँचे जहां भूतनाथ खड़ा था और उन में से एक ने आगे बढ़ कर बेचैनी के साथ कहा, "गुरु जी ! बड़ी बुरी खबर है।"

भूत० । क्यों क्यों क्या बात है ?

शागिर्द० । इन्द्रदेव जी दुश्मनों के फेर में पड़ गये।

भूत० । इन्द्रदेव और दुश्मनों के फन्दे में !! सो कैसे ?

शागिर्द० । (अपने एक साथी की तरफ देख कर) गोपीनाथ ! तुम्हारे ही सामने यह घटना हुई है अस्तु तुम्हीं बयान कर जाओ कि क्या क्या हुआ।

गोपी० । (आगे बढ़ कर) गुरु जी ! लगभग तीन घंटा हुआ आपकी आज्ञानुसार मैं उन खंडहरों का चक्कर लगा रहा था और घूमता फिरता गंगा किनारे वहीं पर जा पहुँचा जहां से गोपालसिंह गिरफ्तार हुये थे। यकायक मैंने इन्द्रदेव जी को उधर ही आते पाया। मेरा कलेजा दहल गया क्योंकि मैं जानता था कि वह बड़ी ही भयानक जगह है और मैं सोच ही रहा था कि उन्हें किसी तरह से होशियार कर दूं कि अचानक उस गुप्त कमेटी के कई आदमी वहां आ पहुँचे और मेरे देखते ही देखते उन लोगों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और डोंगी पर बैठा कर ले गये *। अब जरूर ही वे उस कमेटी में पहुंचाये जावेंगे और वह उन्हें बिना जान से मारे

* देखो चन्द्रकान्ता सन्तति पन्द्रहवां हिस्सा पहिला बयान।

कदापि न छोड़ेगी क्योंकि इन्द्रदेव जी बुरी तरह से उस कुमेटी के पीछे पड़ गये थे। यह हालत देखते ही मैं आपको खोजने के लिये दौड़ा कि सब हाल सुनाऊं, रास्ते में ये लोग भी मिल गये।

दूसरा शागिर्द०। और एक बात है। मुझे ठीक मालूम हुआ है कि आज कल सर्यू और इन्दिरा (इन्द्रदेव की स्त्री और लड़की) दारोगा साहब के जमानिया वाले मकान में कैद हैं।

भूत०। ऐसा !! तो इन्द्रदेव के साथ ही साथ उन दोनों को भी आज ही छुड़ाना चाहिये!

शागिर्द०। बेशक!

भूत०। (गोपीनाथ से) तुम्हें उन लोगों का साथ छोड़े कितनी देर हुई?

गोपी०। तीन घंटे के लगभग हुये होंगे।

भूत०। तो जो कुछ करना चाहिये फुर्ती से करना चाहिये। मैं तो सोचे हुए था कि इस कम्बख्त कमेटी को इस खूबसूरती के साथ तहस नहस करूं कि एक भी सभासद बचने न पावे पर अब मौका न रहा, अच्छा सुनो।

भूतनाथ ने अपने पांचो शागिर्दों से धीरे धीरे कुछ बातें कीं और तब उन्हें लिये हुए घने जंगल में घुस गया।

आधी घड़ी के बाद इस जंगल में से छः भयानक सूरतों वाले आदमी बाहर निकले। इन सभों की सूरतें

सिंदुर से रंगी हुई थीं तथा बदन पर फौलादी कवच चढ़ा हुआ था, हाथों में लम्बी तलवारें और पीठ पर तीर कमान के साथ ही साथ और भी कई हथियार से सजे हुए थे। पांचों बहादुर बड़े ही भयानक मालूम होते थे। पाठक तो समझ ही गये होंगे कि ये भूतनाथ और उसके शेरदिल शागिर्द हैं।

जंगल ही जंगल ये लोग पैदल जमानियां की तरफ रवाना हुए पर थोड़ी ही दूर गये होंगे कि इनका एक साथी कई घोड़ों की लगाम थामे खड़ा दिखाई पड़ा। हम नहीं कह सकते कि इतनी फुर्ती से ये घोड़े कहां से आगये पर भूतनाथ के लिये कोई बात कठिन नहीं है। वह फौरन कूद कर एक घोड़े की पीठ पर सवार होगया और उसके साथी भी घोड़ों पर दिखाई पड़ने लगे। भूतनाथ ने उस आदमी से जो घोड़े लाया था कहा, "तुम दारोगा के मकान का पहरा दो इन्द्रदेव को छुड़ा मैं सीधा इन्दिरा और सर्यू को लेने वहीं आऊंगा। खबरदार वे सब कहीं गायब न होने पावें।" और तब घोड़े को एड़ लगा तेजी के साथ जमानियां का रास्ता लिया। उसके बहादुर शागिर्दों ने भी उसके पीछे अपने अपने घोड़े छोड़ दिये।

किस तरह भूतनाथ ने उस गुप्त कुमेटी की मिट्टी पलीद की और इन्द्रदेव तथा सर्यू को छुड़ा तथा चार आदमियों की जान और इन्दिरा वाला कलमदान ले सही सलामत निकल गया यह सब हाल पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में पढ़ चुके हैं

अस्तु इसे यहां दुबारा लिखने की कोई आवश्यकता मालूम नहीं होती अब हम उसके आगे का हाल लिखते हैं।

तीसरा बयान
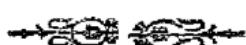
पौ फटने के कुछ पहिले ही भूतनाथ उस कमेटी के स्थान से दूर पहुँच गया। यद्यपि उसके और उसके साथियों के बदन पर हलके हलके कई जख्म आ चुके थे पर उसे इनकी परवा न थी और अब वह इन्दिरा को छुड़ाने की फिक्र में था जिसके दारोगा साहब के घर में होने की खबर * उसके शागिर्द ने उसके पास पहुंचाई थी।

एक हिफाजत की जगह में पहुंच भूतनाथ रुका और अपना सिरः और फौलादी कवच आदि उतार अपना हाथ मुंह धोकर उसने कपड़े बदले। इसके बाद वह कलमदान और अन्य कागजात जो उस सभा से लूट लाया था अपने शागिर्दों के सपुर्द कर और हिफाजत के साथ रखने की ताकीद कर वह पुनः घोड़े पर सवार हुआ और जमानियां की तरफ रवाना हुआ। जिस समय वह दारोगा के शैतान की आंत की तरह पेचीले और आलीशान मकान के पास पहुँचा उस समय सुबह हो चुकी थी और आदमियों की आवा जाही जारी हो गई थी।

* इन्दिरा और सर्यू के दारोगा को कैद में आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में इन्दिरा के किस्से में कहा जा चुका है।

जिस पर खयाल कर भूतनाथ ने बेचैनी के साथ कहा, "यह सूरज मेरे काम में बाधा डालना चाहता है।"

इसी समय भूतनाथ का वह साथी जिसे उसने इस मकान पर निगाह रखने के लिये अपने सफर के शुरू में ही इधर भेज दिया था और जो अब तक न जाने कहां छिपा हुआ था उस जगह आ पहुँचा। गुप्त इशारे से उसने अपने को भूतनाथ पर प्रगट कर दिया और पूछा, "गुरु जी! वह काम होगया?" जवाब में थोड़े में भूतनाथ ने सब हाल और सभा को लूटने का किस्सा बयान किया और तब कहा, "सयू को लेकर इन्द्रदेव तो निकल गये अब इन्दिरा का छुड़ाना बाकी रह गया है।" यह सुन उसके शागिर्द ने कहा, "उसका उपाय भी मैं सोच चुका हूं, इन्दिरा किस जगह कैद की गई है सो मुझे मालूम हो गया है और किस तरह वहां पहुँचेंगे सो भी प्रबन्ध हो चुका है। आप मेरे साथ इधर आइये।"

घड़ी भर के बाद हम एक पालकी को दारोगा साहब के मकान की तरफ आते देखते हैं। पालकी दर्वाजे पर पहुँच कर रुकी और उसके अन्दर से सफेद मुड़ासे और अचकन आदि पहिने एक आदमी उतरा जिसकी आकृति बता रही थी कि वह वैद्य है। उसके आते ही दर्वाजे पर के नौकरों में से एक ने आगे बढ़ कर उसकी अगवानी की और कहा, "आइये हरी जी! दारोगा साहब बड़ी बेचैनी के साथ आप की राह देख रहे हैं। वारे आप बहुत शीघ्र आ पहुंचे!!"

हरी जी (वैद्य) ने पूछा, "क्यों क्या सबब है जो इतनी सुबह ही बुलाहट हुई है ?" जिसके जवाब में उस आदमी ने कहा, "वे छत से नीचे गिर कर बहुत चुटीले हो गये हैं।" और फिर इस तरह घूम कर मकान के भीतर की तरफ चल पड़ा कि वैद्यराज को और कुछ पूछने का मौका ही न मि ा। वे उसके पीछे पीछे चल पड़े और उनकी दवाओं की पेटी उठाये एक कहार उनके पीछे हो लिया।

एक छोटी कोठरी में मसहरी के ऊपर पड़े हुए दारोगा साहब कराह रहे थे। उनके सिर और बदन में जगह जगह पट्टियां बंधी हुई थीं जो खून से तर हो रही थीं और वे बहुत ही कमजोर और बदहवास से हो रहे थे। जिस समय वैद्य जी को लिये उनका नौकर वहां पहुंचा उस समय केवल एक लौंडी उनके सिर्हाने खड़ी धीरे धीरे पंखा झल रही थी जो इन लोगों को आते देख कोठ ी के बाहर निकल गई। वैद्य जी के लिये एक चौकी बिछा दी गई और दारोगा ने रोनी आवाज में अपना हाल सुनाना शुरू किया। वह कहार जो वैद्य जी की दवा की पेटी उठा लाया था बक्स वहां रख कर बाहर निकल गया और नौकर ने दर्वाजा भीतर से बंद कर लिया। मरीज और वैद्य का साथ छोड़ हम इस कहार के साथ चलते हैं और देखते हैं कि वह कहां जाता या क्या करता है।

दारोगा साहब की कोठरी के बाहर आ उस कहार ने एक दालान पार किया और रुक कर खड़ा हो गया। यहां पर

सन्नाटा था और कहीं कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता था अस्तु अपने चारों तरफ निराला देख वह आदमी फुर्ती के साथ बगल की एक कोठरी जा घुसा और वहां से एक दालान पार कर तथा सीढ़ियां चढ़ मकान के एक दूसरे ही हिस्से में जा पहुँचा। यहां बिलकुल सन्नाटा था और ऐसा मालूम होता था मानो इधर कोई रहता ही नहीं पर वास्तव में यह बात नहीं थी, यह दारोगा के विचित्र मकान का वही हिस्सा था जिसमें हमारे पाठक पहिले भी कई बार आ चुके हैं और जो गुप्त रूप से कैदियों को रखने के काम में आता था।

यहां पहुँच उस कहार ने रुक कर अपने बटुए से कुछ सामान निकाला और एक रूमाल किसी अर्क से तर कर अपने चेहरे पर फेरा जिस के साथ ही बनावटी रंग छूट गया और भूतनाथ की सूरत दिखाई पड़ने लगी। भूतनाथ ने एक नकाब अपने चेहरे पर लगाई और कुछ औजार निकाल पास ही के एक दर्वाजे में लगे ताले खोला। दर्वाजा खोलने पर नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां नजर आई। भूतनाथ बेधड़क नीचे उतर गया। पुनः एक कोठरी मिली वहां से फिर सीढ़ियों का सिलसिला नीचे को गया हुआ था। भूतनाथ ने इसे भी तय किया और तब एक दालान में पहुँचा जिसमें एक चिराग की रोशनी हो रही थी। बगल में एक कोठरी थी जिसमें लोहे का छड़दार जंगला और दर्वाजा लगा हुआ था। अपने

औज़ारों की मदद से भूतनाथ ने इसके ताले को भी खोला अ [illegible] न पर बेचारी कमसिन लड़की इन्दिरा को पड़े सिसक सिसक कर रोते हुए पाया। यकायक एक नकाबपोश को सामने आते देख इन्दिरा डर गई पर भूतनाथ ने उसे दिलासा दिया और अपना परिचय देकर ढाढ़स बंधाया। ज्यादा बातचीत का समय न था अस्तु भूतनाथ ने इन्दिरा को गोद में उठा लिया और उस जगह से बाहर ले आया। सीढ़ियों का सिलसिला तय किया और ऊपरी मंजिल में आ पहुँचा यहां से उसने मकान के बाहर का रास्ता लिया, सदर दर्वाजे का नहीं बल्कि एक दूसरे ही चोर दर्वाजे का जिसका हाल उसे मालूम था। दारोगा ने अपने सुबीते के लिये आने जाने के कई गुप्त रास्ते बनवा रक्खे थे। जिसमें से एक की राह भूतनाथ इन्दिरा को लिये सहज ही में बाहर हो गया और मैदान का रास्ता लिया।

एकान्त स्थान में भूतनाथ का वह शागिर्द तथा एक और भी आदमी एक घोड़ा लिये मौजूद थे। भूतनाथ ने संक्षेप में इन्दिरा को पाने का हाल सुनाया और तब यह कह कर कि "उस कहार को होश में ला छोड़ देना जिसकी सूरत बन मैंने काम निकाला है।" घोड़े की पीठ पर जा बैठा। इन्दिरा को गोद में बैठा लिया और उन आदमियों से और भी कुछ बातें कर एक तरफ को घोड़ा छोड़ दिया।

कई कोस चले जाने के बाद भूतनाथ एक ऐसे स्थान पर

पहुँचा जहां एक छोटी सी नदी थी जिसके किनारे ही पर भूतनाथ का एक अड्डा भी था और कई शागिर्द बराबर मौजूद रहा करते थे। यहां उतर कर उसने इन्दिरा को कुछ जल पान कराया और आप भी आराम किया। इस जगह अपने आदमियों से भूतनाथ ने वे चीजें जो सभा से लूटी थीं पुनः अपने कब्जे में कर लीं और एक गठड़ीमें अपने साथ रख लीं। दो घंटे के बाद पुनः सफर शुरू हुआ।

कई घंटे के बाद पुनः एक दूसरे अड्डे पर पहुंच भूतनाथ ने दम लिया। यहां पर उसके कई शागिर्द मौजूद थे जिन्होंने बात की बात में सब तरह का प्रबन्ध कर दिया। स्नान ध्यान और भोजन इत्यादि से छुट्टी पा भूतनाथ ने इन्दिरा को तो आराम करने के लिये एक तरफ लिटा दिया और स्वयम् उन चीजों की जांच में लगा जिसे आज वह लूट लाया था।

जो कलमदान सब आफतों की जड़ था और जिसे दामोदरसिंह ने इन्दिरा की मां सयू को दिया था उसे तो सभापति के सामने से ही भूतनाथ ने उठा लिया था पर उसके इलावे और भी बहुत से कागज पत्र वह उठा लाया था जिन्हें उसने इस समय जांचना पढ़ना और नकल करना शुरू किया। हम नहीं कह सकते कि उन कागजों से भूतनाथ को क्या क्या बातें मालूम हुईं या किन किन गुप्त भेदों का उसे पता लगा पर समय समय पर उसकी भाव भंगी देखने से यह अवश्य मालूम होता था कि बहुत ही विचित्र और आश्चर्य जनक

बातें उन कागजों से प्रगट होती थीं जो भूतनाथ को गौर और ताज्जुब में डाल देती थीं।

कई घंटे तक भूतनाथ उन कागजों को देखता पढ़ता और नकल करता रहा। कलमदान के अन्दर से जितने कागजात निकले उनमें से हर एक की भूतनाथ ने नकल कर डाली और उसके अलावा भी जो कुछ कागजात थे उनमें से जिसे जरूरी समझा उसकी नकल की, कुछ जला कर खाक कर दिये और कुछ को केवल पढ़ कर ही छोड़ दिया। इस काम में कई घंटे लग गये और सूर्य डूब गये थे जब यह काम खतम हुआ। उस समय भूतनाथ ने उस कलमदान के कागजों को उसी में बंद किया और बाकी कागजों के साथ एक गठड़ी में बांध एक शागिर्द के हवाले कर कहा, "इसे खूब हिफाजत के साथ लामाघाटी में ले जाकर रक्खो, तीन चार दिन में मैं स्वयम् आऊंगा और जो कुछ करना आवश्यक होगा उसे करूंगा।" इसके बाद उन कागजों की जो नकल तैयार की थी उसे अपने कमर में बांधा और पुनः सफर की तैयारी की। घंटे भर रात जाते जाते पुनः उसी तरह इन्दिरा को ले कर सफर शुरू हुआ। इस बार भूतनाथ रात भर चला गया यहां तक कि सुबह होते होते वह बलभद्रसिंह के मिर्जापुर वाले मकान पर जा पहुंचा जहां वे आज कल रहते थे।

बलभद्रसिंह के पास भूतनाथ ने अपने आने की इत्तिला कराई। इस तरह बेमौके भूतनाथ का आना सुन उन्हें हद्द से

ज्यादा ताज्जुब हुआ और वे तुरत भूतनाथ के पास पहुँचे। दंडवत् करके भूतनाथ ने बहुत ही संक्षेप में इन्दिरा को दारोगा के कब्जे से छुड़ाने का हाल कहा मगर सभा लूटने या कलमदान छीनने वगैरह का हाल कुछ भी न बताया। इसके बाद बातचीत होने लगी।

भूतनाथ०। कदाचित् आप ताज्जुब करेंगे कि इस लड़की (इन्दिरा) को सीधा इन्द्रदेव के पास न ले जा कर मैं आपके पास क्यों लाया हूं। इसका दो सबब है, एक तो कई नाजुक बातों की आपको खबर देने के लिये मुझे आपके पास आना जरूरी था और दूसरे यह भी मुझे मालूम हुआ है कि इन्द्रदेव का मकान अब दुश्मनों की पहुंच के बाहर नहीं रह गया है। इन्दिरा से जब आप उसका हाल सुनेंगे तो यह जान आपको ताज्जुब होगा कि खास इसके मकान से इसे और इसकी मां को दुश्मनों ने फंसा लिया था। अस्तु यदि यह वहाँ जायगी तो पुनः फंसेगी परन्तु यदि आपके पास रहेगी तो दुश्मनों को कभी शक भी न होगा कि वह कहाँ है और वे इधर आने का ध्यान भी मन में न लावेंगे।

बल०। बेशक वे मेरे यहां न ढूंढेंगे परन्तु फिर भी इन्द्रदेव जी को यह खबर हो जानी चाहिये कि इन्दिरा मेरे मकान पर है।

भूत०। यहां से लौट कर मैं सीधा उन्हीं के पास जाऊंगा और सब हाल सुनाऊंगा, आप इसकी चिन्ता न करें।

बल० । बहुत ठीक, हां अब यह बताइये कि वे बातें कौन सी हैं जिनके लिये आपको मेरे पास आने की जरूरत पड़ी।

भूत० । जी हां सुनिये और बहुत गौर से सुनिये। आप की बड़ी लड़की लक्ष्मीदेवी की शादी राजा गोपालसिंह से ठीक हुई है।

बल० । हां।

भूत० । और इस काम में कुछ आदमी आपके बखिलाफ कोशिश कर रहे हैं।

बल० । हां।

भूत० । अब यह भी सुन लीजिये कि उन्होंने निश्चय कर लिया है कि चाहे जो कुछ हो जाय यह शादी न होने देंगे। इसकेलिये उन्हें चाहे आपको,आपकी लड़कीको या राजा गोपालसिंह तक को भी कितना ही कष्ट पहुँचाना पड़े पर वे लोग अपनी बात से न टलेंगे। मैंने तो यहां तक सुना है कि वे लोग आपकी जान तक लेने पर तुल गये हैं।

बल० । (घबड़ा कर) क्या सचमुच !

भूत० । जी हां, अस्तु मेरी प्रार्थना है कि आप बहुत ही होशियारी के साथ रहें।

बल० । मगर ऐसा करने वाले हैं कौन कौन लोग ? अभी तक तो मैं समझता था कि केवल दारोगा साहब ही मेरे बखिलाफ कारवाई कर रहे हैं मगर अब आप के कहने से मालूम होता है कि वे लोग कई आदमी हैं।

भूत० । मैं इस बात के जानने की कोशिश कर रहा हूं पर अभी तक ठीक ठीक कुछ नहीं कह सकता । आप को होशियार किये देता हूं कि खूब ही चौकन्ने रहें और किसी अनजान आदमी का कभी ज़रा भी विश्वास न करें । मैं खुद इस मौके पर आपकी मदद करता पर क्या बताऊं ऐसी झंझटों में फंसा हुआ हूं कि दम मारने की फुरसत नहीं मिलती । अच्छा यह बताइये कि क्या राजा गोपालसिंह ने अपना कोई ऐयार आपकी निगहबानी के लिये भेजा है ?

बल० । हां आज कल उनके हरनामसिंह और बिहारीसिंह नामक दो ऐयार मेरे घर की चौकसी करते हैं ।

भूत० । बिहारी और हरनाम ! आप उन पर ज़रा भी भरोसा न करियेगा । वे ऐयारों का नाम बदनाम कराने वाले और मालिक के साथ दगा करने वाले दोनों हरामजादे दुश्मनों से मिले हुए हैं इसकी मुझे पक्की खबर लग चुकी है ।

बलभद्रसिंह यह बात सुन भूतनाथ का मुंह देखने लगे । भूतनाथ उनके आश्चर्य को देख बोला, "आप चाहें तो मैं इस का सबूत भी दे सकता हूं ।"

इतना कह भूतनाथ ने बलभद्रसिंह के कान के पास मुंह ले जाकर न जाने क्या कहा कि वे एक दम चौंक कर उछल पड़े और उनके चेहरे पर हवाई उड़ने लगी ।

भूतनाथ कुछ देर तक बलभद्रसिंह से और बात करता

रहा और इसके बाद इन्दिरा के बारे में बहुत कुछ ताकीद कर सुबह होने के पहिले ही वहां से रवाना हो गया।

चौथा बयान

रात लगभग पहर भर के जा चुकी होगी। दामोदरसिंह के आलीशान मकान के एक छोटे कमरे में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति फर्श पर बैठे हुए धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं।

इन्दु०। देखिये, किस्मत ने भी कैसा पलटा खाया है। चारो तरफ मुसीबत ही नजर आती है। दयाराम जमना और सरस्वती लोहगढ़ी में जा फंसे हैं, दामोदरसिंह जी दारोगा की बदौलत चक्र व्यूह का कष्ट उठा रहे हैं जहां से उनका निकलना असंभव ही सा है, बेचारी मालती भी न जाने किस जगह जा फंसी है कि कई रोज से पता नहीं लग रहा है, उधर सयूं चाची और इन्दिरा मिल कर भी पुनः गायब हो गई हैं, इन्द्रदेव जी पर अलग मुसीबत आ पड़ी है, राजा गोपालसिंह को अपनी ही जान के लाले पड़ गये हैं। कुछ समझ में नहीं आता क्या होने वाला है।

प्रभा०। कुछ पूछो नहीं, न जाने परमात्मा क्या करने वाला है।

इन्दु०। हम लोग भी कैसे बदकिस्मत हैं। मैं तो जब से बाहर हुई बराबर दुःख ही उठा रही हूँ, मेरी बदौलत आप भी...

प्रभा० । यह सब तुम्हारा झूठा खयाल है, कोई किसी की बदौलत दुःख या सुख नहीं उठाता, जो कुछ जिसे भोगना रहता है उसका बांधनू आपसे आपही बंध जाता है किसी के सोचने करने या समझने से कुछ नहीं होता। आदमी को ऐसे दुःखों से घबराना न चाहिये, दुःख तो मानों एक तरह की परीक्षा है जिनसे आदमी की जांच की जाती है। अगर आदमी हमेशा सुखी और प्रसन्न रहे तो मामूली से मामुली कष्ट भी उसके लिये असह्य हो जाय और फिर वह कुछ करने योग्य न रह जाय।

इन्दु० । सो तो ठीक है, पर आखिर दुःखों कुछ अन्त भी तो हो, ऐसी परीक्षा किस काम की जो परीक्षार्थी को जान ही ले कर छोड़े।

प्रभा० । नहीं यह बात भी नहीं, हद हर एक चीज की है। परमात्मा मनुष्य को भी उसकी हद के बाहर नहीं होने देता, अगर वह ऐसा करे तो उसका दीनबंधु यह नाम ही व्यर्थ हो जाय।

इन्दु० । मेरी समझ में तो यह नाम व्यर्थ ही लोगों ने रख दिया है। परमात्मा न तो किसी का शत्रु है न मित्र, व तो एक कठोर शासक और निर्मम न्यायी है जो हर एक को उसके कर्मों का फल देने के सिवाय और कुछ करता नहीं या कर सकता नहीं। जब हम साफ देखते हैं कि इस संसार में भले आदमी लगातार दुःख पर दुःख उठा रहे हैं और दुष्ट पापी

आनन्द ले रहे हैं तो सिवाय इसके और क्या कह सकते हैं कि दोनों अपनी अपनी करनी अथवा भाग्य का फल भोग रहे हैं। भले की भलाई उसका कुछ उपकार नहीं करती और बुरे की बुराई कुछ उसका बिगाड़ती नहीं, ऐसी अवस्था में सिवाय इसके और क्या कहा जाय कि परमात्मा केवल करनी का फल देना जानता है और कुछ नहीं।

प्रभा०। आज तुम्हारी बातें कुछ अजब बे सिर पैर की हो रही हैं। अगर यही मान लिया जाय कि मनुष्य केवल अपनी करनी का फल भोगता है तो अवश्यही इस जन्म के दुःख और सुख पिछले किसी जन्म के पुण्य पाप के कारण होंगे।

इन्दु०। अवश्य।

प्रभा०। वैसी हालत में इस जन्म की बुराई और भलाई अगले किसी जन्म के सुख और दुःख का कारण बनेगी?

इन्दु०। हां बनेहीगी।

प्रभा०। तो वैसी अवस्था में यह जीवन मरन का सिलसिला तो कभी मिटेगा नहीं और न सुख दुःख का रगड़ा ही दूर होगा। फिर वैसा मान लेने से परमात्मा की आवश्यकता भी कुछ रह नहीं जाती। जब सुख दुःख हमारी ही करनी का फल है तो उसके कर्ता धर्ता भी हम ही हैं, परमात्मा को फिर क्यों दोष दिया जाता है?

इन्दु०। तो फिर आखिर किसे दिया जाय!

प्रभा०। यह ठीक रही, किसी के सिर दोष मढ़ने से मत-

सब। भेड़ ने पानी नहीं गन्दा किया होगा तो उसके बाप ने किया होगा !! पर वास्तव में यह बात नहीं। अगर तुम कर्म को सर्वस्व मानती हो तो परमात्मा को निराकार और निर्लेप मानना पड़ेगा और अगर परमात्मा को ही सब कुछ करने वाला मानती हो तो अपने कर्म को भी उसेही सौंपना पड़ेगा। सुख दुःख हानि लाभ जीवन मरण सब उस एक ईश्वर के हाथ में सौंप देने पर ही तुम यह कह सकती हो कि जो कुछ करता है परमेश्वर करता है, अन्यथा नहीं।

इन्दु०। अगर आप ही की बात मैं मान लूं तो क्या बुरा आदमी जो कुछ पाप करता है उसे परमात्मा ही उससे कराता है?

प्रभा०। यह उस मनुष्य के ज्ञान पर निर्भर है। अगर वह अपने को कर्ता समझ कर 'मैं' को महत्व देता हुआ पाप कृत्य कर रहा है तो उसके लिये वह दोषी है, और यदि अपने को केवल परब्रह्म के हाथ की कठपुतली समझता हुआ जैसा कुछ भला या बुरा उससे होता है करता जाता है और उसके लिये न अफसोस ही करता है न दुःखी ही होता है तो अवश्य ही उसके फल का भागी भी वह नहीं।

इन्दु०। वाह यह तो आप खूब कहते हैं। अगर पाप का भागी हम नहीं तो दूसरा कोई होगा। वह दूसरा क्या परमात्मा है? परमात्मा क्यों जान बूझ कर किसी से पाप करावेगा?

प्रभा०। क्यों नहीं, क्या तुम समझती हो कि उसका

खजाना ऐसा असम्पूर्ण है कि उसमें केवल मीठा ही मीठा है नमक नहीं, मधु ही मधु है,जहर नहीं,सोना ही सोना भरा है, लोहा नहीं, सुख ही सुख है दुःख नहीं, पुण्य ही पुण्य है, पाप नहीं ? क्या वैद्य को अपने पास हड्डी जोड़ने हीका औजार रखना पड़ता है, काटने का औजार नहीं ?

इन्दु० । तो भला परमात्मा पाप अत्याचार और दुःख से अपना खजाना भर के उससे काम क्या लेता है ?

प्रभा० । लोहे की तलवार का वार बचाती समय लोहे की ही ढाल सामने करनी पड़ती है । इसी तरह जगत से पाप दूर करने के लिये पाप ही सहायता भी देता है, दुःख दूर करने के लिये दुःख ही का आश्रय लेना पड़ता है । यद्यपि शक्ति है फिर भी परमात्मा इस धरती पर स्वयम् तो आता नहीं, उसे यहां ही के जीवों से सारा यहां का काम कराना पड़ता है इसी से यहां ही के अस्त्रों का सहारा भी लेना पड़ता है ।

इन्दु० । तो आप का मतलब यह है कि इस समय दारोगा जयपाल, शिवदत्त आदि दुष्ट जो हम लोगों को कष्ट दे रहे हैं परमात्मा का कोई कार्य सिद्ध कर रहे हैं ?

प्रभा० । बेशक ।

इन्दु० । सो कैसे ?

प्रभा० । दो तरह से ।

इन्दु० । सो कौन कौन ?

प्रभा० । एक तो इन दुष्टों की बदौलत जमानिया, चुनार और आस पास की जगहोंके सब शैतान इकट्ठे हो गये । कोई छिपा न रह गया, दूसरे आपस ही में एक दूसरे से लड़ झगड़ कर ये अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं और करेंगे । तुम देखती रहना बहुत जल्द ही वह समय आने वाला है कि ये सब शैतान कुत्तों की मौत मारे जायंगे और इनकी हालत पर मक्खियों को भी तरस आवेगा ।

इतने ही में कमरे के बाहर से आवाज आई "बेशक" और इन्द्रदेव ने अन्दर पैर रक्खा । इन्द्रदेव को देख इन्दु हट कर एक बगल हो गई और प्रभाकरसिंह ने कुछ सकुचा कर गरदन नीची कर ली । इन्द्रदेव ने यह देख कर कहा, "प्रभाकर ! मैं कुछ देर से बाहर खड़ा तुम्हारी बातें सुन रहा था । तुम्हारे विचार बहुत गम्भीर हैं और तुम्हारी विचार शक्ति बहुत उत्तम है पर तुम एक भूल करते हो ।"

प्रभाकरसिंह ने सवाल की निगाह इन्द्रदेव पर डाली इन्द्रदेव बोले, "मनुष्य को हाथ कमाने और मुंह खाने के लिये दिया गया है पर कोई आदमी यहसोचकर जंगलमें जाबैठे कि सब कुछ करने वाला तो परमेश्वर है, उसे अगर इच्छा होगी तो आप से आप मेरे मुंह में खाना पहुंचा देगा, तो क्या उस का कहना ठीक होगा ? क्या उसने हाथ और शरीर से मेहनत न कर सब परमात्मा ही के ऊपर डाल उसी परमात्मा की दी हुई एक शक्ति का अपमान नहीं किया ? परमात्मा को

सब शक्ति है और संभव है कि उसे जंगल में बैठे भोजन मिल जाय फिर भी उसे स्वयम् कमाना और खाना चाहिये था।

प्रभा०। बेशक।

इन्द्र०। इससे सिद्ध होता है कि उस ईश्वर ने हमें जो शक्ति दी है उसका पूरा उपयोग करना और उससे काम लेना भी हमारा एक आवश्यक कर्तव्य है।

प्रभा०। जरूर।

इन्द्रदेव०। परमात्मा की दी हुई ही एक शक्ति है बुद्धि, उससे पूरा काम लेना भी हमारा एक मुख्य कर्तव्य है। यदि हम सब कुछ ईश्वर ही पर छोड़ बैठें और बुद्धि का सहारा न लें तो यह केवल परमात्मा पर भार डालना ही नहीं वरन् उसका अपमान करना होगा।

प्रभा०। इसके क्या माने ?

इन्द्र०। यही कि परमात्मा ने हमें बुद्धि इसी लिये दी है कि हम उससे पूरी तरह काम लें और अपना तथा दूसरों का हित करें। अगर आवश्यकता पड़े तो अपने शत्रुओं का सामना करने और उन्हें दूर करने में भी उसी बुद्धि से हमें काम लेना चाहिये न कि यह सोच कर चुप बैठ रहना कि परमात्मा आप ही दुष्टों को दण्ड देगा। परमात्मा तो करेगा ही पर हमारा भी तो कुछ कर्तव्य है, हमारा भी तो कुछ अधिकार है, हमारा भी तो कुछ अंश है। अस्तु सब कुछ परमात्मा के भरोसे छोड़ रखना एक प्रकार की कायरता है, जिसे मैं पसन्द

नहीं करता। सच पूछो तो ऐसा करने से दुनिया का काम ही नहीं चल सकता।

प्रभा०। जी हां आप का कहना ठीक है।

इन्द्र०। तुम्हीं सोचो कि अगर परमात्मा यह न चाहता कि हम बुद्धि से काम लें तो वह हमें बुद्धि देता ही क्यों? हमें आंखें देखने को मिली हैं कान सुनने को मिले हैं, तब क्या एक बुद्धि ही व्यर्थ दी गई है? हमें तो यह जन्म ही कुछ कर जाने के लिये मिला है चुप चाप परमात्मा पर भरोसा किये बैठे रहने को नहीं। मेरा यह मतलब नहीं कि उस पर भरोसा करना अच्छा नहीं बल्कि यह मतलब है कि स्वयम् भी कुछ करने का साहस रखना ही उचित है। मुझे तो बड़ा ही आनन्द आता है यदि मैं अपने किसी शत्रु को अपनी चाल से मात कर सकता हूं। यद्यपि मैं जानता हूं कि वास्तव में सब का कर्ता धर्ता ईश्वर ही है पर उसने मुझे अपना जरिया बनाया यह बात मुझे बड़ा ही सन्तोष देती है। (इन्दु की तरफ देख कर) तुमने कुछ कहना चाहा था पर चुप हो रहीं।

इन्दु०। धृष्टता क्षमा हो तो कुछ कहूं।

इन्द्र०। हां हां खुशी से कहो। मैं खूब जानता हूं कि तुम्हारी बात व्यर्थ कभी न होगी।

इन्दु०। अपने इन्हीं विचारों के कारण ही आपने अपने दुश्मन बहुत से बना रक्खे हैं।

इन्द्र०। (हंस कर) सो कैसे?

इन्दु० । क्या ये दारोगा, जैपाल, हेलासिंह, वगैरह आपके सामने एक पल भी ठहर सकते हैं ? आप बराबर ही तरह देते जाते हैं ।

इन्द्र० । मैं यही देखना चाहता हूं कि ये सब कहां तक करने की कुदरत रखते हैं, मैं अपनी और उनकी हिकमतों का मुकाबला किया चाहता हूं ।

प्रभा० । मगर मैं समझता हूं कि आप सांपों से खेल रहे हैं । अगर आप उन्हें पकड़ लेंगे तो उनका कुछ न बिगड़ेगा और अगर वे काट लेंगे तो काम तमाम कर देंगे ।

इन्द्र० । (हंस कर) मुमकिन है, पर तुम देखोगे कि इस बार मैं इन सांपों के दांत ही तोड़ कर दम लूंगा । हां अगर तुम्हें......

प्रभा० । हम लोग पूरी तरह से आपके साथ तैयार हैं, आप जो भी हुक्म दीजिये उससे पीछे हटने वाले पर मैं लानत भेजता हूं । सच पूछिये तो मेरा भी दिल कुछ आपही के ऐसा है । अगर कोई दूसरा मेरे दुश्मन को जान से भी मार डाले तो मुझे प्रसन्नता न होगी पर अपने हाथ से यदि मैं उसे जरा सा भी घायल कर सकूंगा तो मुझे अत्यन्त संतोष होगा ।

इन्द्र० । [खुश हो कर] बस ऐसीही हिम्मत रखनी चाहिये ऐसा ही दिल रखना चाहिये । खैर यह सब अब जाने दो, यह बेकारी के समय करने की बातें हैं ।

प्रभा० । आज दिन भर आप बाहर ही रहे, क्या कुछ काम की बातें मालूम हुईं ?

इन्द्र० । सिर्फ तीन ।

प्रभा० । क्या क्या !

इन्द्र० । पहिली यह कि मेरी स्त्री दारोगा के कब्जे में है, दूसरी यह कि इन्दिरा भी वहीं कैद थी परन्तु भूतनाथ ने उसे छुड़ा कर बलभद्रसिंह के पास पहुंचा दिया है, और तीसरी यह कि शहरके ये इतने आदमी उस कुमेटी में शामिल हैं जिसने जमानिया में तहलका मचा रक्खा है ।

इतना कह इन्द्रदेव ने एक लम्बा कागज प्रभाकरसिंह के सामने फेंक दिया जिसमें बहुत से नाम लिखे हुए थे । प्रभाकरसिंह एक बार गौर के साथ शुरू से आखीर तक उस कागज को पढ़ गये और तब ताज्जुब के साथ इन्द्रदेव का मुंह देखने लगे ।

प्रभा० । मुझे स्वप्न में भी इसका गुमान नहीं हो सकता था कि इतने नजदीकी और आपस के आदमी उस कुमेटी में शामिल हैं ।

इन्द्र० । इसी से तो सब भंडा फूटता था । जो हमारे विश्वासी थे और जिनसे हम सलाह करते थे वही उस कमेटी में जाकर हमारा भेद खोलते थे । अब पहिले इन आदमियों को रास्ते से दूर करूंगा तब बाकी आदमियों का पता लगेगा।

प्रभा० । क्या इनके इलावे और भी आदमी कुमेटी में हैं ?

इन्द्र० । हां, ये तो मामूली लोग हैं, मुख्य मुख्य कार्य-कर्ताओं का तो अभी मुझे कुछ पता ही नहीं लगा है। उनके लिये तो बहुत कोशिश दरकार होगी ।

प्रभा० । बेशक, मगर इन आदमियों ही के जरिये उन का भी नाम मालूम हो जाना कुछ कठिन नहीं है। अच्छा चाची जी (सरयू) और इन्दिरा का पता कैसे लगा ?

इन्द्र० । उनका हाल मेरे एक शागिर्द ने मुझे अभी अभी बताया है। उसने स्वयम् भूतनाथ को इन्दिरा को लिये दारोगा के मकानसे निकलते देखा इसी से उसे शक हुआ और ऐयारी करके उसने पता लगाया कि इन्दिरा की मां भी दारोगा ही के कब्जे में है, मगर कहां या किस हालत में है यह अभी मालूम नहीं हो सका है।

प्रभा० । खैर उसका पता लगाना कोई कठिन बात नहीं है। यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस खोज में जाऊं और चाची जी को छुड़ाऊं ।

इन्द्र० । अगर मुझे यह डर न होता कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हें अपने जाल में फंसा लेंगे तो मैं खुशी से तुम्हें जाने की इजाजत देता मगर......

प्रभा० । अभी आपही ने उपदेश किया है कि दुश्मनों के मुकाबिले से कभी न डरना चाहिये और इसके लिये बुद्धि से काम लेना चाहिये, फिर यह सब सोचना व्यर्थ है। फेर

जाने के डर से क्या घर में चूड़ी पहिन कर बैठ रहना उचित होगा ?

इन्द्र० । तुम्हारी हिम्मत देख मुझे बहुत आनन्द होता है । अच्छा कोई हर्ज नहीं तुम अगर यहा चाहते हो तो जाओ अपनी हिम्मत से काम लो और हौसला निकालो । तुम्हारे काम में मदद देने के लिये मैं दो एक अनमोल चीजें तुम्हें दूंगा जिससे तुम्हें बहुत सहायता मिलेगी । तुम कब जाया चाहते हो ?

प्रभा० । अभी, इसी समय, यह रात का समय मेरी बहुत कुछ सहायता करेगा ।

इन्द्र० । अच्छी बात है, तो उठो, मैं वे चीजें तुम्हारे हवाले कर दूं और कई जरूरी बातें भी समझा दूं ।

लगभग आधे घण्टे के बाद हम प्रभाकरसिंह को सूरत बदले हुए मकान के बाहर निकलते देखते हैं । इस समय उनका भेष कुछ अजीब सा हो रहा है । उनकी इस समय की सुफेद छाती तक लहराती हुई दाढ़ी, सुफेद ही सिर और मोछ के बाल, और चेहरे पर पड़ी हुई सैकड़ों सिकुड़नें जो देखेगा वही उन्हें अस्सी बरस से कम का मानने को तैयार न होगा क्योंकि कमर भी उनकी इस समय बुढ़ापे के बोझ से झुकी सी मालूम हो रही है और वह हाथ जिस में काले रंग की एक विचित्र और टेढ़ी मेढ़ी मगर मजबूत लाठी है कमजोरी के कारण कांप रहा है । बदन में गेरुए रंग का पूरी

तक पहुँचता हुआ ढीला ढाला कुरता है जिससे समूचा बदन इस तरह ढंका हुआ है कि बिल्कुल पता नहीं लगता कि भीतर किस तरह की पौशाक या सामान से उन्होंने अपने को लैस किया हुआ है। बाएं हाथ में एक कमंडलु है जिस पर मोटे २ रुद्राक्ष के दानों की एक माला लपेटी हुई है और गले में भी वैसी ही एक लांबी माला लटक रही है। माथे २ सुफेद त्रिपुण्ड लगा हुआ है। गरज कि सब तरह से पूरे सिद्ध वृद्ध तपस्वी बने हुए हैं।

मकान से निकल प्रभाकरसिंह ने सीधे दारोगा साहब के घर का रास्ता लिया और धीरे धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए कुछ ही समय में वहां जा पहुँचे। मामूल के मुताबिक फाटक पर कई सिपाही पहरा दे रहे थे जिनमें से एक की तरफ देख प्रभाकरसिंह ने कुछ हुकूमत भरे स्वर में कहा, "जाओ अपने मालिक से कहो कि मस्तनाथ बाबा आ आये हैं और फाटक पर खड़े हैं।"

सिपाही ने एक निगाह सिर से पैर तक नकली बाबा जी पर डाली और कोई मामूली साधू समझकर कहा।"हमारे मालिक का शरीर अच्छा नहीं है, अब इतनी रात गये उनसे मुलाकात नहीं हो सकती।"

बाबाजी०। तुम जाकर खबर करो, वह मेरा नाम सुनते ही मेरा दर्शन करने को व्याकुल हो जायगा।

सिपा० । वैद्य जी का हुक्म है कि संध्या होने के बाद कोई बाहरी आदमी उनके पास जाने न पावे।

बाबाजी० । (बिगड़ कर) अबे तू जाकर कहता है कि नहीं !!

सिपा० । अबे तबे क्या कहते हो जी, एक दफे कह दिया इस वक्त मुलाकात नहीं हो सकती कल दिन में आना।

यह बात सुनते ही प्रभाकरसिंह ने एक कड़ी निगाह उस सिपाही पर डाली और डपट कर कहा, "तू नहीं जायगा !" घमण्ड में भरे सिपाही ने भी तनक कर जवाब दिया "नहीं !"

इतना सुनना था कि प्रभाकरसिंह ने हाथ वाली छड़ी उस सिपाही के बदन से छुला दी और मुंह से मानों कोई मंत्र पढ़ा। छड़ी का छूना था कि सिपाही को ऐसा मालूम हुआ मानो उसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो। वह बेतहाशा जमीन पर गिर पड़ा और चिल्लाने लगा। बाबाजी ने उसकी तरफ देख कर कहा, "ऐसे दुष्ट की यही सजा ठीक है।" और तब दूसरे सिपाही की तरफ मुखातिब हो बोले, "तुम जा कर खबर करते हो या तुम्हारी भी यही गति करूं ?"

एक डरती हुई निगाह उस सिपाही ने अपने साथी पर डाली और तब हाथ जोड़ कर कहा, "महाराज मैं अभी जाकर इत्तला करता हूं, तब से आप इस चौकी पर आराम करें।" इतना कह वह तुरंत भीतर चला गया। बाबा जी ने बैठना मंजूर न किया बल्कि वहीं पर इधर से उधर टहलने लगे।

दारोगा ... ने देखा कि एक रथ जिसमें दो मजबूत बैल
कहा, "हैं" ... और जिसके पहियों पर पड़ी धूल बता रही थी
बाबा ... आ रहा है, सामने की सड़क से आया और
कुछ बोलो ... के मकान के बगल वाली गली में घुस गया।
बाद यक ... भी उस गली के मोड़ पर जा पहुँचे और
पहिचान ... देखा कि मकान का एक दरवाजा खुला और दो
दारोगा ... उतर अन्दर चले गये। अंधेरे के कारण यद्यपि
का होने ... गा कि ये दोनों मर्द थे या औरत पर रथ के
नाथ बा ... खड़े रहने से यह प्रगट होता था कि वे
दिया और ... वापस भी लौटेंगे अस्तु प्रभाकरसिंह ने सोचा
बदन में ... ना लगाना चाहिये कि ये दोनों सवार कौन
क्यों उतर ... से आ रहे हैं।

दारोगा ... गाह में यह देख नकली बाबा जी लौट पड़े
सुनियेहमें ... को किसी तरह का शक न होने पावे।
है, मालूम ... सिपाही भी जो इत्तला करने को भीतर गया
रहा है। ... और बाबा जी से बोला, "चलिये भीतर बुला-
मस्त ... जी बाबा जी चलने को तैयार हुए मगर
इतना ... जे के और सिपाहियों ने गिड़गिड़ा कर कहा,
माथे से ... करके इस हमारे साथी पर से अपना मंत्र
थी कि ... देखिये यह मछली की तरह तड़प रहा है।"
हो गया ... तरफ देखा जिधर वह सिपाही अभी तक
दारोगा ... हाय हाय कह कर चिल्ला और छटपटा रह

था, और कहा, "यह दुष्ट इसी लायक है।" मगर सिपाहियों ने बेतरह गिड़गिड़ाना शुरू किया जिससे उन्होंने कहा, "अच्छा उसे मेरे पास लाओ।"

दो सिपाही उसे पकड़ धकड़ कर बाबा जी के पास लाये। बाबाजी ने मुंह से कई मंत्र पढ़े और कई बार पुनः उसी छड़ी से उसे छूआ। ताज्जुब की बात थी कि उस आदमी की तकलीफ जिस तरह शुरू हुई थी वैसे ही दूर हो गई। दर्द बिलकुल जाता रहा और वह भला चंगा हो बाबा जी के पैरों पर गिर पड़ा। बाबाजी ने उससे कहा, "खबरदार आगे कभी किसी सिद्ध की अवज्ञा न कीजियेगा।" और भीतर चलने को तैयार हुए। एक सिपाही अदब के साथ आगे हो लिया और मस्तानी चाल से चलते और धीरे धीरे न जाने क्या क्या बुदबुदाते हुए बाबा जी उसके पीछे हो लिये।

अदब और इज्जत के साथ अनोखे सिद्ध बाबा जी दारोगा साहब के सामने पहुंचाये गये जो उस समय बीमार और सुस्त एक मसहरी पर पड़े हुए थे और एक नौकर सिरहाने बैठा किसी दवा से तर एक कपड़े से उनके सिर को ठंडक पहुंचा रहा था। उस बड़े कमरे में सिवाय दारोगा साहब या नौकर के और कोई न था परन्तु बगल के एक दर्वाजे पर पड़ी चिक के हिलने से बाबा जी को मालूम हो गया कि इसके अन्दर कोई औरत अवश्य है जिसने पर्दे की आड़ से बखूबी उन्हें देखा है। एक ही निगाह चिक पर डाल बाबाजी ने

अचानक उन्होंने देखा कि एक रथ जिसमें दो मजबूत बैल जुते हुये थे और जिसके पहियों पर पड़ी धूल बता रही थी कि कहीं दूर से आ रहा है, सामने की सड़क से आया और दारोगा साहब के मकान के बगल वाली गली में घूम गया। टहलते हुए ये भी उस गली के मोड़ पर आ पहुँचे और वहां से उन्होंने देखा कि मकान का एक दरवाजा खुला और दो आदमी रथ से उतर अन्दर चले गये। अंधेरे के कारण यद्यपि यह पता न लगा कि ये दोनों मर्द थे या औरत पर रथ के दर्वाजे ही पर खड़े रहने से यह प्रगट होता था कि वे दोनों शीघ्र ही वापस भी लौटेंगे अस्तु प्रभाकरसिंह ने सोचा कि इसका पता लगाना चाहिये कि ये दोनों सवार कौन हैं और कहां से आ रहे हैं।

एक ही निगाह में यह देख नकली बाबा जी लौट पड़े ताकि किसी को किसी तरह का शक न होने पावे। उसी समय वह सिपाही भी जो इत्तला करने को भीतर गया था लौट आया और बाबा जी से बोला, "चलिये भीतर बुलाहट है।" नकली बाबा जी चलने को तैयार हुए मगर उसी समय दर्वाजे के और सिपाहियों ने गिड़गिड़ा कर कहा, "बाबाजी! दया करके इस हमारे साथी पर से अपना मंत्र हटा लीजिये, देखिये यह मछली की तरह तड़प रहा है।" बाबाजी ने उस तरफ देखा जिधर वह सिपाही अभी तक जमीन पर पड़ा हाय हाय कह कर चिल्ला और छटपटा रहा

था, और कहा, "यह दुष्ट इसी लायक है।" मगर सिपाहियों ने बेतरह गिड़गिड़ाना शुरू किया जिससे उन्होंने कहा, "अच्छा उसे मेरे पास लाओ।"

दो सिपाही उसे पकड़ धकड़ कर बाबा जी के पास लाये। बाबाजी ने मुंह से कई मंत्र पढ़े और कई बार पुनः उसी छड़ी से उसे छूआ। ताज्जुब की बात थी कि उस आदमी की तक-लीफ जिस तरह शुरू हुई थी वैसे ही दूर हो गई। दर्द बिल-कुल जाता रहा और वह भला चंगा हो बाबा जी के पैरों पर गिर पड़ा। बाबाजी ने उससे कहा, "खबरदार आगे कभी किसी सिद्ध की अवज्ञा न कीजियेगा।" और भीतर चलने को तैयार हुए। एक सिपाही अदब के साथ आगे हो लिया और मस्तानी चाल से चलते और धीरे धीरे न जाने क्या क्या बुदबुदाते हुए बाबा जी उसके पीछे हो लिये।

अदब और इज्जत के साथ अनोखे सिद्ध बाबा जी दारोगा साहब के सामने पहुंचाये गये जो उस समय बीमार और सुस्त एक मसहरी पर पड़े हुए थे और एक नौकर सिरहाने बैठा किसी दवा से तर एक कपड़े से उनके सिर को ठंडक पहुंचा रहा था। उस बड़े कमरे में सिवाय दारोगा साहब या नौकर के और कोई न था परन्तु बगल के एक दर्वाजे पर पड़ी चिक के हिलने से बाबा जी को मालूम हो गया कि इसके अन्दर कोई औरत अवश्य है जिसने पर्दे की आड़ से बखूबी उन्हें देखा है। एक ही निगाह चिक पर डाल बाबाजी ने

दारोगा साहब की ओर नजर फेरी और सहानुभूति के साथ कहा, "हैं, बेटा जद्दू !! यह तेरा क्या हाल है ?"

बाबा जी की सूरत शकल और स्वर से दारोगा साहब कुछ चौंके और कुछ देर तक बड़ी गौर से उनकी तरफ देखने बाद यकायक प्रसन्न हो बोल उठे, "अहा, हा ! अब मैंने पहिचाना, आइये ! आइये !! सिद्ध जी !!"

दारोगा साहब कोशिश कर उठ बैठे और बाबा मस्तनाथ का दोनों पैर छू कर उन्होंने आंखों से लगाया। मस्तनाथ बाबा जी ने भी पीठ पर हाथ फेर बहुत कुछ आशीर्वाद दिया और पुनः पूछा, "बेटा यह तेरा क्या हाल है ? इस तरह बदन में जगह जगह पट्टियां क्यों बँधी हुई हैं ? तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है ? आवाज क्यों कमजोर हो रही है ?"

दारोगा० । गुरु जी, अब आप आ गये हैं तो सब हाल सुनियेहीगा, पर इस समय तो मैं सिर के दर्द से मरा जा रहा हूं, मालूम होता है सर फट जायगा, बोलना कठिन हो रहा है ।

मस्तनाथ० । हैं ! यह बात है ? ले अभी कष्ट दूर करता हूं ।

इतना कह मस्तनाथ ने अपनी छड़ी दारोगा साहब के माथे से छुला दी और मुंह से कुछ मन्त्र पढ़ा । ताज्जुब की बात थी कि छड़ी छूते ही दारोगा साहब के सर का दर्द काफूर हो गया और बेचैनी तथा घबड़ाहट बिल्कुल दूर हो गई । दारोगा साहब ने ताज्जुब में भर कर मस्तनाथ के पैरों पर

सिर रख दिया और कहा, "गुरु जी आप धन्य हैं! आशा है मेरे बाकी कष्टों को भी आप इसी तरह दूर कर देंगे?"

मस्त०। हां हां जो कुछ तकलीफ हो मुझ से कहा, गुरु की कृपा से बात की बात में दूर हो जायगी।

दारो०। जी हां सब बयान करता हूं, परन्तु पहिले यह सुन लिया चाहता हूं कि आज मेरे कौन से पुण्य उदय हो गये जो अचानक आप के चरणों का दर्शन हुआ।

मस्त०। कुछ नहीं आज सुबह गिर्नार के जंगलों में ध्यान लगा रहा था कि अचानक आचार्य जी का दर्शन हुआ। उन्हों-ने कुछ उपदेश दिया और आज्ञा दी कि तुरन्त जमानियां जाओ, वहां मेरा शिष्य कष्ट में है, देखो और सहायता दो। कुछ और भी सेवा की आज्ञा हुई। तुरन्त तैयार हो गया और आचार्य की कृपा से इस समय अपने को यहां पा रहा हूं।

दारोगा०। (हाथ जोड़ कर) आचार्य जी की मुझ पर बड़ी दया रहती है। आज सुबह ही कष्ट से व्याकुल हो कर मैं ने उनका ध्यान किया था और तुरन्त उन्होंने दास की विनती सुनी, वाह! धन्य हैं!!

मस्त०। सभी दासों पर उनकी ऐसी ही दया रहती है अभी उस दिन......पर जाने दो, उन सब से कोई मतलब नहीं। तुम अपना कष्ट कहो ताकि जो कुछ मुझ से हो सके करूं और जाऊं क्यों कि अभी आचार्य चरणों की और भी कई आज्ञाएं करनी हैं।

दारो० । यह तो होगा नहीं, अभी तो मैं आप को जाने नहीं दूंगा, इतने वर्षों के बाद दर्शन हुआ है, अब इतना शीघ्र तो मैं जाने नहीं देता।

मस्त० । (हंस कर) तेरी भक्ति का हाल तो मुझे मालूम है पर गुरु का काम देखना भी आवश्यक है।

दारो० । अब गुरु जी से आप इजाजत ले लें, मेरी तरफ से हाथ जोड़ कर कह दें कि जल्दी न करें, कुछ मेरी सेवा भी तो स्वीकार करें।

मस्त० । अच्छा अच्छा कोई हर्ज नहीं, वे तुझ पर जितना प्रेम रखते हैं उससे अवश्य तेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे इसमें सन्देह नहीं। मैं आज ध्यान में उनसे निवेदन कर दूंगा। मगर अब तू अपने कष्टों को मुझ से बयान कर जा क्योंकि आचार्य चरण की आज्ञा है कि जाते ही पहिले जड्डू के दुःख दूर कर के तब कोई दूसरा काम करना। अस्तु तू बिना एक क्षण का भी विलंब किये मुझसे सब हाल कह जा। यह चोटें तेरे शरीर पर कैसे लगी हैं?

दारो० । (मिश्र जी के पास खिसक कर और धीरे से) गुरु जी क्या बताऊं! एक गदाधरसिंह नाम का ऐयार मेरी जान का गाहक बना हुआ है, उसी ने तीन चार दिन हुए मुझे सख्त जख्मी किया और मेरी बहुत सी जरूरी चीजें भी ले गया, उस पर अब......

मस्तनाथ० । गदाधरसिंह ? कौन गदाधरसिंह ? यह नाम तो मेरा सुना हुआ है । वही लड़का तो नहीं जिसे मेरे गुरु-भाई देवदत्त ब्रह्मचारी ने पाल कर ऐयारी सिखाई थी ?

दारोगा० । जी हां, जी हां, वही ।

मस्त० । अच्छा ! तो उसने तुमसे दुश्मनी पर कमर बांधी है ? मगर वह तो बड़ा सीधा लड़का था ।

दारो० । जी सीधा है, अरे वह तो ऐसी आफत की पुड़िया है कि उसने मेरे नाक में दम कर रक्खा है ! उसे आप बिल्कुल काला नाग समझिये । उसने तो मुझे इतने कष्ट दिये हैं कि मेरा ही जी जानता है ।

मस्त० । हैं ऐसी बात ! (क्रोध का भाव कर और डंडा उठा कर) मैं अभी उसे भस्म कर देता हूं । उसकी मजाल क्या जो मेरे शिष्य को कष्ट दे !! (आंख मूंद और ध्यान लगा कर कुछ मंत्र पढ़ते हैं)

यह देख दारोगा का कलेजा उछल पड़ा कि सिद्ध जी की लाठी में से आग की चिनगारियां निकल रही हैं मानों उनके दिल का क्रोध अग्नि स्वरूप हो कर निकल रहा है जो अभी संसार को भस्म कर देने की शक्ति रखता है । उसका दिल यह सोच नाच उठा कि अब उसका यह सबसे भारी दुश्मन और असली कांटा दूर हुआ चाहता है ।

सिद्धजी० । (आंखें खोल कर और मस्ती के साथ झूम कर) क्या हर्ज है, जा इस बार छोड़ देता हूं, मगर फिर कभी

ऐसा करने की हिम्मत न करियो। (दारोगा की तरफ देख और मानों चौंक कर) क्या बताऊं मैं तो उसे अभी भस्म कर रहा था पर ब्रह्मचारी जी के प्रेम ने रोक दिया, मगर कोई हर्ज नहीं, तीन दिन के भीतर तू देखेगा कि वह तेरे पैरों पर लोटेगा।

दारोगा०। (प्रसन्न हो कर) गुरूजी, कुछ ऐसा उपाय कर दीजिये कि वह सदा के लिये मेरे आधीन हो जाय।

सिद्धजी०। ऐसा ही होगा ! मेरा वचन कभी मिथ्या न होगा। तू देखियो, मेरी मंत्र शक्ति के प्रभाव से वह तेरा दास हो जायगा। अच्छा और बता क्या कष्ट है,बता जल्दी बता !

दारोगा०। आपकी इस एक ही दया ने मेरे समूचे कष्ट दूर कर दिये पर फिर भी आज्ञा हो तो एक प्रार्थना करूं।

सिद्ध०। कह, जल्दी कह।

दारोगा०। बहुत दिनों से मेरी इच्छा है कि लोहगढ़ी का अद्भुत खजाना मेरे कब्जे में आ जाय ! आप दया कर कोई ऐसा उपाय कर दें कि यह इच्छा मेरी पूरी हो जाय।

सिद्ध०। लोहगढ़ी ! लोहगढ़ी !! (आंख मूंद और ध्यान लगा कर) हां अब समझा ! जमानिया तिलिस्म का वह हिस्सा जिसकी उम्र तमाम हो चुकी, जिसकी अद्भुत चीजें देख सिद्धों का मन लालच में आजाय ! वह लोहगढ़ी, जिसका भेद इस समय दुनिया में सिर्फ तीन आदमी जानते हैं ! यह मेरा शिष्य भी कैसी कैसी जगह हाथ बढ़ाता है (आंखें खोलकर

और मुस्कुराकर) अच्छा तो तू लोहगढ़ी का खजाना चाहता है?

दारोगा०। अगर आपकी दया हो जाय।

सिद्ध०। कार्य तो बड़ा कठिन है पर क्या किया जाय, तेरा प्रेम मुझे बाध्य करता है। अच्छा कोई हर्ज नहीं, गुरु कृपा से तेरी इच्छा पूरी हो जायगी।

दारो०। (प्रसन्न होकर) हां!!

सिद्ध०। अवश्य, पर मुझे इसमें तीन कण्टक दिखाई पड़ते हैं।

दारो०। क्या क्या?

सिद्ध०। खैर कोई बात नहीं, तुझे कहने से क्या लाभ? मैं सभी कंटक दूर कर लूंगा और परमात्मा की कृपा हुई तो एक हफ्ते के अन्दर वह तिलिस्म तेरे हाथ से तुड़वा दूंगा। तू कल आधी रात को तैयार रहियो, उसी समय उसको तोड़ने में हाथ लगाना होगा।

दारो०। (खुशी से फूल कर) बहुत अच्छा मैं तैयार रहूंगा।

सिद्ध०। अच्छा और कोई बात हो तो कह!

दारो०। बातें तो बहुत सी थीं पर आप के दर्शन होते ही मेरे कष्ट ऐसे दूर हो गये मानों थे ही नहीं।

सिद्ध जी०। (हंस कर) सब गुरु चरणों की कृपा है, मैं क्या चीज हूं। अच्छा तो अब मैं चलता हूं कल आधी रात को तैयार रहियो।

दारो०। तो आप चले कहाँ, आराम नहीं कीजियेगा ?

सिद्ध०। नहीं, मुझे अपने शिष्य इन्द्रदेव को भी देखना है, उस पर भी सुना है बड़े कष्ट आ पड़े हैं, उन्हें दूर करना आवश्यक है।

दारो०। (कुछ चिन्तित होकर) अच्छा तो कल सुबह चले जाइयेगा। इस समय रात के वक्त कहाँ कष्ट कीजियेगा।

सिद्ध०। मेरे लिये रात दिन सब बराबर हैं। अच्छा वह इस समय है कहाँ ? (आँख मूंद कर) अरे वह तो इसी शहर में है। मगर यह क्या ? (आँख खोल कर) अरे जहदु ! यह तैने क्या किया है !!

दारो०। (काँप कर) मैंने क्या किया गुरु जी !!

सिद्ध०। (क्रोध से लाल आँखें कर) क्या किया ! फिर पूछता है क्या किया !! शैतान कहीं का ! क्या मेरे से कोई बात छिपी रह सकती है ! बता तैने क्या उसकी स्त्री और लड़का को नहीं हरा है ? (उठ कर) बोल जल्दी !!

दारो०। (सिद्ध जी का क्रोध देख काँप कर) जी, गुरु जी, ई, ई, मैं............

दारोगा की घबराहट देख सिद्धजी का क्रोध और भभका। उन्होंने लाल आँखें कर लीं और बार बार अपने डंडे को जमीन पर पटकने लगे। देखते देखते उस डंडे में से आग की लपटें निकलने लगीं। उन्होंने डंडे को माथे से ऊंचा उठाया और गरज कर कहा, "दुष्ट अभी बता, मेरे शिष्य इन्द्रदेव की स्त्री

और बेटी कहाँ है, नहीं तो मैं तुझे बात की बात में भस्म करता हूं।

सिद्ध जी का क्रोध देख दारोगा के तो हवास गुम हो गये। वह मन ही मन कहने लगा, "ऐसे आने से तो इनका नहीं आना ही अच्छा था! कहाँ की मुसीबत में जान पड़ गई! इनका खूनी डंडा तो मुझे भस्म ही किया चाहता है!" सिद्ध जी फिर बोले, "नालायक तुझे शर्म नहीं आती! अपने गुरु भाई के साथ यह व्यवहार! क्या तू वह दिन भूल गया जब तू और वह एक साथ मुझसे पढ़ा करते थे! क्या तू भूल गया कि किस तरह अपनी जान पर खेल कर इन्द्रदेव ने तुझे पागल हाथी के पैरों के नीचे से बचाया था! क्या तू भूल गया कि मैंने चलती समय तुझे कह दिया था कि तू सब कुछ कीजियो पर इन्द्रदेव की तरफ टेढ़ी निगाह से कभी न देखियो! कंबख्त तू एक दम नालायक है! तू मेरी कृपा का पात्र बिल्कुल नहीं है। अब तू मुझसे किसी बात की आशा न रख, न यही समझ कि लोहगढ़ी का अनमोल खजाना अब मैं तुझे दिलवाऊंगा, तू उसके योग्य नहीं है"

अब दारोगा और भी घबराया। उसने सोचा कि यह मिली रकम निकली जाती है। अगर लोहगढ़ी की अद्भुत चीजें उसे मिल गईं तो न जाने कितने इन्द्रदेव उसके तलुए चाटा करेंगे। इस समय एक मामूली बात के लिये सिद्ध जी को नाराज करना बुद्धिमानी नहीं। इन्हें ठंढा करना चाहिये

दारोगा०। (हाथ जोड़ कर और सिद्ध जी के पैरों पर सिर रखकर) गुरु जी आप तो व्यर्थ ही ख़ाक पर खफ़ा हो रहे हैं। भला मेरी मजाल है जो मैं आप की आज्ञा का उल्लंघन करूं? मैंने इन्द्रदेव के साथ कोई बुराई नहीं की बल्कि भलाई ही की है जो उनकी स्त्री की अपने यहां रक्षा की है नहीं तो दुश्मन उसे जान से मार डालते।

सिद्ध जी०। (कुछ शान्त होकर) स्त्री की! केवल स्त्री की? और उसकी बेटी कहां है?

दारोगा०। गुरु जी उस लड़की को तो वही दुष्ट गदाधरसिंह लूट ले गया। न जाने जीता भी रक्खा है कि मार डाला है।

सिद्धजी० (दांत पीस कर) अच्छा कोई हर्ज नहीं, अगर उस पाजी ने उस बेचारी लड़की को ज़रा भी कष्ट पहुँचाया तो मैं उसके कुटुम्ब भर को सत्यनाश कर दूंगा, वह जा कहां सकता है। अच्छा तू उसकी स्त्री को ही ला, अभी ला, इसी समय ला, तुरत ला।

दारो०। जी हां अभी उसे बुलवा देता हूं। उसे तो दुश्मनों ने प्राण दंड की आज्ञा दी थी पर मैंने अपनी जान पर खेल कर उसे अभी तक जीता रख छोड़ा है। भला मैं इन्द्रदेव की कुछ बुराई चाह सकता हूं! मैं तो स्वयम् सोच रहा था कि कोई मौका मिले और उसे इन्द्रदेव के पास पहुँचाऊं।

सिद्ध० । (शान्त होकर) अच्छा तो उसे बुला। मैं अभी उसे लेकर इन्द्रदेव के पास जाऊंगा।

दारोगा ने अपने पास से तालियों का गुच्छा निकाला और उस नौकर के हाथ में देकर जो वहां बैठा ताज्जुब से यह सब हाल देख रहा था कान में कुछ समझाया। नौकर गुच्छा ले कर चला गया और दारोगा सिद्ध जी की तरफ मुखातिब हुआ।

सिद्ध०। तैने अच्छा किया जो मेरा क्रोध बढ़ने न दिया नहीं तो आज तुझमें और मृत्यु में बाल भर ही का अन्तर रह गया था। पर अब मेरे इस योगदंड को जो क्रोध आ गया है वह मैं किस पर निकालूं? इसका क्रोध व्यर्थ नहीं जा सकता, अच्छा यह ले।

इतना कह सिद्धजी ने अपना विचित्र डंडा जिसमें से अभी तक आग की लपटें निकल रही थीं उस चिक से लगा दिया जो पास वाले एक दरवाजे पर पड़ा हुआ था। डंडा छूते ही वह भक करके जल गई और सिद्ध जी ने उसकी आड़ में से भागती हुई मनोरमा और नागर को एक झलक देख कर ही पहिचान लिया मगर अपने भाव से कुछ भी प्रगट होने न दिया। दारोगा डर कर चुपचाप उनके इस भयानक डंडे की अद्भुत करतूत देखने लगा।

थोड़ी ही देर बाद वह नौकर अपने साथ एक औरत को लिये वापस लौटा सिद्धजी ने पहिली ही निगाह में पहिचान

लिया कि यह इन्द्रदेव की स्त्री सर्यू है। उस समय सर्यू की यह हालत हो रही थी मानों बरसों की बीमार हो। बदन में खून का तो निशान नहीं था और चेहरा पीला हो रहा था, बदन सूख कर कांटा हो गया था और कमजोरी इतनी थी कि एक कदम उठाना मुश्किल हो रहा था। प्रभाकरसिंह की आंखों में उसकी यह हालत देख आंसू आ गये पर बड़ी कोशिश से उन्हों ने अपने भावों को छिपाया और दारोगा से कहा, "क्या यही इन्द्रदेव की स्त्री है?"

दारोगा०। जी हां।

सिद्धजी०। (सर्यू से) बेटी आ मेरे पास आ! तू तो शायद मुझे न जानती होगी पर यह यदुनाथ और तेरा पति इन्द्रदेव मुझे अच्छी तरह जानते हैं क्यों कि दोनों ही ने लड़कपन में मुझही से विद्याध्ययन किया है। मैं तुझे अभी तेरे पति के पास ले चलता हूं। (दारोगा से) मैं इस लड़की को ले जाता हूं। इस समय सीधा इन्द्रदेव के पास जाऊंगा और उसकी बातें सुनूंगा। देखूं उस पर क्या क्या मुसीबतें आई हैं।

दारो०। बहुत अच्छा, मैं सवारी मंगा देता हूं।

सिद्ध०। नहीं इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

दारोगा०। आपकी शक्ति को मैं जानता हूं, आप पल भर में जहां चाहें जाने की सामर्थ रखते हैं। पर बेचारी सर्यू बीमारी के कारण बहुत ही दुखी हो रही है। इसे वहां तक जाने में अवश्य कष्ट होगा (नौकर को तरफ देख कर) जाओ जल्दी सवार

का बन्दोबस्त करो ।

नौकर चला गया और दारोगा ने पुनः कहा, "तो गुरु जी कल रात को पुनः दर्शन होंगे ?"

सिद्ध० । हां, यद्यपि तेरी करतूत देख इच्छा तो नहीं होती पर फिर भी वचन दे चुका हूं इससे आऊंगा और तुझे साथ ले चल कर लोहगढ़ी का भेद समझा दूंगा। तू आप ही उसका तिलिस्म तोड़ लीजियो ।

दारो० । पर सिद्धजी, मैंने तो सुना है कि उसका हाल किसी किताब में लिखा है । जिसके पास वह किताब नहीं होगी वह उसे तोड़ नहीं सकता ।

सिद्ध० । ऐसी ऐसी किताबें मेरे नाखून में हैं। क्या किताबों के भरोसे मैं सिद्ध हुआ हूं ? कह तो यहां बैठे बैठे केवल इस डंडे के जोर से वहां का सारा माल तेरे सामने रख दूं ! तैने मुझे समझा क्या है ?

सिद्ध जी की बातें सुन दारोगा की तबीयत खिल गई। उसने सोच लिया कि अब लोहगढ़ी का अद्भुत खजाना उसी का है । वह अपने भाग्य की सराहना करता हुआ कल की रात आने की राह देखने लगा ।

नौकर ने आकर सवारी तैयार होने की खबर दी और प्रभाकरसिंह सयू को लिये उठ खड़े हुए । कमजोर होने पर भी दारोगा इज्जत के साथ उन्हें पहुंचाने दरवाजे तक आया

और अब वे रथ पर चढ़ गये और रथ रवाना हो गया तो मन ही मन प्रसन्न होता हुआ भीतर लौटा।

पांचवां बयान

बाबाजी (दारोगा साहब) की कृपा से नागर अब ऊंचे दर्जे की रंडियों में गिनी जाने लगी है। बाजार का बैठना एक तरह पर उसने छोड़ ही सा दिया है और खुद भी उस पुराने मकान को छोड़ एक दूसरे आलीशान मकान में डेरा जमाया है जिसमें आने जाने के कई दर्वाजे हैं जो तरह तरह के काम में आते हैं क्योंकि चाहे दारोगा साहब को यही विश्वास हो कि नागर उनके सिवाय और किसी की शकल नहीं देखती पर नागर के पुराने प्रेमी लोग इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं हैं और इसी से मौके बे मौके कोई न कोई उसके सुन्दर सजे हुए कमरे में नजर आ ही जाते हैं। धूर्त नागर भी अपने आमदनी के जरिये को बंद करना पसंद न करके खास खास प्रेमियों और उभरे हुए अमीर नौजवानों पर अपनी कृपा बनाए रखती है और दिल्लगी तो यह है कि उनमें से हर एक यही समझता है कि नागर उसी की है और रहेगी और जो कुछ उससे पाती है उसी से अपना खर्च चलाती हुई किसी दूसरे की तरफ झांकती भी नहीं। यह सोचकर वे लोग और भी

उल्लू बनते हैं और उसकी तरह तरह की बेढब फरमाइशों को खुशी से पूरा करते हैं।

रात पहर भर के लगभग जा चुकी होगी। अपने मकान की छत पर नागर एक ऊंची गद्दी पर मसनद के सहारे अध-लेटी सी पड़ी हुई है। इसके सामने एक छोटा सितार है जिस की तारों को वह कभी कभी छेड़ देती है। सुन्दर चांदनी चारो ओर छिटकी हुई है। ठंडी हवा के झोंके नीचे बाग में से नाज़ुक फूलों की खुशबू लिये ऊपर पहुँचते हैं और नागर के दिमाग को मुअत्तर करते हैं पर उसकी आकृति से मालूम होता है कि वह इस समय किसी चिन्ता में डूबी हुई है और उसका मन किसी दूसरी ही दुनियां का चक्कर लगा रहा है।

कुछ देर बाद एक लंबी सांस लेकर उसने मानो चिन्ता के बोझ को कुछ देर के लिये दूर किया और सितार उठा कर कुछ गुनगुनाना शुरू किया। नागर गाती बहुत ही अच्छा थी और उसका गला भी बड़ा सुरीला था अस्तु इस चांदनी रात के सन्नाटे में सितार के मधुर स्वर के साथ उसके मनोहर गाने ने एक अजीब ही असर पैदा करना शुरू किया।

सड़क पर जाते हुए एक नौजवान सवार के कानों में नागर के दर्द भरे गले की एक तान पड़ी जिसने उसे बेचैन कर दिया। उसने घोड़े की लगाम खींची और कुछ देर के लिये रुककर सुनने लगा पर नागर का गाना सुनने के लिये कुछ देर के लिये ठिठकना गज़ब था। उस नौजवान के दिल

ने उसे इजाजत न दी कि घोड़े को तेज करे और अपने रास्ते पर जाय। वह घोड़े से उतर पड़ा और नागर के मकान के फाटक पर पहुंच उसने नौकरों से कुछ कहा। एक लौंडी दौड़ी हुई गई और नागर के पास पहुंच उसने उसके कान में कुछ कहा। लौंडी की बात सुनते ही नागर चौंक पड़ी, सितार उसके हाथ से छूट गया और उसके चेहरे से उत्कंठा के साथ साथ एक तरह की प्रसन्नता प्रगट होने लगी जिसने थोड़ी देर के लिये उसके गालों को गुलाबी कर दिया। उसने लौंडी से कुछ पूछा और अनुकूल उत्तर पा मुस्कुरा उठी। लौंडी चली गई और नागर एक आलमारी के पास पहुंची जिसमें बहुत से चित्र रक्खे हुए थे। उनमें से खोज कर एक तसवीर उसने उठाली और उसे लिये अपनी जगह पर आ बैठी। तस्वीर सामने रख ली और सितार उठा पुनः गाना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद लौंडी उस नौजवान को लिये हुए वहीं आ पहुंची जहां नागर बैठी हुई थी। नौजवान की सूरत देखते ही नागर मानों चिहुंक सी उठी, सितार हाथ से छोड़ दिया और बदहवास की सी तरह बन आंखें मलती हुई उस नौजवान की सूरत देखने लगी। मगर यह हालत भी देर तक न रही, शीघ्रही मानों उसने अपने इस दोस्त को पहिचान लिया और एक चीख मार कर अपनी जगह से उठ उसके गले से आ लिपटी।

नागर की लौंडी यह अवस्था देख विचित्र तरह से मुस्कुराती हुई छत के नीचे उतर गई और वह नौजवान नागर को दम दिलासा देता हुआ उसकी गद्दी पर ले आया जहां दोनों बैठ गये। नागर की आंखों से आंसू गिर कर उसके आंचल को तर कर रहे थे। नौजवान ने अपने दुपट्टे से उन्हें पोंछा और उसे अपने कलेजे से लगा मीठी मीठी और दम दिलासा देने वाली बात करने लगा जो ऐसे मौके पर वफादार आशिक अपनी बेवफा रंडियों से किया करते।

कुछ देर बाद नागर ने अपने को चैतन्य किया और दोनों हाथों से नौजवान का चेहरा चंद्रमा की तरफ घुमा बड़े प्यार की निगाहों से उसे देखती हुई बोली, " आज मेरी किस आह ने तुम्हारे दिल पर असर किया जो यह भोली सूरत देखने को मिली।

नौजवान०। (हंस कर) शुक्र है कि तुम्हें अपने आशिकों से इतनी फुरसत तो मिली कि तुम्हारे दिलने इस दिलजले को याद किया।

नागर०। (बिगड़ कर और नौजवान से दूर हट कर) जाओ जाओ! महीनों बाद तो सूरत दिखलाई है और आते ही जली कटी बातें सुनाने लगे, सच कहा है कि मर्दों को दर्द नहीं होता।

नौजवान०। (नागर को पास खींच कर और गले में हाथ डाल कर) यह तुम साफ झूठ बोल रही हो। भला कहो-तो

सही इस बीच में कितनी बार इस गरीब की याद तुम्हें आई थी ?

नागर०। जी एक दफे नहीं बस अब तो खुश हो ?

इतने ही में नागर की निगाह उस तस्वीर पर पड़ी जो कुछ ही देर पहिले उसने आलमारी से नीकाल सामने रक्खी थी। उसने उसे हटा कर गद्दी के नीचे छिपाने के लिये हाथ बढ़ाया पर उसी समय नौजवान ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "यह किस भाग्यवान की तस्वीर सामने रख छोड़ी है, जरा मैं भी तो देखूं।"

नागर०। (हाथ झटक और तस्वीर गद्दी के नीचे दबाकर) होगी किसी की, तुम्हें मतलब !

नौजवान०। तोभी अगर बतला दोगी तो क्या कोई हर्ज होगा ?

नागर०। हां बहुत बड़ा।

नौजवान०। क्या ?

नागर०। तस्वीर देख कर तुम उस बेवफा का नाम पूछोगे और नाम लेने से मेरे कलेजे की आग बाहर नीकल पड़ेगी जिससे तुम जल जाओगे

नौजवान०। वाह ! तब तो यह अद्भुत तस्वीर किसी अजा-यबघर में रखने लायक है, मैं इसे जरूर देखूंगा।

इतना कह नागर के रोकने पर भी नौजवान ने हाथ बढ़ा कर वह तस्वीर निकाल ली और चंद्रमा की रोशनी में उसे

देखा। यह एक खूबसूरत नौजवान की तस्वीर थी जिसके नीचे लिखा था "श्यामलाल।"

तस्वीर देखते ही और यह जानते ही कि यह उसी की तस्वीर है नौजवान मुस्कुरा उठा और तस्वीर दूर फेंक-नागर को अपनी तरफ खैंच कलेजे से लगा बोला, "भला यह तो बताओ इस समय मेरी तस्वीर सामने रख तुम क्या कर रही थी?"

नागर०। (श्यामलाल के गले में हाथ डालकर) तुम्हारी कसम सच कहती हूं आज तुम्हारी याद ने मुझे बेतरह सता रक्खा था लाख लाख दिल को समझाती थी पर वह कंबख्त मानता ही न था। लाचार जब कुछ बस न चला तो तुम्हारी तस्वीर सामने रख अपने मचले हुए दिल को फुसलाने का उद्योग कर रही थी जब लौंडी तुम्हारे आने की खबर दी।

इतना कह कर नागर ने शर्मा कर श्यामलाल की गोद में मुंह छिपा लिया और श्यामलाल ने भी उसके इस प्रेम का बदला भरपूर चुका दिया। कुछ देर इसी तरह की चुहल में गुजर गई और तब फिर इस तरह की बातें होने लगीं

श्याम०। क्यों नागर! अब तुमने काशी का रहना एक दम ही छोड़ दिया?

नागर० जी हां, इधर बहुत दिनों से तो वहां जाना नहीं हुआ पर अब

श्याम०। अब क्या?

नागर० । अब पुनः आने का विचार कर रही हूं

श्याम० । जरूर जाना चाहिये क्योंकि "मोती जान"* की अब भी वहां कद्र और खोज है।

"मोती जान" का नाम सुन नागर ने शर्मा कर सिर झुका लिया और कहा बस इसी से तो मैं और भी वहां जाते हिचकती हूं क्योंकि जब मेरे पुराने दोस्त इस तरह हंसी उड़ाते हैं तो......

कहते कहते नागर रुक गई क्यों कि उसी समय सीढ़ी पर से धमधमाहट की आवाज मालूम हुई जिससे पता लगा कि कोई ऊपर आ रहा है। नागर श्यामलाल के पास से कुछ हट गई और उसी समय उसकी लौंडी ने वहां पहुंच कर एक लिफाफा उसके हाथ में दिया तथा कान में धीरे से कुछ कहा। बात सुन नागर एक बार कुछ चिहुंक सी गई पर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और कुछ टेढ़ी निगाह से लौंडी की तरफ देख कर बोली, "मैंने उसी समय कह दिया था चाहे कोई रईस हो इस समय मुझे इत्तला न दी जाय !!"

लौंडी० । जी बहुत बड़ा रईस और राजा......

---

* काशी के बाजार में नागर बहुत दिनों तक मोती जान के नाम से मशहूर थी और वहां इसने बहुत से अमीरों को अपने जाल में फँसा कर चौपट किया था।

नागर०। बस चुप रह कह दे आज मुलाकात नहीं हो सकती।

लौंडी०। जो हुक्म खैर यह चीठी तो पढ़ ली जाय जो उन्होंने दी है।

नागर०। कम्बख्तों के चीठी पुर्जों से तो मैं और भी परेशान हूँ खैर ला रोशनी।

लौंडी कुछ दूर पर रखा हुआ शमादान उठा लाई और नागर ने वह लिफाफा खोला। श्यामलाल ने देखा कि चीठी पढ़ते समय नागर के चेहरे से डर और तरद्दुद जाहिर होने लगा और वह कुछ कांप सी गई पर बड़ी कोशिश से उसने अपना भाव बदला और चीठी बंद कर बनावटी क्रोध के साथ बोली, "मुर्दे को अपने इश्क मुहब्बत से ही छुट्टी नहीं मिलती जा जा उसे विदा कर दे।"

नागर ने चीठी दूर फेंक दी और लौंडी शमादान पुनः दूर रख नीचे उतर गई। नागर ने आलस्य के साथ अँगड़ाई लेते हुए श्यामलाल के गले में हाथ डाल दिया और कहा "इन कम्बख्तों के मारे तो मैं आज परेशान हूँ।"

श्याम०। क्यों कौन था, और यह किसकी चीठी है?

नागर०। था एक कम्बख्त, पर इस समय क्या मैं तुम्हें छोड़ कर जा सकती हूं, इतने दिनों के बाद तो न जाने कौन सा पुण्य उदय हुआ कि तुम्हारी शकल दिखाई दी और सो

भी कुछ यह उम्मीद नहीं कि फिर कब सूरत दिखाई पड़ेगी और......

श्याम०। नहीं नहीं अब मैं बराबर आया करूंगा......

नागर०। धन्यभाग! क्या कहूं अगर मुझे खर्च की तकलीफ न होती तो मैं तुम्हारे सिवाय और किसी का कभी मुंह भी न देखती पर लाचारी के सबब से सब कुछ करना ही पड़ता है।

श्याम०। तुम्हें खर्च की तकलीफ?

नागर०। हां यह कम्बख्त शहर बड़ा ही कंजूस है जब से यहां आई अपना ही खा रही हूं इसी से तो अब पुनः काशी जाने का विचार कर रही हूं।

श्याम०। (अपने गले से सिकरी उतार कर देता हुआ) लो इसे रक्खो।

नागर०। क्यों?

श्याम०। मैं देता हूं।

नागर०। वाह जी, क्या तुमने मुझे ऐसा कंगाल समझ रक्खा है कि इतने दिनों के बाद मुलाकात होने पर भी.....

श्याम०। नहीं नहीं सो बात नहीं है, यह तो मैं तुम्हें खर्च के लिये देता हूं।

नागर के बहुत कुछ इनकार करने पर भी श्यामलाल ने सिकरी जबर्दस्ती उसके गले में डाल ही दी और बहुत बड़ी कसम दे कर मुंह बन्द कर दिया। कुछ देर तक पुनः सुहब

होती रही और तब श्यामलाल ने जाने की इच्छा प्रगट की।

नागर०। अजी बैठो अभी कहां जाओगे।

श्याम०। जाने का दिल तो नहीं करता पर क्या करूं आज सुबह का ही निकला हुआ हूँ अभी तक भोजन क्या एक बूंद जल तक नहीं पिया है अब घर जाऊंगा तब.........

नागर०। क्यों क्या यहां सब इन्तिजाम नहीं हो सकता। मैं अभी भोजन मंगवाती हूं। स्नान इत्यादि हुआ है या नहीं?

श्याम०। नहीं अभी कुछ नहीं इसी से रुकने से तकलीफ होगी। तुम बस केवल एक गिलास जल मंगवा दो और मुझे इजाजत दो।

लाचारी की मुद्रा दिखाती हुई नागर "खैर जैसी तुम्हारी इच्छा" कह जल मंगवाने के लिये उठ खड़ी हुई बल्कि स्वयं ही लेने के लिये नीचे उतर गई। उसके जाते ही श्यामलाल झपट कर उठा और वह लिफाफा जिसे नागर ने दूर फेंक दिया था उठा कर शमादान के पास पहुँचा। चीठी निकाल ली और जल्दी जल्दी पढ़ा। यह लिखा हुआ था:—

"वह काम हो गया। तुम इसी समय जाओ और रामदेई का काम निकालो। सिवाय भूतनाथ के और कोई यह काम नहीं कर सकता। सवारी जाती है। साधोराम तुम्हारी मदद पर रहेगा।"

बस इतना ही उस कागज का मजमून था जिसे श्यामलाल

फुर्ती से पढ़ गया और तब लिफाफा जहां पड़ा था वहां वैसेही रख कर पुनः अपनी जगह पर आ और बैठ कर सोचने लगा-

नागर ने तो कहा था कि यह उसके किसी आशिक की चीठी है पर यह तो कोई दूसरा ही मामला मालूम होता है रंडियाँ भी कैसी दगाबाज होती हैं! यह चीठी किसकी लिखी हुई है? नीचे किसी का नाम नहीं है पर अक्षर पहिचाने से मालूम होते । मुझे तो यह दारोगा साहब की लिखी मालूम होती है, हां ठीक है, बेशक उन्हीं की लिखावट है मगर नागर रामदेई की सूरत बन क्या काम करेगी? और भूतनाथ से क्या काम निकलने की आशा है? इसका पूरा पता लगाना चाहिये, इसमें अवश्य कोई गूढ़ भेद है।

इसी समय नागर अपने नाजुक हाथों में जल से भरा गिलास और कुछ मीठा लिये वहां आ पहुंची। श्यामलाल ने देखा कि आते ही उसकी पहिली निगाह उस चीठी की तरफ गई मगर उसे अपनी जगहपर ज्योंका त्यों पड़ा देख उसे संतोष हुआ और वह श्यामलाल के पास पहुंची श्यामलाल ने केवल जल पी लिया और बाकी चीजों को छोड़ उठ खड़ा हुआ।

बनावटी मुहब्बत की बातें करती हुई नागर उसके साथ नीचे तक आई और सब तरह तरह के वादे कर और करार कर उसने श्यामलाल को बिदा किया। फाटक पर पहुंच कर श्यामलाल ने देखा कि एक रथ और आठ सवार वहां मौजूद हैं जो पहिले दिखाई नहीं पड़े थे वह समझ गया कि यह वही

सवारी है जिसका जिक्र चौठीमें किया गया है। एक ही निगाह उस पर डाल श्यामलाल अपने घोड़े पर सवार हुआ और पूरब की सड़क पर रवाना हो गया।

थोड़ी दूर जाने बाद एक चौराहे पर पहुंच श्यामलाल ने घोड़ा रोका। उसी समय उसके दो साथी जो वहीं कहीं छिपे हुए थे निकल आये जिन्हें देख श्यामलाल घोड़े से उतर पड़ा और एक किनारे जा कुछ बातें करने लगा। कुछ समय के बाद बातचीत खतम हुई और तब श्यामलाल पुनः घोड़े पर सवार हो पूरब की ओर रवाना हो गया तथा उसके दोनों साथी नागर के मकान की तरफ लौट गये।

इसके लगभग घड़ी भर के बाद नागर अपनी एक लौंडी को साथ लिये मकान के बाहर निकली और उसी रथ पर सवार हो गई। हुक्म पा कर रथ तेजी से काशी की तरफ रवाना हुआ और वे सवार पीछे पीछे जाने लगे। श्यामलाल के दोनों साथियों ने भी रथ का पीछा किया और छिपे छिपे साथ जाने लगे।

छठां बयान

अब हम कुछ थोड़ा सा हाल मालती का लिखना चाहते हैं। पाठकों को याद होगा कि उसे इन्द्रदेव ने महाराज गिरधर सिंह को खोजते हुए जाकर लोहगढ़ी में पाया था और वहां से किसी हिफाजत की जगह में भेज स्वयम् दूसरे फेर में पड़ गये थे* ।

इन्द्रदेव ने मालती को काले पत्थर की एक चौकी पर बैठा दिया और कोई खटका दबाया जिसके साथ ही वह चौकी तेजी के साथ जमीन में धंस गई। झटके के कारण मालती की आंखें बन्द हो गईं और उसने मजबूती से उस चौकी को थाम लिया। कुछ देर तक वह चौकी उसी तरह नीचे धंसती रही पर इसके बाद एक झटके के साथ रुकी और तब आगे की तरफ बढ़ने लगी। अब मालती ने आंखें खोलीं मगर उसे कुछ दिखाई न पड़ा क्योंकि चारो तरफ इतना घना अन्धकार था कि हाँथ को हाँथ दिखाई न पड़ता था। धीरे धीरे चौकी की तेजी बढ़ने लगी और ठंढी हवा के कड़े झोंके मालती के बदन में लग कर उसे कंपाने लगे पर उसी समय उसे मालूम हुआ कि चौकी की सतह गर्म हो रही है। वास्तव में यही बात थी और कुछ ही देर बाद चौकी इतनी गर्म हो गई कि हवा के ठंडे झोंकों से लगने वाली सर्दी का असर बहुत कुछ दूर हो गया।

---

*देखो ११ वां हिस्सा मालती का किस्सा।

एक घड़ी से ऊपर समय तक वह चौकी उसी तेजी से चलती रही इसके बाद धीरे २ उसकी चाल कम होने लगी और ऐसा मालूम हुआ मानों वह ऊपर की तरफ किसी ढालुई जमीन पर चढ़ रही है। साथ ही मालती को सामने की तरफ कुछ ऊंचाई पर मगर बहुत दूर चांदनी मालूम पड़ी जिससे उसे गुमान हुआ कि अब उसका सफर पूरा हुआ चाहता है। हुआ भी ऐसा ही और थोड़ी देर और चलने के बाद वह चौकी एक दालान में पहुँच कर रुक गई जिसके तीन तरफ तो कोई इमारत थी और सामने की तरफ एक खुश नुमा बाग नजर आ रहा था मालती चौकी पर से उतर पड़ी और उतरते ही वह चौकी जिधर से आई थी उधर ही तेजी के साथ लौट गई।

कुछ देर तक मालती वहीं खड़ी सुस्ताती रही इसके बाद वह इस दालान के बाहर निकली और चारो तरफ घूम फिर कर देखने लगी कि वह किस स्थान में है। चारों तरफ ऊंची ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ एक खुशनुमा मैदान नजर आया जो लगभग चार सौ गज के लंबा और उससे कुछ कम चौड़ा होगा, चारो तरफ की पहाड़ियों पर स्थान स्थान में सुन्दर बंगले और मकान बने हुए थे जिसमें वक्त पर सैकड़ों आदमियों का गुजर हो सकता था। एक तरफ से एक नाला भी गिर रहा था जिसका साफ निर्मल जल छोटी छोटी बहुत सी क्यारियों के जरिये उस समूचे मैदान में फैल

कर जमीन को तर बनाये हुए था। बचा हुआ पानी एक गड्ढे में गिर कर न मालूम कहां गायब हो जाता था।

इस मनोहर स्थान को हमारे पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि यह वही तिलिस्मी घाटी है जिसमें प्रभाकरसिंह, दयाराम, इन्दुमती, जमना, सरस्वती दिवाकरसिंह आदि रहते थे तथा यहां आकर भूतनाथ ने जमना और सरस्वती [नकली] का खून किया था* ।

बहुत देर तक मालती इस अनूठे स्थान को गौर और ताज्जुब से देखती रही और तब वह अपने स्थान से हट कर इधर उधर घूमने फिरने और यह जानने की चेष्टा में पड़ी कि इस अद्भुत स्थान में कोई रहता भी है या नहीं, चारो तरफ की इमारतों कमरे और बंगले में घूमते हुए मालती ने घंटों बिता दिये पर उसे किसी भी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी बहुत सी जगहें तो बन्द थीं मगर जो कुछ खुली थी उसमें अच्छी तरह घूम फिर कर जब मालती ने निश्चय कर लिया कि यहां कोई भी नहीं है तब वह इस फिक्र में पड़ी कि अपने रहने और रात काटने के लिये कोई जगह निश्चय कर ले। चारो तरफ देख भाल कर एक छोटा बंगला जो सब से अलग एक कोने में कुछ ऊंचाई पर बना हुआ था अपने रहने के लिये पसंद किया और उसी में अपना डेरा जमाया क्यों कि इस जगह मालती को अपने जरूरत,

*देखो आठवां हिस्सा अन्तिम बयान

की सभी चीजें पलंग बिछावन बासन आदि सब मिल गये तथा आलमारियों में कुछ अन्न आदि भी उसने पाया जिस की सहायता से वह कुछ दिन बिना तरद्दुद और तकलीफ के काट सकती थी।

मालती को विश्वास था कि इन्द्रदेव शीघ्र ही उससे मिलने के लिये यहां आवेंगे पर जब कई दिन बीत गये और कोई उसकी खबर लेने न आया तो उसे कुछ ताज्जुब और डर भी मालूम हुआ। वह समझ गई कि इन्द्रदेव जी किसी न किसी तरद्दुद में पड़ गये हैं नहीं तो अवश्य मेरी सुध लेने आते। इस खयाल ने उसे चिन्ता में डाल दिया मगर फिर भी उसने उस स्थान के बाहर जाने का विचार न किया और वहीं कुछ समय और काटने का निश्चय किया। मालती बड़े ही कड़े कलेजे की और हिम्मतवर औरत थी क्योंकि तरह तरह की तकलीफों और मुसीबतों ने उसे मजबूत कर दिया था इसी से वह इतने बड़े स्थान में अकेली रह सकी नहीं तो इसमें कोई शक नहीं कि यदि किसी दूसरी औरत को इस प्रकार अकेले वहां रहना पड़ता तो वह जरूर डर जाती और वहां से निकल भागने की चेष्टा करती।

कई दिनों तक वहां रह कर मालती ने उस जगह की अच्छी तरह सैर भी कर ली और सब तरह घूम फिर कर उसने एक एक मकान को अच्छी तरह देख डाला मगर दो बातों का पता वह कुछ भी न लगा सकी। एक तो यहां से

बाहर निकलने का रास्ता उसे मालूम न हो सका दूसरे पूरब और उत्तर के कोने में बने हुए उस चौकोर और सुन्दर बङ्गले में वह न जा सकी जो सब से ऊंचे स्थान पर बना हुआ था और जिस पर दो और मालती की घनी लता चढ़ी हुई थी। इस बंगले के ऊपर सामने की तरफ किसी तरह की धातु के आठ बन्दर बने हुए थे जो प्रायः कभी कभी इधर उधर हिलते और तरह तरह को भाव भंगी करते थे और जिनके बारे में अच्छी तरह जांच करके वह निश्चय कर चुकी थी कि वे असली नहीं बल्कि किसी धातु के बने हुए हैं। यह जान कर उसका ताज्जुब और भी बढ़ गया था और वह इस बात को जानने की फिक्र में पड़ी हुई थी कि इन नकली जानवरों में हर-कत क्यों और कैसे आता है पर बहुत कोशिश करने पर वह उस बंगले के अन्दर न जा सकती थी जैसा कि हमने ऊपर लिखा। पर इतना वह जरूर जान गई थी कि इसमें कोई विशेषता जरूर है और वह बंगला कुछ गूढ़ भेदों का खजाना अवश्य है।

रात पहर से कुछ अधिक जा चुकी है। अभी अभी निकलने वाले चंद्रदेव की किरणें अभी पेड़ों की चोटियों पर ही विराज रही हैं। अपने मकान की छत पर बैठी हुई मालती तरह तरह की बातें सोच रही है। आज उसे इस स्थान में आये तीन हफ्ते से ऊपर हो चुके हैं। इस बीच में उससे न तो इन्द्रदेव ही से मुलाकात की है और न उसे किसी और ही

आदमी की सूरत दिखलाई पड़ी है और वह इस समय यही सोच रही है कि अब क्या करना और किस तरह इस जगह के बाहर निकलना चाहिये। वह यह सोच कर डरती भी है कि शायद इस जगह के बाहर होना उसके हक में अच्छा न हो, वह दुश्मनों के फंदे में पड़ न जाय या इन्द्रदेव ही उसके इस काम पर खफा न हों। यह सोच कर बाहर निकलने का खयाल छोड़ देती है पर जब उसे यह खयाल आता है कि शायद इन्द्रदेव ही किसी मुसीबत में न पड़ गये हों तो बाहर निकलने और उनकी मदद करने को भी बेचैन हो जाती है।

इसी तरह की उधेड़ बुन में पड़ी तरह तरह की बातें सोचती हुई वह एक दम बेचैन हो गई और तबीयत बहलने की नीयत से उठ कर छत पर इधर से उधर टहलने लग गई? इस समय चंद्रदेव कुछ ऊंचे हो चुके थे और उस स्थान के चारों तरफ की पहाड़ियों पर बने हुए बंगलों को उनकी सुफेद किरणों ने रौशन करना शुरू कर दिया था। मालती की निगाह उस पूरब तरफ वाले बंगले के ऊपर पड़ी जिसके विषय में वह बहुत दफे आश्चर्य कर चुकी थी और जिसके ऊपर वाले बंदरों की बदौलत उसका नाम उसने बंदरों वाला बंगला रख दिया था। इस समय वह बंगला उससे बहुत दूर पड़ता था दूसरे चन्द्रमा की रोशनी भी इतनी तेज न थी कि वहां की सब चीजें साफ साफ दिखाई पड़ सकें फिर भी उसने कुछ ऐसी बात देखी जिसने उसे चौंका दिया। उसने

देखा कि उन बंदरों की चाल में, जो रात को प्रायः हिलते डोलते न थे कुछ विशेषता आ गई है। सब के सब बंदर एक ही स्थान पर आ कर इकट्ठे हो गये हैं और उनकी आंखों से बहुत ही तेज चमक निकल रही है। मालती ने उन बंदरों को उछलते कूदते और हरकत करते हुए तो बहुत दफे देखा था और वह इसे मामूली बात समझने लगी थी पर इस तरह उनकी आंखों से रोशनी निकलते उसने आज तक नहीं देखा था; अस्तु यह नई बात देख उसे ताज्जुब मालूम हुआ और वह कौतूहल के साथ उस तरफ देखने लगी।

धीरे धीरे उनके आखों की रोशनी बढ़ने लगी और इतनी बढ़ी कि इतनी दूर से भी उन पर आंखें ठहराना कठिन हो गया। इसके साथ ही मालती ने देखा कि उस छत पर एक औरत कहीं से आ पहुँची है और इधर उधर घूम रही है। अब मालती का कलेजा धड़का। इस निर्जन स्थान में किसी बाहरी आदमी विशेष कर औरत के आने का उसे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता था अस्तु उसे कुछ रंग कुरंग मालूम हुआ और यह देखने की नीयत से कि यह औरत क्या करती है बंगले से सटी हुई एक दूसरी छत पर आ गई जो कुछ ज्यादा ऊंची थी तथा जिसके चारो तरफ की ऊंची कनाती दीवार में चारो तरफ इस ढब से मोखे बने हुए थे कि भीतर का आदमी सब तरफ देख सकता था परन्तु उसपर किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी यहां से छिप कर मालती उस

औरत की तरफ देखने लगी।

यह औरत कुछ देर तक तो इधर उधर घूम फिर कर कुछ देखती रही और तब उन बंदरों के पास पहुंची जो एक साथ ही इकट्ठे हो गये थे और उनके सिरों पर हाथ रख कर कुछ करने लगी। उसने क्या किया यह तो मालती इतनी दूर से देख न सकी पर यह उसने अवश्य देखा कि उन बंदरों की आंखों से निकलने वाली रोशनियें, सब इकट्ठी हो कर सामने के एक दूसरे बंगले पर पड़ने लगीं जो पहाड़ी पर से गिरते हुए नाले के ऊपर पुल की तरह बना हुआ था। यह रोशनी इतनी तेज और साफ थी कि इस बंगले की हर एक चीज जो अब तक चन्द्रमा के सामने की पहाड़ी की आड़ में होने के कारण अन्धकार में थी, अब साफ साफ दिखाई पड़ने लगी और एक एक कोना निगाहों के सामने आ गया। इतना काम कर वह औरत वहां से हटकर दूसरी तरफ चली गई और घूमती हुई निगाह की ओट हो गई।

इसी समय नहर के ऊपर वाले बंगले की तरफ से दो तीन बार बहुत जोर से धमाके की आवाज आई मानो किसी ने कोई भारी गट्ठर फेंका हो। मालती का ध्यान उधर ही चला गया और उस तेज रोशनी की सहायता से जो उन बन्दरों की आंखों से निकलती हुई सीधी उधर ही को पड़ रही थी उसने देखा कि बंगले के बीचोबीच वाले कमरे का दरवाजा खुला और दो आदमी जो एक भारी गठड़ी उठाये हुए थे निकल

कर बाहर के दालान में आये। इसी समय बगल की एक कोठड़ी में से वह औरत भी निकल कर उनके पास जा पहुँची जिसे कुछ देर पहिले सामने वाले बंगले की छत पर मालती ने देखा था। तीनों बाहर के बरामदे में आ गये और वहीं जमीन पर बैठ कुछ करने लगे।

मालती बड़े गौर के साथ देखने लगी कि वे क्या करते हैं परन्तु दूरी के कारण कुछ समझ में न आया। आखिर उसका जी न माना और वह अपनी जगह से उठ उस कमरे के नीचे उतरी। एक काली चादर से अपना बदन अच्छी तरह ढक कर पेड़ों की आड़ देती हुई वह बड़ी होशियारी के साथ उस बँगले की तरफ बढ़ी।

आधे से ज्यादा रास्ता मालती ने तय न किया होगा कि उसने उन दोनों आदमियों को उस बंगले के बाहर निकल कर पहाड़ी के नीचे उतरते और अपनी ही तरफ आते देखा। वह बड़ी गठड़ी उन दोनों के हाथों में थी और पीछे वह औरत फावड़ा कुल्हाड़ी आदि जमीन खोदने के कुछ औजार लिये आ रही थी। यह देख मालती डर कर घने पेड़ों की आड़ में हो गई और देखने लगी कि ये सब क्या करते हैं।

गठरी लिये वे दोनों आदमी सीधे उसी बन्दरों वाले बंगले की तरफ बढ़े और मालती को गुमान हुआ कि ये उसी में जायंगे पर ऐसा न हुआ और मकान की सीढ़ियों के पास पहुंच उन्होंने गठरी जमीन पर रख दी और बातें करने लगे।

पेड़ों की आड़ लेती हुई मालती भी धीरे धीरे वहीं जा पहुंची और उन लोगों से इतनी दूर जा पहुंची कि जहां से बातचीत तो स्पष्ट नहीं सुन सकती थी पर जो कुछ वे करते उसे बखूबी देख सकती थी। बंगले की सीढ़ी के दोनों तरफ संगमर्मर के कमर बराबर ऊंचे चबूतरे पर दो किसी तरह के काले पत्थर की बनी औरतों की शकलें (पुतलियां) थीं जिनके हाथों में रोशनी रखने की जगह बनी हुई थी। वे दोनों आदमी बाईं तरफ वाले चबूतरे के पास पहुंचे और उस औरत के हाथ से फरसा आदि ले उन्होंने वहां की जमीन खोदना शुरू किया। लगभग आधे घण्टे की मेहनत में वहां कमर से गहरा गड्ढा हो गया। अब खोदना बंद किया गया और एक आदमी उस गड्ढे में उतर गया। उसने क्या किया यह तो मालती देख न सकी पर थोड़ी ही देर बाद एक हलकी आवाज के साथ उस चबूतरे का एक तरफ का पत्थर हट गया और वहां एक आलमारी की तरह जगह दिखाई पड़ने लगी। उन लोगों ने वह गठड़ी उठा कर उसी चबूतरे के अन्दर डाल दी। वह पत्थर पुनः ज्यों का त्यों अपने ठिकाने आ गया और वह आदमी गड्हे के बाहर निकल आया। सभों ने मिल कर गड्हे को पाट कर बराबर कर दिया और तब वह औरत फरसा आदि ले कर एक तरफ तथा वे दोनों आदमी दूसरे तरफ चले गये। थोड़ी देर बाद मालती ने इन दोनों आदमियों को पुनः उसी नाले के ऊपर वाले बंगले में पाया और

उस औरत को बंदरों वाले बंगले की छत पर पाया। कुछ ही देर बाद उन बंदरों की आंखों से निकलने वाली चमक भी बंद हो गई और इसके बाद वह औरत तथा दोनों आदमी भी गायब हो गये।

बहुत देर तक मालती उन लोगों के लौटने की राह देखती रही पर जब उसे विश्वास हो गया कि वे चले गये तो वह अपनी छिपने वाली जगह से बाहर निकली और चारों तरफ अच्छी तरह घूम फिर कर देखने के बाद उसने निश्चय कर लिया कि वे लोग जो इस विचित्र प्रकार से इस स्थान में नजर आये थे अब वहां नहीं हैं। उसे यह जानने का बड़ा कौतूहल लगा हुआ था कि उन लोगों की उस गठड़ी में क्या सामान था जिसे वे उस चबूतरे के अन्दर छिपा गये हैं अस्तु वह कोशिश करके उस गठरी का हाल जानना चाहती थी पर साथ ही यह सोच कर डरती भी थी कि अगर उनमें से कोई आ गया तो वह बड़ी मुसीबत में पड़ेगी। अस्तु बहुत कुछ सोच विचार कर उसने रात बिता देना ही मुनासिब समझा और अपने रहने वाले बंगले में चली गई। वह रात उसने जागने और टोह लेने में ही बिता दी और सवेरा होते ही जरूरी कामों से निपट जमीन खोदने का औजार लिये वह उस स्थान पर जा पहुँची।

जिस जगह रात उन दोनों आदमियों ने खोदा था वहीं मालती ने भी खोदना शुरू किया। वहां की मिट्टी बहुत कड़ी

न थी अस्तु मालती को बहुत तकलीफ न हुई और वह सहज ही में कमर तक खोद गई, उस समय उसे मालूम हुआ कि आगे खोदना असंभव है क्योंकि नीचे से पत्थर का फर्श निकल आया। मालती ने खोदना बंद कर दिया और जमीन की मट्टी हाथ से साफ कर देखने लगी कि यहां से उस चबूतरे को खोलने की क्या तरकीब हो सकती है। यकायक उसका हाथ एक छोटे से मुट्ठे पर पड़ा जो किसी धातु का बना हुआ नीचे के फर्श में जड़ा हुआ था। उसने उस मुट्ठे को ऐंठना और घुमाना शुरू किया। घूमा तो वह नहीं मगर आगे की तरफ कुछ बढ़ता नजर आया अस्तु मालती ने जोर लगा कर उसे अपनी तरफ खैंचा। लगभग एक बालिश्त के वह खिंच आया और इसके साथ ही चबूतरे की दीवार वाला पत्थर किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया। खुशी खुशी मालती गड्हे के बाहर निकल आई और उस चबूतरे के पास पहुंच कर देखने लगी कि उसमें क्या क्या चीज है।

अन्दर एक गठड़ी निकली जिसमें कुछ कपड़े और बहुत से कागज तथा कपड़ों के हटाने पर चांदी का एक हाथ भर लंबा और एक बालिश्त चौड़ा तथा उतना ही ऊंचा डिब्बा निकला जिसके मुंह पर ताला लगा कर मुहर की हुई थी। और तलाश करने पर एक कागज का मुट्ठा जो जन्मपत्री की तरह लपेटा हुआ था निकला और तीन चार छोटी छोटी

किताबें भी दिखाई पड़ीं जो रोजनामचे की तरह पर थीं। सबसे नीचे से एक भुजाली और दो खञ्जर निकले जिन पर जंग चढ़ा हुआ था और जो बहुत ही पुराने मालूम होते थे। बस इसके इलावे उस गठड़ी में और कुछ न था।

मालती ने यह सब सामान पुनः गठड़ी में बांधा और उस चबूतरे को ज्यों का त्यों बंद कर तथा गड़हा पाट कर के वह गठड़ी उठाये अपने रहने वाले बंगले पर आ गई। यहां भी उसने ठहरना पसन्द न किया और दरवाजा बन्द करती हुई वह सीधी छत पर चली गई और तब पुनः उन चीजों की जांच पड़ताल करने लगी। उन कपड़ों तथा कागजों को उसने अलग रख दिया और वह मुट्ठा खोल कर देखने लगी। वह सिलसिलेवार कई चीठियों को जोड़ कर बनाया हुआ मालूम होता था जिन्हें मालती सरसरी निगाह से पढ़ गई। न मालूम उनमें क्या बात लिखी हुई थी जिसे पढ़ वह कुछ देर के लिये गौर में पड़ गई। इसके बाद उसने उन रोजनामचों में से एक को उठा लिया और देखने लगी। पहिला पृष्ठ देखते ही वह चौंक पड़ी और बड़े गौर के साथ उसने उसे पढ़ना शुरू किया।

एक एक कर के मालती सभी रोजनामचों को पढ़ गई। पढ़ती समय उसके चेहरे से तरह तरह के भाव प्रगट होते थे कभी आश्चर्य, कभी क्रोध, कभी घृणा, कभी दुःख, कभी प्रसन्नता, उसके चेहरे पर दिखाई पड़ती थी। कभी कभी उसके

मुंह से बेतहाशा कई शब्द निकल कर उसके दिल के भाव को भी प्रगट कर देते थे। आखिर एक एक कर के वह सभी किताबें पढ़ गई और तब सिर पर हाथ रख एक गंभीर चिन्ता में डूब गई। कई घड़ी के बाद जब उसके होश ठिकाने हुए तो उसने आपही आप कहा,"यह बड़े काम की चीज मिल गई पर मालूम नहीं वह इन्हें यहां क्यों रख गया। क्या संभव है कि......" कुछ देर के लिये वह पुनः चिन्ता में डूब गई और तब बोली,"यदि इन चीजों को इन्द्रदेव जी एक बार देख पाते तो बड़ा ही काम निकलता।" मालती के मुंह से यह बात निकली ही थी कि सीढ़ी पर से कुछ धमधमाहट की आवाज आई और यकायक इन्द्रदेव ने वहां पहुंच कर पूछा, "क्यों बेटी मुझे क्यों याद कर रही है।"

इन्द्रदेव की सूरत देखते ही मालती चीख मार कर दौड़ी और उनके पैरों पर गिर पड़ी। उसकी आंखों से बेतहाशा निकलते हुए आंसुओं ने इन्द्रदेव का पैर धोना शुरू किया। उन्होंने बड़े प्यार से उठा कर सिर सूंघा और आशीर्वाद दे कर कहा,"बेटी! तुझे देख मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई खास कर इसलिये कि मैं तुझे मरा हुआ समझता था और फिर भी जब यह सोचता था कि तेरे हाथ से एक बहुत बड़ा काम होने वाला है तो ताज्जुब भी करता था कि वह कैसे होगा, पर उस दिन तुझे जीता जागता अपने सामने पा मेरा संदेह दूर हो गया फिर भी यह देख कर कि दुश्मनों के जाल चारों

तरफ फैले हुए हैं। मैं यह निश्चय करने के लिये कि तू वास्तव में मालती ही है मैं तेरे मुंह से कोई गुप्त बात सुना चाहता हूं जिसे तेरे सिवाय और कोई न जानता हो और जिसे सुन कर मुझे विश्वास हो जाय कि तू वास्तव में मालती ही है।

मालती०। चाचा (क्योंकि वह इन्द्रदेव को चाचा ही कह कर पुकारती थी) यह विश्वास दिलाने के लिये कि मैं मालती ही हूं मैं आप को वह बात कह सकती हूं जो कई बरस हुए खास बाग वाले गुंबज पर आपने भुवन मोहनी से कही थी और जिसे सुन कर चाची''''''

इन्द्रदेव०। बस बस मुझे मालूम हो गया कि तू मालती ही है। और यह विश्वास दिलाने के लिये कि मैं वास्तव में इन्द्रदेव हूं मैं तुझे लाल बाग की समाधि का हाल बता सकता हूं। अच्छा अब तू यह बता कि ये कई दिन तूने किस तरह काटे और इस समय ये कागजात और कपड़े वगैरह कैसे हैं जिन्हें तू इतने गौर से देख रही थी कि मेरे कई बार आवाज देने पर भी तूने बंगले का दर्वाजा न खोला और लाचार होकर मुझे दूसरी राह से यहां आना पड़ा।

मालती०। (कुछ शर्मा कर) बड़े ही ताज्जुब की चीजें मुझे यकायक मिल गई हैं जो इतनी कीमती हैं कि जल्दी हाथ लगना असम्भव था। इन्हीं को मैं देख रही थी और चाहती थी कि इस समय आपके दर्शन हो जाते तो इन्हें आपको दिखाती और इनका मतलब पूछती।

यद्यपि वहां की छत मालती की बदौलत बहुत ही साफ थी फिर भी इज्जत के खयाल से मालती नीचे से एक कंबल ले आई जिस पर इन्द्रदेव बैठ गये। मालती सामने बैठ गई और बहुत ही संक्षेप में रात का हाल कह उसने उन सब चीजों को इन्द्रदेव के आगे बढ़ा दिया। सबसे पहिले इन्द्रदेव ने वह चांदी का डिब्बा उठा लिया और उसे गौर से देखते हुए कहा, "अगर मेरी याद्दाश्त मुझे धोखा नहीं दे रही है तो इस डिब्बे में एक ऐसी नायाब चीज है जिसके लिये मैं महीनों से परेशान हूं और तरह तरह की तर्कीबें कर के भी जिसके पाने में मैं असफल हुआ था।"

कुछ देर तक इन्द्रदेव गौर से उस डिब्बे को देखते रहे और तब धीरे से "बेशक वही है" कह कर उन्होंने उसे ऊंचे उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया। पटकने के साथ ही उसका ऊपरी हिस्सा दो टुकड़े हो कर दोनों तरफ को खुल गया और भीतर से एक भोजपत्र पर लिखी हुई छोटी पुस्तक जिसकी जिल्द चांदी की बनी हुई थी तथा एक सोने की चाभी दिखाई देने लगी। खुशी की एक चीख मार इन्द्रदेव ने दोनों चीजों को उठा लिया और अपनी छाती से लगा खुशी भरी आवाज में बोले, "बेटी मालती! इस चीज को पाने की मैं अपने को और तुझे मुबारकबाद देता हूं इसी पुस्तक और चाभी के बिना मैं परेशान था और सोचता था कि सिद्धों और विद्वानों की लिखी बातें क्यों कर पूरी होंगी

जिनके होने का वक्त आ ही नहीं गया बल्कि बीता जा रहा है।

मालती०। (ताज्जुब के साथ) आखिर यह अनमोल चीज है क्या ?

इन्द्र०। यह चाभी तो लोहगढ़ी के खजाने की है और यह उसके तिलिस्म का हाल बताने वाली पुस्तक है।

मालती०। (खुश हो कर) क्या इन्हीं चीजों की मदद से लोहगढ़ी का तिलिस्म टूटेगा।

इन्द्र०। हां।

मालती०। और इन्हीं की मदद से अपनी प्यारी जमना सरस्वती तथा और कई रिश्तेदारों को मैं देख सकूंगी।

इन्द्र०। हां।

मालती०। वाह वाह ! तब तो यह अनमोल चीज है जिसके लिये मैंने महीनों कोशिश की और अपनी जान जोखिम में डाली। इसका आप से आप हाथ में आ जाना सूचित करता है कि अब हम लोगों के सुदिन वापस लौटे हैं।

इन्द्र०। यद्यपि मैं यह बिलकुल नहीं जानता कि तुझे जमना सरस्वती आदि के हाल का पता क्यों कर लगा अथवा तूने इन चीजों का पता क्यों कर पाया और इनके पाने को क्या क्या कोशिश की फिर भी मैं इतना कह सकता हूँ कि ये ही चीजें उस लोहगढ़ी के तिलिस्म को खोलने और तोड़ने का जरिया है और इन्हीं के बिना मैं अपने कई प्रेमियों से बिछुड़ा हुआ था।

मालती० । मैं यह सब हाल आपसे अभी बयान करूंगी मगर इसके पहिले मैं ये कुछ कागज़ात और किताबें आपको और भी दिखाऊंगी जो इसी गठड़ी में से निकले हैं और जिन से और भी कई भेद प्रगट होते हैं ।

इतना कह मालती ने वे सब कागजात और रोजनामचे भी इन्द्रदेव के आगे बढ़ा दिये और उन्होंने गौर के साथ उन्हें देखना शुरू किया । उन्हें पढ़ते हुए इन्द्रदेव की भी वही हालत हुई जो मालती की हुई थी अर्थात् कभी क्रोध कभी दुःख कभी घृणा और कभी प्रसन्नता ने उनके चेहरे से प्रगट होकर उनके दिल का भाव जाहिर कर दिया । बहुत देर तक वे उन कागजों को देखते रहे और जब एक २ कागज को पढ़ डाला तो एक लम्बी सांस लेकर बोले "ये सब कागज जवाहिरात से भी बढ़कर मेरे लिये कीमती हैं और इससे दुष्टों को दंड देने में बड़ी सहायता मिलेगी । मैं इनका पूरा मतलब तुझे बताऊंगा जिसे शायद तूने समझा न होगा मगर इसके पहिले अब मैं यह चाहता हूं कि तू अपना सब हाल मुझे पूरा पूरा सुना जा ।

"जो आज्ञा" कह कर मालती ने अपना हाल कहने के लिये मुंह खोला ही था कि यकायक एक बड़े भारी धमाके की आवाज ने उसे चौंका दिया और वह घबड़ा कर इधर उधर देखने लगी इन्द्रदेव जी घबड़ा कर उठ खड़े हुए और तुरत ही उनकी निगाह उस बंगले पर गई जिसे हम चमेली

वाले बंगले के नाम से पुकार आये हैं। उन्होंने देखा कि वे बनावटी बंदर इस समय बड़ी बेचैनी के साथ इधर उधर उछल कूद रहे हैं और उनके पीछे की तरफ छत पर कई आदमी दिखाई पड़ रहे हैं जो इसी तरफ देखते और आपुस में कुछ सलाह कर रहे हैं। इन्द्रदेव ने मालती से कहा, "बेढब रंग कुरंग नजर आते हैं। मालूम नहीं ये आदमी कौन हैं और यहां किस तरह आ पहुंचे। मेरे लिये इसका पता लगाना बहुत ही जरूरी है और मैं चाहता हूं कि......"

इन्द्रदेव की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि न जाने किधर से एक गोला आकर उसी छत पर गिरा जिस पर ये दोनों खड़े थे। गोला गिरते ही फूट गया और उसमें से बहुत ज्यादा धूआं निकला जिसने इन्द्रदेव मालती को चारो तरफ से घेर लिया। आंख और नाक में धूआं लगते ही इन्द्रदेव समझ गये कि यह जहरीला है और बात की बात में बेहोश कर देने का असर रखता है।

सातवां बयान

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है। काले काले बादलों ने आकाश को एक दम ढंक लिया है और इस बात का पता भी नहीं लगता कि चन्द्रदेव आकाश में हैं या नहीं। रह रह कर बिजली चमकती है और उसकी तड़प कानों को बहरा कर

देती है। ठंडी हवा के झोंके बतला रहे हैं कि पास ही में कहीं पानी बरस चुका या बरस रहा है और यहाँ भी शीघ्र ही बरसा चाहता है।

इस पहाड़ी के लगभग कोस भर उत्तर जिस पर इन्द्रदेव की सुन्दर कैलाश भवन नामक इमारत है एक कम ऊंची पहाड़ियों का लंबा सिलसिला है जो दूर तक चला गया है। ऐसी रात और बदली के समय इस पहाड़ी पर चढ़ना बड़े साहस और जीवट का काम है क्योंकि जंगली जानवरों का डर चाहे न भी हो तो भी सांप बिच्छू आदि का डर किसी तरह पर कम नहीं है और चिकने काम जमे हुए और काई लगे पत्थर के ढोकों पर से पैर फिसल कर नीचे खड्ढे में जा गिरना बिल्कुल ही असम्भव नहीं है। फिर भी हम इस समय पांच आदमियों की एक छोटी मंडली को इसी पहाड़ी बीहड़ रास्ते से दक्खिन की तरफ जाते हुए देख रहे हैं। अन्धकार के कारण हाथ को हाथ नहीं दिखाई पड़ता पर फिर भी जब जब बिजली चमकती है तो हम देख सकते हैं कि इनमें से हर एक के मुंह पर नकाब पड़ी हुई है तथा बदन काले कपड़ों से अच्छी तरह ढंका हुआ है। बदन पर किस तरह के हर्बे सजे हुए हैं यह तो मालूम नहीं हो सकता पर हर एक के हाथ में एक एक लम्बा बरछा है जिससे इस बीहड़ रास्ते में चलने में कुछ मदद मिल सकती है। इनमें से एक आदमी तो आगे आगे है और बाकी के चार उसके पीछे पीछे आ रहे हैं जब

जब बिजली चमकती है वे सब रुक जाते हैं और अपने चारो तरफ की आहट ले कर पुनः आगे बढ़ते हैं।

लगभग आधे घंटे तक वे सब इसी तरह बढ़ते गये और तब बिजली की तेज चमक में उन्होंने अपने सामने की पहाड़ी पर दूर से कैलाश भवन की सुन्दर इमारत की एक झलक देखी। उस समय आगे जाने वाला आदमी रुक गया और हलकी आवाज में पीछे की तरफ देख उसने कहा, "रामू! कैलाश भवन तो आ गया! सामने वाला मैदान पार करते ही हम लोग वहां पहुँच जायंगे।"

पीछे से एक आदमी जिसे रामू के नाम से संबोधन किया गया था आगे बढ़ आया और बोला, "जी हां! अब आगे बढ़ना उचित नहीं है, वह स्थान जिसका पता दिया गया है इसी जगह कहीं होना चाहिये। मगर इस अंधेरी में उस जगह को खोजना ही कठिन है।"

वे पांचों आदमी इकट्ठे हो गये और कुछ देर तक आपस में धीरे धीरे कुछ सलाह करते रहे। इसके बाद वे सब अलग अलग हो गये और अंधेरे ही में न जाने किस चीज या जगह का खोज करते हुए पांचों पांच तरफ फैल गये। इस समय हवा बंद हो गई थी और हलकी हलकी बूंदें पानी की गिरने लग गई थीं।

अपने साथियों की तरह इस मंडली का सर्दार भी अलग हो गया और चारो तरफ घूम घूम कर किसी बात की आहट

या टोह लेने लगा। परन्तु जब पानी बरसना आरंभ हो गया और बिजली का चमकना बंद हो जाने के कारण पता लगाना असंभव हो गया तो उसने अपना काम होने की आशा छोड़ दी और किसी आड़ के जगह की तलाश करने लगा जहां रुक कर वह और उसके साथी पानी के थमने की राह देख सकें। इधर उधर घूमता और अपने बरछे से आहट लेता वह कुछ निचाई पर उतर गया और तब पत्थर के एक बड़े ढोंके की आड़ में कुछ विश्राम लेने की नीयत से खड़ा हो गया। उसे खड़े हुए कुछ ही देर बीती होगी कि उसको बाईं तरफ कुछ ही दूरी पर किसी चीज की आहट लगी। उसे किसी जंगली जानवर के होने का गुमान हुआ और इस लिहाज से उसने अपने बरछे को सम्हाल कर पकड़ा और कुछ दाहिनी तरफ हट गया पर उसी समय आवाज के ढंग से वह समझ गया कि यह दो आदमियों के बहुत धीरे धीरे बात करने की आहट है। वह यह समझते ही चौकन्ना हो गया और बड़ी होशियारी से कान लगा कर सुनने लगा। बात करने वाले दूर थे और बहुत ही धीमे स्वर में बातें कर रहे थे। दूसरे पानी की टप टप भी बाधा पहुंचा रही थी इस से साफ साफ सुनाई न पड़ा पर दो चार टूटे फूटे शब्द कान में गये—"के लिये......इन्द्रदेव......की मौत......के काबू ......मेरी जान...!.."

शब्द बिल्कुल टूटे फूटे और बेजोड़ थे पर सुनने वाले ने

उनका मतलब बखूबी समझ लिया और आहट बचाता हुआ उन लोगों की तरफ कुछ और खसक गया पर फिर कुछ आवाज न आई और अन्दाज से मालूम हुआ कि वे बातें करने वाले कहीं दूसरी जगह चले गये या पास ही की किसी गुफा में घुस गये हैं। वह आदमी जिसका नाम—जब तक कि उसका असली नाम और हाल न मालूम हो-हम घनश्याम रख देते हैं, कुछ देर तक तो रुका रहा पर फिर न जाने क्या सोच कर आगे बढ़ा और बहुत ही धीरे धीरे कदम रखता हुआ उसी तरफ चला जिधर से आहट आई थी। उस बड़े पहाड़ी ढोंके की बगल घूमते ही उसे एक गुफा के मुहाने की तरह एक काला स्थान दिखाई पड़ा और अन्दाज से उसने समझा कि हो न हो यह किसी खोह का मुंह है और इसी के अन्दर वे लोग गये हैं। वह कुछ और आगे बढ़ा और तब उसे निश्चय हो गया कि जरूर यह कोई गुफा या सुरंग है क्योंकि अन्दर से थोड़ी थोड़ी गर्म हवा आती हुई चेहरे पर मालूम होती थी और बहुत गौर करने पर कुछ आहट भी लगती थी फिर भी यह सोच कर कि शायद यह किसी दरिन्दे जानवर की गुफा हो घनश्याम की यकायक हिम्मत न पड़ी कि वह और अन्दर जाय। वह मुहाने के पास ही चुपचाप खड़ा हो गया और आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद उसे मालूम हुआ कि वह वहां अकेला नहीं है बल्कि और भी एक आदमी उस जगह मौजूद है। घनश्याम ने धीरे से चुटकी बजाई और

जवाब में तीन बार चुटकी की आवाज़ सुन कर समझ गया कि उसका साथी रामू भी पास ही में मौजूद है यह जान उसे कुछ इतमीनान सा हो गया और वह बेखटके हो कर गौर के साथ देखने लगा कि गुफा के अन्दर से कौन निकलता है या क्या आवाज़ आती है।

यकायक अंदर की तरफ कुछ रोशनी मालूम हुई और वह धीरे धीरे बढ़ने लगी जिससे मालूम हुआ कि कोई आदमी रोशनी लिये बाहर की तरफ आ रहा है। घनश्याम और रामू चौकन्ने हो गये पर फिर भी कौतूहल ने उन्हें हटने न दिया और वे देखने लगे कि किसकी सूरत दिखाई पड़ती है। अन्दर का उजाला बढ़ने लगा और कुछ ही देर बाद मालूम होने लगा कि वह गुफा जिसका मुहाना तो बहुत तंग और नीचा है पर जो अन्दर से बहुत खुलासी चौड़ी और लंबी है कुछ ही दूर जा कर दाहिनी तरफ को घूम गई है और उधर ही से रोशनी आ रही है। साथ ही यह भी दिखाई पड़ा कि मोड़ के पास ही दो आदमी दीवार के साथ चिपके खड़े हैं जिनके बदन काले कपड़े और नकाब से बिल्कुल ढंके हैं और जिनमें से एक के हाथ में एक तेज छुरी चमक रही है। रोशनी आते देख ये दोनों होशियार हो गये और रंग ढंग से घनश्याम ने समझ लिया कि अब शीघ्र ही इस गुफा में कोई भयानक घटना होने वाली है।

पल पल में रोशनी बढ़ने लगी और साथही आने वाल

हट भी सुनाई पड़ने लगी। जिस आदमी के
ो उसने अपना हाथ ऊंचा किया और साथ ही
मोड़ घूम कर सामने हुआ जिसके हाथ में रो-
वाले ने जोरसे छुरी मारनेको हाथ बढ़ाया पर
ा रुक गया और उसके मुंह से एक चीख की
पड़ी। हमारे घनश्याम और उनके साथी की
अजीब हालत हो गई क्योंकि उन्होंने देखा
लिये सामने आ खड़ा हुआ है वह कोई आदमी
ड्डियों का एक खौफनाक ढांचा है जिसके बिना
के मुंह के दांत भयानक हंसी हंस रहे थे और
हुए मानो देखने वालों की हंसी उड़ा रहे थे।
हाथ आगे बढ़ा हुआ था जिसमें एक दीदा
थ एक तलवार की मूठ पकड़े हुए था पर
थी, केवल कब्जा मात्र था। यह एक ऐसा
जिसने लोगों के रोंगटे खड़े कर दिये और
दमी जो छुरे से उस पर वार करने वाला
गया और छुरा फेंक दोनों हाथों से अपना
ा भागा। उसके साथी ने भी एक चीख
के पीछे पीछे बाहर की तरफ भागा। उसी
म हुआ मानो वह हड्डियों का ढांचा विकटरूप
भयानक और डरावनी हंसी से वह गुफा
दूर दूर तक यह आवाज फैल गई। वे भागने

वाले दम छोड़ कर भागे और उसी समय उस ढांचे के हाथ का चिराग जमीन पर गिर कर फूट गया जिससे चारों तरफ पुनः अन्धकार छा गया।

यद्यपि घनश्याम और रामू पर भी उस भयानक नर कंकाल ने कम असर न किया पर ये दोनों दिलावर और बहादुर थे अतएव इन्होंने अपने होश हवास ठिकाने रक्खे और जैसे ही वे दोनों भागनेवाले इनके पास पहुंचे दोनों ने एक एक आदमी को पकड़ लिया। उन दोनों की घबराहट और भी बढ़ गई और डर के मारे वे बदहोश हो गये पर घनश्याम और रामू ने इस बात का कुछ भी ख्याल न किया। दोनों के पास बेहोशी की दवा मौजूद थी जिसकी सहायता से उन्होंने अपने अपने कैदी को बेहोश कर दिया और तब उन दोनों को जबर्दस्ती उठा कर ले भागे। पानी जो अब तक धीरे धीरे गिर रहा था अब यकायक तेज हुआ और तुरत ही मूसलधार होकर बरसने लगा पर इन्होंने इस पर कुछ भी ख्याल न किया।

लुढ़कते, पुढ़कते, गिरते, उठते, और हांफते हुए ये दोनों आदमी उन दोनों को पीठ पर लादे पहाड़ीके नीचे उतर आये। वहां एक पेड़ के नीचे खड़े होकर घनश्याम ने जफील बजाई। तुरत ही पहाड़ी पर से उसका जवाब मिला और थोड़ी ही देर बाद घनश्याम के तीनों साथी भी वहां आ पहुंचे। सभों में जल्दी जल्दी कुछ बातें हुईं और तब आगे आगे घनश्याम

और उसके पीछे दो दो आदमी एक एक बेहोश को उठाये हुये तेजी के साथ इस मूसलधार पानी में भींगते हुए ही शिवदत्त गढ़ की तरफ रवाना हो गये।

इनके जाने के कुछ ही देर बाद एक दूसरा आदमी उस जगह पहुंचा। इसके हाथ में एक चोर लालटेन थी जिसकी रोशनी में इसने बड़े गौर से चारो तरफ देखा और तब जमीन पर पड़े हुए निशानों पर गौर करके निश्चय कर लिया कि वे लोग शिवदत्त गढ़ की तरफ गये हैं। यह जान उसने एक लंबी सांस खींची और कहा, 'मुझे थोड़ी देर हो गई जिससे काम बिगड़ गया, पर खैर कोई हर्ज नहीं, क्या भूतनाथ से कोई भाग कर बच सकता है!"

यह नया आने वाला आदमी वास्तव में भूतनाथ था जो बहुत देर तक उसी जगह घूमता हुआ न जाने क्या क्या सोचता रहा और तब मनही मन कह कर "इस समय पीछा करना फजूल है।" बरसते पानी और बीहड़ रास्ते का कुछ भी खयाल न कर कैलास भवन की तरफ रवाना हुआ।

आठवाँ बयान

सिद्ध जी बने हुए प्रभाकरसिंह ने इन्द्रदेव की स्त्री सर्यू को दुष्ट दारोगा के पंजे से छुड़ा लिया और उसी के रथ पर बैठ कर चले गये। उस समय दारोगा बहुत ही प्रसन्न था और यह सोच सोच अपनी किस्मत को सराह रहा था कि जब ईश्वर ने कृपा कर के उसके गुरु बाबा मस्तनाथ को भेज दिया है और वे उससे कल आकर उस तिलिस्म का भेद बताने को भी कह गये हैं तो अब उसकी किस्मत फिरा चाहती है और ताज्जुब नहीं कि एक सप्ताह के अन्दर ही वह लोहगढ़ी और उसके बड़े भारी खजाने का मालिक बन जाय। इस विचार ने उसे यहाँ तक प्रसन्न किया कि उसकी तकलीफ बहुत कुछ कम हो गई और वह बाबाजी को दर्वाजे तक पहुँचा कर अपने पलंग पर नहीं गया बल्कि उस कोठड़ी में चला गया जिसमें मनोरमा और नागर बैठी हुई ताज्जुब के साथ इन विचित्र सिद्ध जी और उनके अद्भुत डंडे का जिक्र कर रही थीं। दारोगा को देखते ही दोनों उठ खड़ी हुईं। मनोरमा ने उसे सहारा दे अपने बगल में गद्दी पर बैठाया और नागर ने कई तकिये ढासने और सहारे के लिये उसके चारो तरफ लगा दिये। दारोगा के लेटते ही मनोरमा ने पूछा, "ये बाबा जी कौन आये थे जिनकी आपने इतनी इज्जत की ?"

दारोगा०। ये बड़े भारी तपस्वी और प्रतापी सिद्ध पुरुष हैं। मैंने और इन्द्रदेव ने जिन ब्रह्मचारी जी से शिक्षा पाई है ये उनके गुरु भाई हैं और हम लोग उन्हें भी गुरु ही की तरह मानते और पूजते हैं। आज कितने ही बरसों बाद इन्होंने दर्शन दिये हैं। ये बड़े भारी योगी हैं, इनकी सामर्थ्य का हाल सुनोगी तो ताज्जुब करोगी।

नागर०। क्या हम लोगों ने देखा नहीं? उनके डंडे की ही ताकत देख मुझे गश आ गया।

मनो०। हां, आप पर जब उन्होंने क्रोध किया तो उनके डंडे से किस प्रकार आग निकलने लगी? इतना मोटा पर्दा छूतेही भस्म हो गया। आपने अच्छा किया जो उनका क्रोध अपने पर नहीं लिया नहीं तो न जाने आज क्या आफत आ जाती।

दारो०। ओफ! वे अपना डंडा जरा सा छुला देते तो मेरा खातमा ही हो जाता, यही देख तो मैंने सर्यू को धीरे से उनके हवाले किया।

नागर०। मगर अब इन्द्रदेव को आप क्या कह कर समझाइयेगा? वे जब सुनेंगे कि आपने उनकी स्त्री को कैद कर रक्खा था तो बड़े ही क्रोधित होंगे?

मनो०। तो उसके लिये ये क्या क्या करते! इन्द्रदेव के क्रोध को देखते या गुरु जी के क्रोध से भस्म होते!

दारो० । अरे इन्द्रदेव को मैं समझ लूंगा, वह है क्या चीज !!

नागर० । आपही तो बार बार कह चुके हैं कि दुनिया में मैं किसी से डरता हूं तो एक इन्द्रदेव से और अब कहते हैं कि वह है क्या चीज ।

दारो० । बेशक इन्द्रदेव है बड़ा बलवान पर यदि बाबा भरतनाथ हमारी मदद पर मुस्तैद हो जायं तो वह कुछ नहीं कर सकता ! अगर गुरु जी ने अपना दोनों वादा पूरा किया तो इन्द्रदेव ऐसे हजारों मेरे दलवे चाटा करेंगे !

मनोरमा० । दोनों वादे कौन ? एक तो लोहगढ़ी वाला ?

दारो० । और दूसरा गदाधरसिंह के विषय में । यह कम्बख्त भी आज कल बुरी तरह से मेरे पीछे पड़ गया है । इन्द्रदेव ने न जाने कैसा जादू कर दिया है कि वह बिल्कुल उन्हीं के कहने में आ गया है और मुझे बर्बाद कर देने की खुली धमकी देता है। अगर यह कम्बख्त किसी तरह मेरे कब्जे में आ जाय तो मैं दुनिया में अपने बराबर किसी को न समझूं ।

नागर० । मैं भी उस शैतान से बड़ा डरती हूं। उसके सामने जुबान हिलाने को भी हिम्मत नहीं पड़ती ।

दारोगा० । क्या बतावें मुझे तो बराबर यह भी शक

होता है कि उस गुप्त सभा में लूट पाट मचाने वाला और कलमदान लूट ले जाने वाला भी वही शख्श है।

मनोरमा०। (चौंक कर) हैं! क्या ऐसी बात है! यह शक आपको क्यों कर हुआ?

दारो०। अब दिल ही तो है। क्या बतावें कि कैसे हुआ! मगर मुझे दृढ़ निश्चय है कि वही उन सब आफतों की जड़ है।

मनो०। पर अगर ऐसा ही है और वही कलमदान लूट कर ले गया है तो बड़ी आफत मचावेगा। उसने उस कलमदान को खोले बिना कदापि न छोड़ा होगा और इस हालत में उस सभा का सारा भेद उसे जरूर मालूम हो गया होगा। उस समय आपका भंडा फोड़ किये बिना वह कभी न छोड़ेगा।

दारो०। बेशक यही बात है और यही सोच सोच कर तो मैं अधमुआ हुआ जा रहा हूं अगर गुरु जी की कृपा से वह बस में न हुआ तो फिर मेरा मरण ही समझना चाहिये।

नागर०। पर गुरु जी वादा तो कर गये हैं कि तीन दिन के भीतर वह आपके पैरों पर लोटता दिखाई देगा।

दारोगा०। हां बेशक कह गये हैं और आज तक उन्होंने कभी झूठ कहा ही नहीं, जो कुछ जिससे वादा किया है वह जरूर पूरा किया है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि शीघ्र ही गदाधरसिंह मेरे कब्जे में होगा।

नागर०। (मनोरमा की तरफ देखकर) इन्होंने कोशिश तो बहुत की पर वह अभी तक कब्जे में नहीं आया।

मनो०। क्या बतावें, वह कम्बख्त ऐसा धूर्त है कि जल्दी उसे किसी बात पर विश्वास ही नहीं होता। फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है, अबकी बार अगर पुनः आया तो कुछ और चकमा दूंगी।

दारो०। अजी मैं तो समझता हूं अब तुम्हें मेहनत करने और कैदी बनने की जरूरत ही न पड़ेगी, बाबा जी के कहे पर मुझे पूरा विश्वास है, वे जरूर अपना कहा पूरा करेंगे।

मनो०। फिर भी अपनी कोशिश से न चूकना चाहिये, कल मुझे पुनः उस कूंए में जाना है अस्तु मैंने जो कुछ कहा उसका आप इन्तजाम करा रक्खें। देखूंगी वह कम्बख्त क्यों नहीं मेरे जाल में फंसता।

दारो०। हां एक बार फिर कह जाओ कि तुम्हें किस किस सामान और बन्दोबस्त की जरूरत है। बाबा मस्तनाथ के आ जाने से वह जिक्र अधूरा ही रह गया।

मनोरमा ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि बाहर दर्वाजे पर से चुटकी बजाने की आवाज आई। इशारा पाकर नागर बाहर गई और कुछ ही देर में वापस आकर बोली, "लौंडी कहती है कि गदाधरसिंह आये हैं और किसी बहुत ही जरूरी काम से इसी समय मिलना चाहते हैं। नौकरों ने कहा भी कि इस समय आप मिल नहीं सकते पर वह किसी

तरह नहीं टलते। (हंस कर) आपके सिद्ध जी को मंत्र तो मालूम होता है कार कर गया।

दारो०। बेशक, अच्छा मैं बाहर कमरे में जाता हूं, लौंडी से कहो उसे बुला लावे, और तुम दोनों ऊपर के कमरे में चली जाओ।

इतना कह दारोगा उठ खड़ा हुआ। नागर और मनोरमा ने उसे सहारा दे उसके कमरे में पलंग पर पहुंचा दिया और तब उसकी आज्ञानुसार वे दोनों वहां से हट गईं। थोड़ी ही देर बाद एक लौंडी के पीछे पीछे भूतनाथ उस जगह आ पहुंचा। दारोगा ने लौंडी को चले जाने को कहा और हाथ से अपने पलंग के बगल में रक्खी हुई एक चौकी पर बैठने का इशारा करते हुए भूतनाथ से कहा, "आओजी मेरे दोस्त भूतनाथ! तुम तो ईद के चांद हो रहे हो। भला किसी तरह तुम्हें अपने इस मुसीबत जदे दोस्त की याद तो आई!!"

भूतनाथ दारोगा की बताई हुई उस चौकी पर बैठ गया और दारोगा की यह अवस्था देख नकली सहानुभूति दिखाता हुआ पूछने लगा, "यह क्या दारोगा साहब! आप तो बिल्कुल जख्मी हो रहे हैं! क्या कहीं किसी से लड़ाई हो गई क्या?"

दारो०। क्या बताऊं दोस्त! मेरी तो किस्मत ही खराब हो गई है। उस दिन तीन मंजिल ऊपर की छत पर से नीचे चौक में आ गिरा। घंटों बेहोश रहा, सेरों खून निकल गया,

बदन भर में हजारों टांके लगाये गये और अब यह हालत है जो देख रहे हो। तुम मेरे ऐसे बेमुरौव्वत दोस्त निकले कि एक बार पूछने भी नहीं आये कि तुम्हारा लंगोटिया यार मरा कि जीता है।

भूत०। क्या बताऊं, मुझे यह खबर तो जरूर लगी थी कि आपकी तबियत खराब है पर यह मुझे बिल्कुल नहीं मालूम था कि आप छत पर से गिर गये हैं। मुझसे तो किसी ने कहा कि "जमानिया के बाहर कहीं लड़ाई हो गई जिसमें आप जख्मी हुए हैं।" मैंने यह भी सुना कि आपके दुश्मन लोग आपको चुटीला कर भाग गये और आप उन्हें पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं, इसी से आज कई दिनों से मैं सोच रहा था कि आपसे मिलूं पर समय न मिलने के कारण आ न सका। मैंने यह भी सुना कि आपको कोई गहरी चोट नहीं आई इससे कुछ निश्चिन्त सा भी रहा पर आज तो मैं देखता हूं कि आपकी बहुत ही बुरी हालत है। बेशक आपके दुश्मनों ने आपसे बुरी तरह बदला लिया।

दारो०। (कुछ सहम कर) नहीं नहीं मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि ऐसी कोई बात नहीं हुई, मुझे छत पर से गिर जाने के कारण ही यह चोट आई है।

भूत०। (मुस्कुरा कर) खैर जो कुछ भी हो, अच्छा यह बतावें अब कैसी तबीयत है?

दारो०। बहुत कुछ सुधर गई है घाव भर गये हैं और

अब चलने फिरने लायक भी हो चला हूँ। वैद्य जी की दवा से ताकत भी आ रही है फिर भी अभी महीनों तक घर से बाहर निकलने की नौबत न आवेगी।

भूत०। ईश्वर को धन्यवाद है कि इतनी गहरी चोट से भी आपको उसने बचा लिया।

दारो०। मगर तुम अपना हाल तो बताओ, इतने दिन किधर रहे और क्या करते रहे। आज मुद्दतों के बाद तुम्हारी सूरत दिखाई पड़ी है।

भूत०। क्या बताऊं मैं भी बड़ी बुरी झंझट में पड़ गया था।

दारो०। झंझट! कैसी झंझट? क्या मैं उसका हाल सुन सकता हूं?

भूत०। हां क्यों नहीं आप ही तो उसके कर्ता धर्ता हैं, आप ही को सुनाने तो मैं इस समय आया ही हूँ।

दारो०। मेरे कारण आपको झंझट! यह विचित्र बात कैसी?

भूत०। मैं अभी आपको बताता हूँ मगर पहिले यह कहिये कि इस जगह से कोई छिप कर हम लोगों की बातें सुन तो नहीं सकता?

दारो०। क्यों! क्या कुछ बहुत गुप्त बात है?

भूत०। बेशक ऐसा ही है और वह बात ऐसी है कि दूसरे

के कानों तक चली जायगी तो मेरी तो नहीं पर आपके लिये बड़ी खराबी हो जायगी।

दारो०। (डर कर) आखिर बात क्या है? कुछ मालूम भी तो हो, आप तो बेतरह डरा रहे हैं।

भूत०। बात कुछ भी नहीं है—अगर है तो आपके दोस्त इन्द्रदेव की है जिनकी लड़की और स्त्री इन्दिरा और सर्यू को आपने अपने मनहूस मकान में बन्द करके दोस्ती और गुरुभाई के रिश्ते का खूब बर्ताव किया है।

दारोगा०। (कांप कर) इन्दिरा और सर्यू से मुझसे क्या मतलब?

भूत०। सिर्फ इतना ही कि आप उनकी जान लेने पर तुल गये हैं और चाहते हैं कि किसी तरह गोपालसिंह भी आपके चंगुल में फंस जायं तो आप निष्कंटक हो जांय और बेखटके जमानियां पर हुकूमत करें।

दारो०। आज तुमने कुछ भांग तो नहीं पी ली है! किस तरह की बहकी बहकी बातें कर रहे हो! भला अपने मालिक गोपालसिंह और उनके दोस्त इन्द्रदेव के मैं साथ किसी तरह की भी बुराई करने का खयाल ला सकता हूं?

भूत०। (हंस कर) ख्याल लाना तो दूर आप वैसा कर चुके हैं, कर रहे हैं, और अगर जल्दी ही आपकी कमर तोड़ न दी गई तो तब तक करते रहेंगे जब तक इनमें से कोई भी जीता जागता रहेगा।

(बिगड़ कर) बस अपनी जबान सम्हालो
क रहे हो। अगर मुझे तुम्हारी दोस्ती का
ा अभी तुम्हें अपने मकान से बाहर निकल
!

खूब! आपको दोस्ती का ख्याल! यह
जो आप की नस नस से वाकिफ न हो।
ने दामोदरसिंह के साथ अदा की, कुछ
ह का नमक अदा किया, अब कुछ इन्द्रदेव,
मेरे साथ करने का दम भर रहे हैं। आप ऐसे
द्वार जिसे मिल जांय उसके लिये इस दुनिया
की मार भी उतनी डरावनी नहीं जितनी
और नमकख्वारी, काले सांप के साथ
छुओं को छाती पर रखना उतना भयानक
ापके साथ दोस्ती करना, और आग में कूद
खतरनाक नहीं है जितना आपका साथ

ातुकी बातें सुन दारोगा घबड़ा गया और
ह देखने लगा। इस समय उसके चेहरे पर
आता था और जाता था। इतना तो वह
था कि भूतनाथ को उसके किसी गुप्त भेद
है पर वह कौन सा भेद है और कितना
ह हुआ है इसे बिलकुल ही नहीं जानता था

अनन्तर वह घबड़ाहट के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगा—

भूत०। आप मेरा मुंह क्या देख रहे हैं दारोगा साहब! जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह बहुत ठीक है और मैं इसे बहुत जल्द साबित कर दूँगा कि दामोदरसिंह की जान लेने वाले आप ही हैं, महारानी को मारने वाले आपही हैं, महाराज गिरधरसिंह की जान लेने वाले आप ही हैं, अपने दोस्त इन्द्रदेव की लड़की और स्त्री की जान पर वार करने वाले आपही हैं, गोपालसिंह को कैद करने वाले आप ही हैं और इन्द्रदेव को गिरफ्तार कराने वाले भी आप ही हैं केवल यही नहीं बल्कि उस गुप्त कमेटी के कर्ता धर्ता भी आपही हैं जिस की मदद से आप बहुत कुछ कर चुके और अभी बहुत कुछ कर गुज़रने की आशा रखते हैं। लीजिये देखिये और इन कागज़ों को पढ़िये!

इतना कह भूतनाथ ने अपने बटुए में से बहुत से कागज़ निकाल कर दारोगा के सामने फेंक दिये और गरज कर कहा, "दारोगा साहब! आपकी उस गुप्त सभा से सयूं वाला कलमदान लूट ले जाने वाला मैं ही हूं। मैं ही ने इन्दिरा को आपके इसी मकान से निकला है, मैं ही ने सयूं और इन्द्रदेव की जान बचाई और आज मैं ही आपको कैदखाने की अंधेरी कोठड़ी में भेजने के लिये यमदूत की तरह आपकी खोपड़ी पर मौजूद हुआ हूं। लीजिये, देखिये, इन कागज़ों को पढ़िये और मौत से लड़ने के लिये तैयार हो जाइये। क्योंकि आपके यहां

आंखों के सामने खड़ी कर दी और वह इस तरह उसकी सूरत देखने लगा जैसे घोर जंगल में लताओं में सींग फंस जाने से रुका हुआ बारहसिंघा अपने पीछे झपटने वाले शेर को देखता है। कुछ देर के बाद वह आप ही आप पागलों की तरह टूटे फूटे शब्दों में कहने लगा—,...सब फजूल...इन्द्रदेव की प्यारी इन्दिरा......महाराज गिरधरसिंह की मौत...... मेरे बहुत ही.........दामोदरसिंह की करतूत.........मेरी जान का ग्राहक......अब तो मैं...बुरी तरह फंसा......मगर .. ...तब क्यों नहीं .....''

इतना कहते कहते दारोगा रुक गया और कुछ सोचते हुए उसने एक तिर्छी निगाह भूतनाथ पर डाली जो इस प्रकार की निगाह दारोगा पर डाल रहा था जिस तरह कि कोई व्याधा अपने जाल में फंसी हुई हिरनी पर डालता है। दारोगा ने कई बार उसकी तरफ देखा और तब बोला, "खैर तो अब मैं जान गया कि तुम सब तरह से मुझे चौपट करने को ही तैयार हो कर आये हो?

भूत०। दारोगा साहब! आप को मैं नहीं बल्कि आप के कर्मों ने चौपट किया है और उन्हें ही आप इसके लिये सरा-हिये, मैं तो सिर्फ अपने एक दोस्त का हित करने के विचार से इस बात में पड़ गया हूं।

दारोगा०। और वह दोस्त इन्द्रदेव हैं?

भूत०। जो कोई हो।

से निकल कर मैं सीधा गोपालसिंह के पास जाऊंगा और वह कलमदान उनके आगे रख आपकी काली करतूतों का भंडा फोड़ूंगा।

भूतनाथ की ये बातें सुनते ही और उन कागज़ों पर एक निगाह डालते ही दारोग़ा की तो यह हालत हो गई कि काटो तो बदन में खून नहीं। उसे मालूम हो गया कि भूतनाथ ने उसका वह बहुत ही गुप्त भेद जिसे वह जान से ज्यादा छिपा कर रक्खे हुए था जान लिया और अब कुछ ही समय में उसे कैदखाने की कोठड़ी नसीब हुआ चाहती है। मौत की भयानक सूरत तरह तरह की डरावनी शकलों में उसकी आंखों के सामने फिरने लगी और वह यहां तक बदहवास हो गया कि उसके मुंह से आवाज़ निकलना असंभव हो गया। वह पागलों की तरह सिर्फ भूतनाथ की सूरत देखने लगा।

भूत०। आप मेरी तरफ क्या देख रहे हैं। इन कागज़ों को देखिये और अपनी आखिरी घड़ी का इन्तजार कीजिये। समझ लीजिये कि आप के पापों का घड़ा फूट गया और आप अब किसी तरह बच नहीं सकते आप विश्वास रक्खें कि गोपालसिंह अपने पिता और इन्द्रदेव अपने ससुर के खूनी की जान इस तकलीफ़ के साथ लेंगे कि खूंखार जानवरों को भी आप की हालत देख कर रहम आवेगा और आप की लाश पर कौवे और चील भी नफ़रत की निगाह डालेंगे।

भूतनाथ की बातों ने मौत की डरावनी सूरत दारोग़ा की

आंखों के सामने खड़ी कर दी और वह इस तरह उसकी सूरत देखने लगा जैसे घोर जंगल में लताओं में सींग फंस जाने से रुका हुआ बारहसिंघा अपने पीछे झपटने वाले शेर को देखता है। कुछ देर के बाद वह आप ही आप पागलों की तरह टूटे फूटे शब्दों में कहने लगा—,...सब फजूल...इन्द्रदेव की प्यारी इन्दिरा......महाराज गिरधरसिंह की मौत...... मेरे बहुत ही.........दामोदरसिंह की करतूत.........मेरी जान का ग्राहक......अब तो मैं...बुरी तरह फंसा......मगर ......तब क्यों नहीं ......"

इतना कहते कहते दारोगा रुक गया और कुछ सोचते हुए उसने एक छिपी निगाह भूतनाथ पर डाली जो इस प्रकार की निगाह दारोगा पर डाल रहा था जिस तरह कि कोई व्याधा अपने जाल में फंसी हुई हिरनी पर डालता है। दारोगा ने कई बार उसकी तरफ देखा और तब बोला, "खैर तो अब मैं जान गया कि तुम सब तरह से मुझे चौपट करने को ही तैयार हो कर आये हो?

भूत०। दारोगा साहब! आप को मैं नहीं बल्कि आप के कर्मों ने चौपट किया है और उन्हें ही आप इसके लिये सरा-हिये, मैं तो सिर्फ अपने एक दोस्त का हित करने के विचार से इस बात में पड़ गया हूं।

दारोगा०। और वह दोस्त इन्द्रदेव हैं!

भूत०। जो कोई हो।

दारो० । जो कोई क्या बेशक वही इन्द्रदेव जो मेरा गुरु भाई होने का दम भरता है और बात बात में दोस्ती जाहिर करने को मरा जाता है।

भूत० । जी वह नहीं बल्कि वह इन्द्रदेव जिसकी स्त्री और लड़की आपकी बदौलत कैदखाने से बढ़ कर मुसीबत में पड़ी हुई हैं और जिनके ससुर और न जाने कितने रिस्तेदार आपकी बदौलत मौत की तकलीफ़ उठा चुके और उठा रहे हैं।

दारोगा० । खैर तुम ऐसाही कहो, झूठ और फरेब का तो जवाब ही क्या हो सकता है।

भूत० । (गुस्से से) मैं झूठ कह रहा हूँ। क्या सामने पड़े हुए कागज़ आपको दिखाई नहीं पड़ रहे हैं या क्या आप इन्हें अपनी सच्चरित्रता का विज्ञापन समझ कर......

दारोगा भूतनाथ से बातें भी करता जा रहा था और साथ हो छिपे छिपे अपने पलंग के सिरहाने की तरफ़ हाथ बढ़ा कर कुछ करता भी जा रहा था। भूतनाथ की बात खतम नहीं हुई थी कि यकायक कमरे के बगल की किसी कोठड़ी में से एक घंटे के बजने की आवज़ आने लगी। भूतनाथ आवाज़ सुनतेही चौकन्ना हो गया और फुर्ती से अपनी जगह से उठने लगा मगर उसी समय पीछे के एक दर्वाजे में से काली पोशाक पहिने दो आदमी झपटते हुए वहां आ पहुंचे। इन दोनों का डील डौल और कद देखने ही से मालूम होता था कि ये बड़े ही मज़बूत दिलेर और बहादुर हैं और साथ ही इनकी काली

पोशाक और नकाब के अन्दर से चमकती हुई खूंखार आंखों तथा हाथ के नेजों ने इन्हें बड़ा ही डरावना बना रक्खा था। ये दोनों आते ही भेड़ियों की तरह भूतनाथ पर टूट पड़े और उसी समय दारोगा ने वह शमादान जो पलंग के सिरहाने की तरफ़ जल रहा था हाथ के धक्के से ज़मीन पर गिरा कर बुझा दिया जिससे कुल कमरे में घोर अन्धकार छा गया।

अचानक दारोगा की इस कार्रवाई और नकाबपोशों के आ टूटने से एक बार तो भूतनाथ घबड़ा गया पर तुरत ही उसने अपने होश हवास ठिकाने किये और उछल कर अपनी जगह से हट दूसरी तरफ़ चला गया। उसी समय बड़े ज़ोर से धम्माके की आवाज़ हुई जिसकी आहट से भूतनाथ को मालूम हो गया कि कमरे की ज़मीन का उतना हिस्सा जहां वह बैठा था मय चौकी के ज़मीन के अन्दर धँस गया है और उसी चौकी के गिरने का वह भयानक धम्माका है। आवाज़ बहुत ही गहरे में से आती हुई मालूम होती थी जिससे उसको यह भी गुमान हुआ कि वह चौकी शायद किसी कूंए या वैसी ही किसी जगह में जा गिरी है। उसने अपने बच जाने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया और तब तुरत ही जेब से सिटी निकाल कर बजाई। जवाब में उस कमरे के अन्दर ही से तीन बार सिटी बजने की आवाज़ आई जिसे भूतनाथ ने प्रसन्नता से सुना और समझ लिया कि उसके तीन शागिर्द उसी कमरे के अन्दर पहुँच चुके हैं। एक सायत का भी विलंब न कर के

उसने अपने बटुए से एक छोटा गेंद निकला और उसे जोर से ज़मीन पर पटका। भारी आवाज़ के साथ वह गेंद फट गया और उसमें से अपनी चमक और तेज़ी से आंखों में चका चौंध पैदा करने तथा देर तक टिकने वाली रोशनी ने पैदा हो कर कमरे भर में उजेला कर दिया।

रोशनी होते ही कमरे में एक अजीब दृश्य दिखाई पड़ा। दरोगा साहब कमरे के एक कोने में ज़मीन पर गिरे हुए थे और भूतनाथ का एक शागिर्द खंजर लिये उनकी छाती पर सवार था। उन दोनों नकाबपोशों में से, जिन्होंने भूतनाथ पर हमला किया था, एक तो बेहोश पड़ा हुआ था और दूसरे को दो शागिर्द ज़मीन पर दबाये कमंद से हाथ पांव कस रहे थे। अपने शागिर्दों की यह तेज़ी और फुर्ती देख भूतनाथ बड़ा ही खुश हुआ और जोर से बोल उठा, "शाबाश!" उसी समय उसके दो साथी और कमरे में आ पहुँचे जिनकी मदद से वह दूसरा नकाबपोश भी तुरत बेकाम कर दिया गया। उस समय भूतनाथ दारोगा के पास गया और उससे बोला, बाबा जी! आपने कारीगरी तो बहुत की थी पर काम कुछ न हुआ। अब आप को मालूम हो गया होगा कि भूत-नाथ दुश्मन के घर में अकेला या बेपरवाह होकर नहीं आता कहिये अब आपके साथ क्या किया जाय?

दारोगा के मुँह से डर के मारे कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी। वह अपने मौत को बड़ी नज़दीक जानकर आँखें बन्द

किये हुए मानों अपनी आखिरी सांसें गिन रहा था। डर के मारे उसका बदन इस तरह कांप रहा था जैसे जूड़ी बुखार चढ़ आया हो। उसकी शकल ही से मालूम होता था कि वह अपनी ज़िन्दगी से बिल्कुल ना उम्मीद हो चुका है। भूतनाथ ने पुनः पूछा क्यों दरोगा साहब बोलते क्यों नहीं। कहिये अब आपके साथ क्या सलूक किया जाय ! और आपके इन मददगारों की क्या गति बनाई जाय ! (हँस कर) क्यों न आपको इसी हालत में राजा गोपालसिंह के पास में उठा ले चलूं !

यह बात सुनतेही दरोगा कांप उठा और आँखें खोलकर बड़ी ही करुणा की दृष्टि से भूतनाथ की तरफ देखने लगा। भूतनाथ ने अपने शागिर्द को उसके ऊपर से हट जाने का इशारा किया और आप उसके सामने आ खड़ा हुआ क्यों कि दरोगा के ढंग से मालूम होता था कि वह कुछ कहना चाहता है पर डर के मारे उसके मुंह से आवाज़ नहीं निकल रही है।

इतने ही में बाहर दर्वाज़े की तरफ रोशनी दिखाई दी और शोर गुल की आवाज़ आई। इस कमरे में जो कुछ कांड मच गया था उसकी खबर मनोरमा और नागर को लग गई थी और घर के नौकरों को भी इस लड़ाई झगड़े और दंगे का पता लग गया था, अस्तु कई आदमी दर्वाज़े पर आकर कमरे के अन्दर की विचित्र अवस्था और अपने मालिक का अद्भुत

हाल देख रहे थे। उन्हें वहां मौजूद पा दारोगा ने जबरन अपने होश हवास ठिकाने किये और धीमी आवाज़ में भूतनाथ से कहा, "भूतनाथ! जो कुछ मैंने किया उसके लिये मैं माफी मांगता हूँ और अब तुम्हारे गुलामों की तरह तुमसे कहता हूँ कि इन अपने नौकरों के सामने अब मुझको और जलील न करो तुम जो कुछ कहो मैं करने को तैयार हूँ मगर इस समय मेरी इज्जत रख लो।"

भूतनाथ दारोगा का मतलब समझ गया। वह खुद भी नहीं चाहता था कि इतने आदमियों के सामने कुछ कहे या करे। सब कुछ होने पर भी वह यह अच्छी तरह समझता था कि दारोगा के सैकड़ों नौकरों और सिपाहियों से भरे हुए इस खतरनाक और विचित्र मकान में वह खतरे से खाली नहीं है अस्तु कुछ सोच विचार कर उसने धीरे से दारोगा से कहा "मैं खुद नहीं चाहता था कि आपको किसी तरह पर बेइज्जत करता या तकलीफ़ पहुंचाता मगर खुद आप ही ने अपनी करनी से यह सब सामान पैदा कर लिया। खैर, अब आप उठिये, अपने इन आदमियों को बिदा करिये और होश में आकर मुझसे बातें कीजिये।"

हाथ का सहारा देकर भूतनाथ ने दारोगा को उठाया और मदद दे कर पलंग पर ला बैठाया। दारोगा ने आंख से कुछ इशारा किया और तब भूतनाथ से कहा, "मेरे दोस्त! तुम्हारी मैं किस तरह तारीफ़ करूं तुमसे इस समय मेरी जान

बचा ली है! (नौकरों और आदमियों की तरफ़ देख कर) मेरे दोस्त भूतनाथ और उनके आदमियों ने अभी मेरी जान (दोनों नकाबपोशों की तरफ दिखाकर) इन हरामजादों से बचाई है। यहां का शोर गुल इन्हीं कमबख्तों के कारण था। (भूतनाथ से) दोस्त! अब तुम अपने आदमियों को हुक्म दो कि इन कम्बख्तों को इसी गड़हे में फेंक दें, तब हम लोग दूसरी जगह चल कर बातें करेंगे।"

जिस जगह चौकी पर भूतनाथ बैठा हुआ था वहां एक भयानक अंधेरा गढ़ा अभी तक दिखाई पड़ रहा था। भूतनाथ का इशारा पा उसके शागिर्दों ने दोनों स्याहपोशों को बारी बारी से उसी गढ़े में फेंक दिया जिसमें से उनके चिल्लाने की आवाज़ आने लगी। दारोगा के पलंग के दीवार के साथ एक आलमारी थी जिसमें चांदी के दो मोटे मुट्ठे लगे हुए थे। दारोगा ने पीछे झुक कर मुट्ठे को जोर से घुमा दिया, साथ ही कमरे की सतह का वह हिस्सा जहां पर भूतनाथ बैठा हुआ था पुनः ज्यों का त्यों अपनी जगह पर आ कर इस तरह बैठ गया कि बहुत गौर करने पर भी यह न मालूम होता था कि यहां कोई ऐसा भेद है।

दारोगा ने भूतनाथ से कहा, "आओ हमलोग एकान्त में चल कर बातें करें और उसके सिर हिला कर मंजूर करने पर वह पलंग से उस दूसरे कमरे की तरफ बढ़ा और नौकरों को हुक्म देता गया, "इस कमरे को साफ़ करदो।"

भूतनाथ के शागिर्द भी भूतनाथ का इशारा पा इधर उधर हो गये अर्थात् जिस तरह पहिले वे कहीं छिपे हुए थे वैसे ही पुनः उस शैतान के आंत की तरह के मकान में कहीं गायब हो गये। दरोगा भूतनाथ को लिये एक बिल्कुल ही एकान्त निराली जगह में ले गया और वहाँ कमरे का दर्वाज़ा बन्द कर दोनों बातें करने लगे।

नौवां बयान

जिस समय किसी का फेंका हुआ एक गोला आकर उस छत पर गिर कर फूटा और उसमें से बहुत सा धूँआ निकल कर चारो तरफ फैल गया उसी समय इन्द्रदेव समझ गये कि यह धूँआ जहरीला और बहुत बुरा असर पैदा करने वाला है। इसके पहिले कि उस धूएँ का असर होने पावे उन्होंने वहाँ से हट जाने का इरादा किया और मालती को अपने पीछे आने को कहते हुए वे फुर्ती के साथ नीचे उतर गये। नीचे की मंजिल में पहुँच कर बल्कि कई कोठरियों में घूम कर वे उस तरफ से निश्चिन्त हुए फिर भी वह कडुआ धूँआ जो कुछ उनकी आँखों में लगा था या सांस की राह गया था उसी ने उन्हें चक्कर दिला दिया और कुछ देर के लिये उनकी यह हालत हो गई कि सिवाय सिर पकड़ कर बैठ जाने के और कुछ नहीं कर सकते थे। कुछ देर बाद जब उनके होश हवास कुछ ठिकाने हुए तो उन्होंने अपने जेब से निकाल

कर कोई चीज़ सूंघी जिसने धूंए के ज़हरीले असर को एक दम दूर कर दिया और अब वे इस लायक हुए कि कुछ कर सकें।

सब से पहिला तरद्दुद उन्हें मालती के विषय में हुआ जिसे उन्होंने अपने पास कहीं न पाया। जिस धूंए ने उनके मज़बूत दिल व दिमाग़ पर इतना असर किया उसने उस कमज़ोर औरत पर कहीं ज़्यादा असर किया होगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि उसे छत से उतरने का भी मौका न दिया हो यह सोच इन्द्रदेव तुरत लौट पड़े और उन्हीं कोठड़ियों में से घूमते फिरते पुनः छत पर जाने की सीढ़ी के पास पहुँचे। वहां ज़मीन पर उन्हें बेहोश मालती दिखलाई पड़ी और तब उनके जी में जी आया। उन्होंने उसे उठा लिया और बगल की एक कोठरी में ले जाकर उसे होश में लाने का उद्योग करने लगे। जिस चीज़ के सूंघने से उन्हें फायदा पहुंचा था उसी को कुछ देर तक मालती को सुंघाने तथा उसकी आंखों पर मलने से कुछ देर बाद मालती की हालत सुधरती नज़र आई उसके बदन में एक हलकी कंपकंपी आ गई और सांस कुछ ज़ोर से आने जाने लगी। उसकी आंखें भी एक बार खुल कर पुनः बन्द हो गई मगर इससे इन्द्रदेव को विश्वास हो गया कि अब कोई ख़तरा नहीं है और वह शीघ्र ही होश में आ जायगी।

इसी समय सीढ़ी पर से धमधमाहट की आवाज़ आई जिससे मालूम हुआ कि कई आदमी छत से उतर रहे हैं।

आहट मिलते ही इन्द्रदेव चौंके और उन्हें उन दुश्मनों का खयाल आगया। उन्होंने फुर्ती से कुछ सोचा और नवमालती को पुनः गोद में उठा कर वे एक दूसरे स्थान में जा पहुँचे। वह एक छोटी कोठरी थी जिसमें चारों तरफ की दीवारों में हर तरफ एक दर्वाज़ा और उसके बगल में दोनों तरफ दो आलमारियां बनी हुई थीं। इन्द्रदेव ने पूरब तरफ वाले दर्वाज़े के बाईं तरफ वाली आलमारी का पल्ला किसी ढब से खोला। अन्दर से आलमारी बहुत ही चौड़ी थी और उसमें कोई दर्जे या हिस्से बने हुए न थे जिससे वह इस लायक थी कि उसमें तीन चार आदमी बखूबी खड़े हो सकते थे। इन्द्रदेव ने बेहोश मालती को इसी आलमारी में रख पल्ला बंद कर दिया और कोई ऐसी तर्कीब कर दी कि जिसमें सिवाय उनके और कोई उसे खोल ही न सके। यद्यपि यह सब काम उन्होंने बड़ी फुर्ती से किया फिर भी वे आने वाले वहाँ तक आ ही पहुंचे। बगल की कोठरी में उनके आने की आहट आ चुकी थी जब इन्द्रदेव मालती की तरफ से निश्चिन्त हुए और जैसे ही वे बगल के दर्वाज़े से दूसरी कोठड़ी में घुसे तैसे ही कई आदमियों ने उस कोठड़ी में पैर रक्खा।

ये आने वाले पांच या छः आदमी थे और सभों ही के चेहरे नकाब से ढंके हुए थे। आगे आगे एक लंबा आदमी था जो सभों का सर्दार मालूम होता था। इसने आते ही कोठड़ी में चारों तरफ देखा और कहा, "यहां तो कोई नहीं है!"

मालूम होता है वे दोनों कहीं दूसरी तरफ़ निकल गये। तुममें से एक एक आदमी इन चारों दर्वाज़ों के अन्दर जाकर तलाश करो और जिन जिन कोठरियों को देख चुको उनकी ज़ंज़ीर बाहर से बंद करते जाओ।

हुक्म के मुताबिक चार आदमी चारों तरफ के दर्वाज़ों में चले गये और वह सर्दार तथा केवल एक आदमी और उस कोठरी में रह गये जिनमें धीरे धीरे बातें होने लगीं।

सर्दार०। न मालूम वे दोनों किधर निकल गये।

साथी०। यह तिलिस्मी इमारत है, इसमें सैकड़ों ही गुप्त रास्ते और स्थान हैं जिनसे किसी का निकल जाना या छिप रहना कोई भी ताज्जुब नहीं है।

सर्दार०। मुझे ताज्जुब तो यही है कि उस गोले के तेज़ असर से ये दोनों बचे किस तरह। उसके धूएं का एक बार सांस के साथ जाना ही काफ़ी था और मजबूत से मज़बूत आदमी भी उसके असर से बच नहीं सकता था।

साथी०। बेशक यही ताज्जुब तो मुझे भी है।

सर्दार०। अगर वे दोनों पकड़े नहीं गये तो उन चीज़ों का पता बिल्कुल लग न सकेगा जिसके पाने की आशा में हम-लोग यहाँ आये और इतनी तकलीफ़ उठा तथा.........

इसी समय बगल की कोठड़ी से किसी आदमी के ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ उनके कान में पड़ी जिसे सुनतेही वे दोनों चौंके और यह कहते हुए कि महावीर की आवाज़ है,

मालूम होता है उसपर कुछ आफत आई है।" उसी तरफ लपके मगर जब वे उस कोठड़ी में पहुँचे तो कहीं किसी की सूरत दिखाई न पड़ी। ताज्जुब करते हुए वे अपने चारो तरफ देखने लगे क्योंकि उस कोठड़ी में सिवाय उस रास्ते से जिससे कि वे अभी अभी यहाँ आये थे और कोई रास्ता नहीं दिखलाई पड़ता था और ऐसी अवस्था में उस आदमी का गायब हो जाना जो यहां आया था अथवा जिसके चीखने की आवाज़ अभी अभी उनके कानों में गई थी, बड़े ताज्जुब की बात थी।

फ़िक्र और तरद्दुद के साथ दोनों अपने चारों तरफ़ देख ही रहे थे कि यकायक बड़े ज़ोर से उस कोठड़ी का दर्वाज़ा बन्द हो गया और वे दोनों घने अन्धकार में पड़ गये क्योंकि सिवाय उस दर्वाज़े के इस कोठड़ी में कहीं से चाँदनी या हवा आने का भी कोई रास्ता न था। अपने को यकायक इस मुसीबत में पा के दोनों घबरा गये और दर्वाज़ा खोलने का उद्योग करने लगे पर उन्हें शीघ्र ही पता लग गया कि यह मज़बूत दर्वाज़ा उनके किसी उद्योग से भी शीघ्र खुलने वाला नहीं।

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि यह कार्रवाई इन्द्रदेव की थी जिनके लिये इस तिलिस्मी मकान में दस पाँच आदमियों को पकड़ लेना या बन्द कर देना कोई भी मुश्किल बात न थी। जो हालत इन दोनों आदमियों की हुई थी वही

बाकी के चारो आदमियों की भी हुई और कुछ ही देर घूमने फिरने के बाद उन चारो ने अपने को एक ऐसी कोठरी में पाया जिसमें केवल एक ही दरवाज़ा था जो उनके अन्दर पहुंचने ही इस तरह से बंद हो गया कि उसका निशान तक बाकी न रह गया अर्थात् यह भी मालूम न होता था कि वह दर्वाज़ा कहां है, जिसकी राह थोड़ी ही देर पहिले उन्होंने इस कोठड़ी में पैर रक्खा है।

इन सब शैतानों को इस प्रकार बंद कर के भी इन्द्रदेव निश्चिन्त न हुए क्योंकि उन्हें सन्देह था कि शायद अभी कुछ आदमी और बचे हों जो मौका पाकर उन्हें या मालती को तंग करें अस्तु वे होशियारी के साथ चारो तरफ देखते हुए पुनः उस बंगले की छत पर चले गये और वहां पहुँचते ही एक अद्भुत और विचित्र तमाशा देखा।

छत पर चारो तरफ सन्नाटा था मगर पूरब तरफ से कुछ शोर गुल की आहट मिल रही थी अस्तु इन्द्रदेव की निगाह उधर ही को घूम गई और उस बंगले पर जा पहुँची जिसे हम अब तक बन्दरों वाले बंगले के नाम से पुकारते चले आये हैं। पाठकों को मालूम होगा कि उसकी छत पर किसी धातु के बने हुए कई बंदर थे जो कभी कभी विचित्र प्रकार की हरकतें किया करते थे। इस समय इन्द्रदेव ने देखा कि वे बंदर उस बंगले के बीचोबीच की एक ऊंची छत पर जाकर इकट्ठे हुए हैं और उस पर खड़ी एक औरत के चारो तरफ विचित्र प्रकार से

उछल कूद कर रहे हैं थोड़ा ही गौर करने से इन्हें मालूम हो गया कि वे बंदर कवायद कर रहे हैं और उन्हीं में से एक सरदारी के तौर पर उस औरत के सामने खड़ा होकर उससे कवायद करा रहा है। यद्यपि आज से पहिले भी सैकड़ों बार इन्द्रदेव उन बंदरों का विचित्र तमाशा देख चुके थे पर आज की इस कवायद में कुछ ऐसी विचित्रता थी और उन बंदरों की उछल कूद कुछ ऐसी हंसी पैदा करने वाली थी कि इन्द्रदेव अपने को रोक न सके और खिल खिला कर हंस पड़े।

परंतु तुरत ही इन्द्रदेव ने अपने को सम्हाला और तब उन्हें यह जानने की फिक्र हुई कि वह औरत कौन है जो उन बंदरों के बीच में बेखटके खड़ी ही हुई नहीं है बल्कि ताली बजा बजा कर हँसती हुई उनकी विचित्र उछल कूद को देख रही है। वह बंगला यहां से बहुत ज्यादा दूर तो न था पर इतना नज़दीक भी न था कि उसकी छत पर खड़े किसी नये आदमी की सूरत शक्ल देख कर उसे पहिचाना जा सके अस्तु कुछ देर तक गौर के साथ देखने पर भी इन्द्रदेव यह न जान सके कि वह कौन औरत है। अस्तु कुछ सोचते हुए छत के नीचे उतर कर किसी कोठरी में घुस गये। थोड़ी देर बाद जब वे लौटे तो उनके हाथ में एक मोटा गोला शीशा था जिसे आंखों के सामने रखने से दूर दूर तक की चीजें साफ साफ दिखाई पड़ने लगती थीं। शीशे की मदद से उस औरत को बखूबी देख और पहिचान सकेंगे ऐसा इन्द्रदेव का विश्वास था पर

अकस्मात् जब उन्होंने उन बन्दरों वाले बंगले की तरफ निगाह की तो न तो उस औरत को ही वहां पाया और न इन बंदरों ही की करामात देखी। सब के सब अपनी जगह पर पुनः पत्थर की मूरत की तरह बने बैठे थे और औरत का कहीं पता न था। न जाने इन कुछ ही सायतों के बीच में वह कहाँ या किधर चली गई।

बड़ी देर तक इन्द्रदेव उस शीशे की मदद से दूर दूर तक चारो तरफ उस घाटी और उसमें की इमारतों पर निगाह डालते रहे पर न तो वह औरत ही कहीं दिखाई पड़ी और न किसी दूसरे आदमी पर ही निगाह पड़ी। लाचार वे वहां से हटे और बहुत सी बातें सोचते हुए छत के नीचे उतर कर उस कमरे में पहुंचे जहां वे मालती को आलमारी के अन्दर बंद कर गये थे। उस कमरे में घुसते ही यह देख कर उनका कलेजा धड़क उठा कि उस आलमारी के दोनों पल्ले खुले हुए हैं और मालती का कहीं पता नहीं है। वे झपट कर उस जगह पहुंचे, आलमारी बिल्कुल खाली थी। हां, उसके नीचे ज़मीन पर एक कागज़ का टुकड़ा पड़ा हुआ अवश्य दिखाई दिया, जिसे इन्द्रदेव ने उठा लिया और पढ़ा। मोटे मोटे हरफों में लाल स्याही से यह लिखा हुआ था।

"आखिर कंबख्त मालती मेरे हाथ लगी! मुझसे बच कर वह जाही कहाँ सकती थी। इन्द्रदेव! तुम अपनी तिलिस्मी ताकत पर भूले हुए हो पर समझ रक्खो कि तुम्हारा "गुरु

घंटाल" आ पहुंचा बस पहिचान जाओ और अपने को बचाओ। इस समय तो मैं केवल मालती और लोहगढ़ी की ताली लिये जाता हूँ पर मेरा दूसरा वार तुम्हीं पर होगा।

वही—तिलस्मी शैतान

यह विचित्र पत्र पढ़ कर और ख़ास कर यह देखकर कि वह गठड़ी जिसमें लोहगढ़ी की ताली तथा और सब सामान जो मालती को मिला था इसमें नहीं है, इन्द्रदेव ताज्जुब में पड़ गये और बहुत देर के लिये न जाने किस गौर में डूब गये। न जाने यह तिलस्मी शैतान क्या बला थी जिसने उन्हें इतने फ़िक्र में डाल दिया कि तनोबदन की सुध भुला दी। न जाने कब तक वे इसी तरह सोच में डूबे रहते मगर एक खटके की आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया और घूम कर देखने से उन्हें मालूम हुआ कि उस कोठड़ी का दर्वाज़ा जिसमें कुछ ही पहिले वे उन बदमाशों के सर्दार और उसके साथी को बंद कर चुके थे, खुल गया। इन्द्रदेव को गुमान हुआ कि शायद उसमें से कोई दुश्मन आकर हमला करे और उन्हें नुकसान पहुंचावे पर ऐसा न हुआ वह कोठरी बिल्कुल खाली थी यहां तक कि वे दोनों आदमी भी नहीं दिखाई पड़ रहे थे जिन्हें कुछ ही देर पहिले उन्होंने उसमें बंद किया था।

बहुत कोशिश करके इन्द्रदेव ने अपने ख्यालों को अपने से दूर किया और यह कहते हुए वहां से हटे, "भला वे शैतान!

चाहे तू कोई भी क्यों न हो पर मैं तुझसे टक्कर जरूर लूंगा !! दो ही चार कोठड़ियों में घूमने के बाद उन्हें मालूम हो गया कि वह तिलस्मी शैतान उन सब आदमियों को छुड़ा ले गया, जिन्हें कुछ पहिले उन्होंने बंद किया था अस्तु, फिर विशेष जांच करने की ज़रूरत न समझ इन्द्रदेव उस बंगले के बाहर निकल आये और चारों तरफ गौर से देखते हुए उसी बंदरों वाले बंगले की तरफ बढ़े। रास्ते में कहीं किसी आदमी की सूरत उन्हें दिखाई न पड़ी और वे बेखटके उस जगह पहुँच गये। पतली पतली खूबसूरत सीढ़ियों के ज़रिये चढ़ कर बंगले के सदर दर्वाजे के पास पहुँचे और किसी तर्कीब से उसे खोल ऊपर चले गये। अन्दर जाकर वह दर्वाज़ा उन्होंने पुनः बंद कर लिया।

यह एक मामूली मगर बड़ा कमरा था जिसमें बैठने के लिये बहुत से कोच और कुर्सियां रक्खी हुई थीं। किसी तरह की विशेष सजावट इसमें न थी और यह बिल्कुल सादे ढंग का था। इसमें तीनों तरफ कई दर्वाजे थे जिनमें से बाईं तरफ का दर्वाज़ा खुला हुआ था। इन्द्रदेव इसी दर्वाज़े के अन्दर घुस गये और तरह तरह के विचित्र सामानों से सजे हुए एक दूसरे कमरे में पहुंचे।

पाठक इस कमरे का हाल विशेष रूप से लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप एक बार पहिले भी भूतनाथ के साथ इसमें आ चुके हैं, जब वह मेघराज का पीछा करता

हुआ प्रभाकर सिंह की सूरत बना इस घाटी में आया था। इसी कमरे में नकली जमुना से उसकी मुलाकात हुई थी और यहीं पहुँच कर वह बेतरह आफ़त में पड़ गया था * अस्तु इस जगह के सब सामानों का हाल आपको बखूबी मालूम है। जिससे इसके दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इन्द्रदेव के इस कमरे में घुसने के साथ ही सामने के कोने में खड़ी एक शीशे की पुतली बड़ी तेज़ी के साथ चक्कर खाने लगी। इन्द्रदेव ने यह देख दर्वाज़े के बगल में बने एक आले में हाथ डाल कोई खटका दबा दिया जिससे उस पुतली का घूमना बंद हो गया और साथ ही सामने की दीवार में एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा। इन्द्रदेव उस दर्वाज़े के राह वाली कोठड़ी में चल गये और अपने पीछे के दर्वाज़े को किसी तर्कीब से बंद करते गये। बाद वाली कोठड़ी में भी इन्द्रदेव न ठहरे बल्कि एक गुप्त दर्वाज़े की राह बगल की एक दूसरी कोठरी से होते हुए सीढ़ियां पार कर नीचे के एक कमरे में पहुँचे। जो बहुत ही बड़ा था और जिसका बीच का हाल तरह तरह के कल पुरज़ों तथा विचित्र सामानों से भरा हुआ था। चारो तरफ़ बने कई रौशनदानों से काफी हवा और रोशनी आ रही थी जिससे यहां की हर एक चीज साफ़ साफ़ दिखाई पड़ रही थी।

इन्द्रदेव ने कमरे में पहुँचते ही बीच के कल पुरज़ों में से

* भूतनाथ दूसरा खंड अंतिम बयान।

एक को छेड़ दिया जिसके साथ ही कुछ पुरजे तथा पहिये तेज़ी के साथ घूमने लग गये और एक तरह की आवाज़, जो वास्तव में उन पुरजों के घूमने ही से पैदा हुई थी, उस कमरे में गूंज उठी। इन्द्रदेव ने पुनः किसी दूसरे पुर्जे को हिलाया, और भी कई कल पुर्जे घूमने लगे और आवाज़ की तेजी बढ़ गई। इसी तरह धीरे धीरे इन्द्रदेव की करतूत से उस बड़े कमरे में जितने कल पुरजे थे सभी चलने लग गये और आवाज इतनी ज़ोर से होने लगी कि कान के पर्दे फटने लगे। इतना कर इन्द्रदेव अलग हो गये और कुछ खुशी भरी आवाज़ के साथ बोले, "अब कोई माई का लाल ऐसा नहीं है जो घाटी के किसी भी दरवाज़े को खोल सके, भीतर से बाहर जा सके या बाहर से भीतर ही आ सके। मगर इस काम का नतीजा तभी निकलेगा अगर वह कंबख्त शैतान और उसकी मंडली अभी तक इस घाटी में हो, अगर वे सब निकल गये होंगे तो मेरी कोशिश बिल्कुल फजूल होगी। खैर अब यह जानना चाहिये कि इस घाटी में कहां कहां पर कौन कौन हैं और यह बात 'इन्द्रमंडल' में गये बिना मालूम न होगी।

इन्द्रदेव उस जगह से हटे और पूरब तरफ की दीवार के पास पहुँचे जिसमें तीन बड़े दर्वाज़े बने हुए थे। इनमें से बीच वाले दर्वाज़े को उन्होंने किसी तर्कीब से खोलना चाहा पर कई बार कोशिश करने पर भी वह न खुला जिससे वे बड़े तरद्दुद में पड़ गये पर फिर तुरंत ही इसका कारण उनकी समझ

में आ गया और वे हँस कर बोले "ओहो मैंने स्वयम् ही तो सब दर्वाजों का खुलना रोक दिया है। वे खुल ही क्यों कर सकते हैं। अब इसे खोलने के लिये दूसरी ही तर्कीब करनी होगी।"

इन्द्रदेव ने अपने गले के साथ तावीज की तरह लटकती हुई एक ताली निकाली जो एक ही हीरे में काट कर बनाई गई थी यह कीमती ताली ख़ास ज़मानिया तिलिस्म के दारोगा के लिये ही बनाई गई थी और इसमें यह कुदरत थी कि तिलिस्म के किसी हिस्से के किसी भी ताले को जब चाहे खोल सकती थी। इन्द्रदेव को दारोगा होने के कारण बतौर धरोहर के यह ताली मिली थी और इसे उन्हें हमेशा अपने गले में पहिने रहना पड़ता था। पर साथ ही यह बात भी थी कि इसका इस्तेमाल केवल कुछ बहुत ही ख़ास ख़ास समय को छोड़ कर और किसी समय करने की सख़्त मुमानियत थी और इसकी मदद से तिलिस्म से किसी कैदी को लेने या उसके किसी कैदी को निकाल देने की भी इजाज़त न थी। इस समय इन्द्रदेव ने इसी ताली से काम लिया और उसकी मदद से दर्वाज़ा खोल डाला पर कमरे के अन्दर घुसते ही उन्हें एक ऐसी भयानक चीज़ दिखलाई पड़ी कि उन्हें रोमांच हो गया और आपसे आप उनके मुंह से एक चीख़ निकल गई।

वह भयानक चीज़ क्या थी? वह एक कटा हुआ सिर था जो इस कमरे के बीचोबीच में एक संगमर्मर की चौकी

पर रक्खा हुआ था। लहू से तमाम चौकी और उसके नीचे की ज़मीन तर हो रही थी और सिर के लांबे तथा लहू से सने हुए बालों ने चेहरे पर पड़कर उसे और भी भयंकर बना रक्खा था।

दसवां बयान

आज शुक्ल पक्ष की एकादशी है। रात आधी के करीब बीत चुकी है और चन्द्रदेव ने अपनी शीतल किरणों से जंगल, मैदान और पहाड़ों में एक अजीब सुहावना दृश्य पैदा कर रक्खा है जिसे घंटों तक देखने पर भी मन नहीं भर सकता।

अजायबघर के पास वाले जंगल के उस विचित्र कूंए पर जिसमें पिछली एकादशी में भूतनाथ ने श्यामा के पीछे कूद कर एक विचित्र तमाशा देखा था * आज एक नया दृश्य दिखाई पड़ रहा है। जगत से कुछ दूर हट कर एक पेड़ की आड़ में कई आदमी खड़े हैं जो बार-बार उस कूंए की तरफ देखते और कुछ बातें करते जाते हैं। रंगढंग और आकृति से उनका लक्ष्य वह औरत मालूम होती है जो अभी अभी उस कूंए के बाहर हुई है और जगत पर पैर लटका कर उदास भाव से बैठी गाल पर हाथ रक्खे कुछ सोच रही है।

पाठक इस औरत को पहिचानते है क्योंकि यह वही श्यामा है जिससे उस दिन भूतनाथ से भेंट हुई थी और जिसके पीछे पीछे भूतनाथ ने अपने को उस कूंए में डाल दिया था।

यह तो हम नहीं कह सकते कि वह औरत क्या सोच रही थी पर यकायक एक घोड़े के टापों की आवाज़ ने उसे चैतन्य जरूर कर दिया और उसने गरदन उठाकर सामने की

* तीसरा खंड अंतिम बयान देखो।

तरफ देखा जिधर से किसी सवार के आने की आहट मिल रही थी थोड़ी ही देर में वह सवार भी वहां आ पहुँचा और घोड़े से कूद लगाम एक डाल से अटकाने के बाद कूंए के ऊपर पहुंचा।

श्यामा उस समय न जाने किस तकलीफ के कारण आंखें बंद किये हुए धीरे धीरे उसासें और आहें ले रही थी। किसी के कूंए पर आने की आहट पाकर उसने आंखें खोलीं और भूतनाथ को अपने सामने खड़ा देख एक हलकी चीख मार कर उसने उसकी तरफ हाथ बढ़ाये। भूतनाथ भी उसे देख उसकी तरफ झपटा और दोनों एक दूसरे के हाथों में बंध गये; श्यामा ने भूतनाथ से बहुत ही प्रेम दिखाया और भूतनाथ ने भी कोई कसर बचा न रक्खी।

थोड़ी देर बाद दोनों नये प्रेमी अलग हुए और तब श्यामा ने भूतनाथ के हाथ को प्रेम के साथ दबाते हुए पूछा, "तुमने आज आने में देर कर दी।"

भूत०। हां मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ। देखो मेरे घोड़े की हालत क्या हो रही है और अभी मुझे बहुत लंबी सफर करनी बाकी है।

श्यामा०। (गौर से देख कर) ओह! तुम तो एक दम पसीने से लथपथ हो रहे हो? जरूर बहुत दूर से आ रहे हो ठहरो मैं कपड़े उतार कर हवा कर देती हूं, ठंढे होओ और सुस्ताओ तब कहीं जाने का नाम लेना।

इतना कह उस औरत ने कूंए की तरफ मुँह करके कहा, "कूपदेव ! जरा एक पंखी तो देना।" आवाज़ देने के साथ ही कूंए के अन्दर से एक हाथ निकला जिसकी उंगलियों में एक नाजुक सुनहरी डंडी की पंखी थी। श्यामा ने पंखी हाथ से ले ली और तब कहा "ठंढा पानी भी पिलाना।" हाथ नीचे चला गया और थोड़ी ही देर में जब पुनः ऊपर आया तो उस पर चांदी का कटोरा साफ ठंढे पानी से भरा रक्खा हुआ नज़र आया।

भूतनाथ ताज्जुब के साथ यह विचित्र हाल देख रहा था। जिस समय श्यामा ने उस हाथ से कटोरा ले कर भूत-नाथ की तरफ़ बढ़ाया तो उसने कटोरा ले लिया और मुस-कुराते हुए कहा, "यह कूंआ बड़ा विचित्र है।"

भूतनाथ की बात सुनकर श्यामा ने अफ़सोस के साथ एक लंबी सांस खींची और कहा "हां दूसरों की निगाह में तो विचित्र, अद्भुत, मनोरंजक सभी कुछ है मगर मेरे लिये तो खौफ़नाक कैदखाना है। महीने भर में केवल आज की एक रात को कुछ देर के लिये वह मेरे हुक्म में है नहीं तो बराबर मैं ही उसके पंजे में रहती हूँ। खैर मेरे दोस्त ! तुम मेरी फिक्र छोड़ो, कपड़े उतारो और ठंढे होओ।

भूतनाथ के इन्कार करने पर भी श्यामा ने उसके कपड़े उतार कर अलग कर दिये, ठंढा पानी पीने को दिया और पंखा झलने लगी। दोनों में बात चीत भी होने लगी।

भूत० । क्या आज भी तुम हर रोज़ की तरह कैदी ही हो ?

श्यामा० । (अफसोस के साथ) क्या इसमें भी कोई संदेह है ।

भूत० । मगर मेरी समझ में नहीं आता कि कूंआ क्यों कर तुम पर कब्जा रख सकता है जब कि मैं तुम्हें इस तरह स्वतंत्र देख रहा हूँ ।

श्यामा० । मालूम होता है आप उस दिन की बात भूल गये जब उस बेरहम पंजे ने जबर्दस्ती मुझे खींचा था और आपका खंजर उसपर लग कर टूट गया था ।

भूत० । हां ठीक है, बेशक यह एक विचित्र कूंआ है । मगर तुम इसके फंदे में पड़ क्यों कर गई ?

श्यामा० । जाने दो मेरे दोस्त! एक औरत का हाल जानने के लिये इतनी उत्कंठा तुम्हें क्यों है । जब तुम उसे मुसीबत बल्कि मौत के पञ्जे से छुड़ाने के लिये अपनी एक उङ्गली भी हिलाना पसन्द नहीं करते तब बेकार इस तरह के सवाल करने से सिवाय मेरी तकलीफ बढ़ने के और क्या हो सकता है ।

भूत० । नहीं नहीं श्यामा ! यह तुम्हारा बिल्कुल गलत खयाल है । मैं तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार हूँ, यहां तक कि तुम्हारे ही छुड़ाने का प्रबन्ध करने के लिये मैं अपने सब से बड़े दुश्मन दारोगा के पास जाने को तयार हो गया......

श्यामा०। (खुश होकर) हाँ! तुम दारोगा साहब के पास गये थे? वे अगर चाहें तो मुझे सहज ही में इस मुसीबत से छुड़ा सकते हैं। अगर वे तुम्हारी मदद कर दें तो तुम बहुत ही सहज में यहां का तिलिस्म तोड़ कर मुझे रिहाई दे सकते हो!

भूत०। यह तो उन्होंने नहीं कहा पर यह ज़रूर कहा कि मेरे पास एक छोटी किताब है जिसमें इस जगह का हाल लिखा हुआ है वह किताब पढ़कर अगर कुछ काम चल जाय तो ठीक ही है नहीं तो बिना राजा गोपालसिंह की मदद के कुछ नहीं हो सकता!

श्यामा०। (काँप कर) गोपालसिंह! अरे वह तो बड़ा ही दुष्ट है, उसी ने तो......खैर तो वह किताब तुम्हें देने का वादा दारोगा ने किया है?

भूत०। केवल वादा ही नहीं किया है बल्कि किताब दे भी दी है।

इतना कह भूतनाथ ने अपना बटुआ उठा लिया जो सामने रक्खा हुआ था और उसमें से रेशमी कपड़े में लपेटी हुई एक छोटी किताब निकाल कर श्यामा के हाथ पर रख दी। उस किताब को देखते ही श्यामा ने खुश हो कर भूतनाथ के गले में हाथ डाल दिया और कहा, "बस मेरे दोस्त! इसी किताब की मुझे ज़रूरत थी! इसकी मदद से तुम अगर चाहो तो बहुत जल्द मुझे छुड़ा सकोगे। (उसकी तरफ देखकर) यह जालिम

कैद अब मुझे ज्यादा दिनों तक तकलीफ न दे सकेगा।"

मानों इस बात के जवाब में ही कूए के अन्दर से शंख बजने की आवाज़ आई जिसे सुनते ही श्यामा कांप उठी। उसने फुर्ती से वह किताब भूतनाथ के हवाले कर दी और कहा, "मुझे अपने कैदखाने में जाने का हुक्म हो गया! अब मैं ज़रा सी देर तक नहीं रह सकती! तुम यह किताब लो इसमें इस जगह का सब हाल लिखा है जब तुम्हें फुरसत हो या जब तुम्हें इस बेकस की याद आवे तो इसी जगह आना, यह किताब तुम्हें खुद रास्ता बतावेगी।"

इतना कह श्यामा उठने लगी मगर भूतनाथ ने हाथ पकड़ कर उसे रोका और कहा, ठहरो और मेरी दो बातें सुनते जाओ।

श्यामा०। (बैठ कर) कहो, मगर जल्दी कहो।

भूत०। अगर मैं तुम्हें छुड़ाना चाहूं तो मुझे क्या क्या करना होगा!

श्यामा०। कुछ विशेष नरद्दुत नहीं। इस किताब को दो तीन बार पढ़ जाने से तुम्हें स्वयम् ही सब हाल मालूम हो जायगा।

भूत०। खैर, मगर मैं चाहता हूं कि पहिले तुम्हारा हाल सुन लूं!

श्यामा०। क्यों? (कुछ चुप रह कर) अच्छा ठीक है मैं समझ गई, तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं, तुम शायद समझ रहे

हो कि मैं कोई बदमाश आवारा या बाज़ारू औरत हूं। और तुम्हें धोखे में डाल कर अपना कोई काम निकाला चाहती हूं। अच्छी बात है मेरे दोस्त! तुम चाहे मुझे जो कुछ भी समझो पर सिर्फ कभी याद करते रहो यही मेरी प्रार्थना है, बस और मैं कुछ भी नहीं चाहती।

भूत०। नहीं नहीं मेरा यह मतलब नहीं है, मैं तो...

श्यामा० । बस बस अब झूठी बातें न करो जो तुम्हारे दिल में था सो मैं समझ गई। अब तुम्हें कुछ भी तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं, तुम्हें मुनासिब है कि यह किताब जिससे लाये हो उसे वापस कर दो और बेफिक्री के साथ नागर और मनोरमा की सोहबत का मज़ा उठाते हुए आराम की ज़िन्दगी बसर करो। फ़ज़ूल एक बे जान पहिचान की अजनबी औरत के लिये क्यों कष्ट उठाओगे। मैं जाती हूं मगर तुम्हारी बेवफाई की याद अपने दिल में लेती जाती हूं।

इतना कह श्यामा उठ खड़ी हुई और कुंए की तरफ लपकी पर भूतनाथ ने पुनः उसे रोका और कहा, तुम फ़ज़ूल मुझे ऐब लगा रही हो, मैं ज़रूर तुम्हारी मदद करूंगा और तुम्हें इस तिलिस्म से छुड़ाऊंगा! तुम ही ज़रा सोचो कि अगर मुझे तुम्हें छुड़ाना मंजूर न होता तो क्यों तुम्हारे लिये ऐसे आदमी की मदद चाहता जिसका मुंह देखना भी मुझे मन्जूर न था! अफ़सोस की बात है कि तुम फ़ज़ूल ही गुस्से में आ रही हो और मुझ पर झूठे इलज़ाम लगा रही हो।

श्यामा० । (ठंढी होकर) माफ़ करो, मुझ से भूल हुई, तुम बेशक मेरे खैरख़्वाह हो इसमें शक नहीं । मैं अपना सब हाल तुम्हें सुनाऊंगी मगर इस वक्त नहीं, जब तुम मुझे स्वतंत्र कर दोगे तब बताऊंगी, इस समय मौका नहीं है ।

भूत० । तो मैं किस दिन आऊं ?

श्यामा० । जब तुम्हारी इच्छा हो आ सकते हो, पर जब आना अकेले आना और अपने साथ कोई हर्बा ज़रूर लाना ।

भूत० । मैं तो आज ही चलता पर इस समय बहुत ही ज़रूरी काम से कहीं जा रहा हूँ रुकने से बहुत हर्ज होगा । इसलिये लाचार हूं । आज से एक सप्ताह के अन्दर.........

इसी समय कूंए के अंदर से पुनः शंख बजने की आवाज़ आई जिसे सुनते ही श्यामा उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कि "मैं जाती हूँ मगर तुम्हारी याद अपने साथ लेती जाती हूं" कूंए के पास जा कर उसमें कूद पड़ी ।

भूतनाथ कुछ देर तक वहीं बैठा न जाने क्या क्या सोचता रहा । इसके बाद वह उठा और कूँए के पास आकर अन्दर की तरफ झांकने लगा, परन्तु उसी समय उसे अपने पीछे कुछ आहट मालूम पड़ी और जब उसने घूम कर देखा तो पाँच आदमियों को एक एक कर के सीढ़ी की राह कूंए की जगत पर चढ़ते हुए पाया । ये पाँचों ही हाथ पांव से बहुत मज़बूत और कद्दावर थे और हर्बों से अच्छी तरह लैस थे । भूतनाथ उन्हें देख कर यद्यपि डरा तो नहीं पर कुछ चौकन्ना

अवश्य हुआ और कूंए के पास से हट कर एक ओर हो गया और बड़े गौर से उन आदमियों की तरफ देखने लगा।

हम नहीं कह सकते की ये नये आने वाले पांचो आदमी वे ही थे या कोई दूसरे जो पहिले जङ्गल में दिखाई पड़े थे और न यही कह सकते हैं कि इनकी सूरत शक्ल कैसी थी क्योंकि इन सभों ही ने अपनी अपनी सूरतों को नकाब के अन्दर ढाक रक्खा था। भूतनाथ को सन्देह था कि ये पांचों उसे छेड़ेंगे या उससे कुछ बात चीत करेंगे पर उन्होंने भूतनाथ की तरफ निगाह उठा कर भी न देखा और सब के सब उसी कूँए के पास खड़े होकर नीचे की तरफ झांकने और आपुस में कुछ बातें करने लगे। इस नीयत से कि शायद बातचीत से वह उन्हें पहिचान सके या उन लोगों के यहाँ आने का कारण जान सके, भूतनाथ बड़े गौर से उन सभों की बातें सुनने लगा पर उसकी समझ में कुछ भी न आया क्यों कि वे लोग जिस विचित्र भाषा में बात कर रहे थे उसका एक शब्द भी भूतनाथ समझ न सकता था।

थोड़ी देर बाद यकायक कूंए के अन्दर से शंख की आवाज़ आई जिसे सुनते ही वे सब चौकन्ने हो गये उनमें से जो सरदार मालूम होता था उसने अपने एक साथी के तरफ इशारा कर के कुछ कहा जिसे सुनते ही उसने सलाम किया और कूंए से नीचे उतर किसी तरफ को रवाना हुआ। थोड़ी ही देर

बाद भूतनाथ ने उसे एक बड़ी गठड़ी पीठ पर लादे वापस आते देखा जिसके विषय में उसकी चालाक निगाहों ने तुरन्त बता दिया कि इसमें कोई आदमी या औरत बंधी है।

दो आदमियों ने गठड़ी उसकी पीठ पर से उतारी और कूंए के पास ले आये। सरदार ने कूंए में झांका और अपनी विचित्र भाषा में कुछ कहा जिसके जवाब में भीतर से पुनः शंख की आवाज आई, आवाज सुनते ही उन दोनों ने वह गठड़ी उसी तरह कूंए में झोंक दी और इसके बाद सबके सब जिधर से आये थे कूंए से उतर कर उधर ही को चल दिये। भूतनाथ की तरफ फिर भी किसी ने आंख उठा कर न देखा।

ताज्जुब के साथ भूतनाथ यह सब हाल देख रहा था। वे आदमी कौन थे गठड़ी में कौन बंधा था, यह कूँआ कैसा था, आदि बातें वह बहुत देर तक सोचता रहा अन्त को उसका मन न माना। उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और उसकी मदद से वह किताब जिसे उसने दारोगा से पाया था खोल कर पढ़ने लगा उलट पुलट कर जल्दी जल्दी उसने कई जगह से उसे पढ़ा और तब रोशनी बुझा बटुए में रख तथा उस किताब को कमर में खोंस उसने कपड़े पहिने और हर्बे लगाये, बटुआ कमर में बांधा, कमन्द हाथ में ली और एक निगाह चारों तरफ देख और सन्नाटा पा कूंए के पास पहुँचा। कमन्द का एक

सिरा पत्थर के खम्भे के साथ बांध दिया और दूसरा कूँए में लटका दिया कुछ देर तक खड़ा खड़ा कुछ सोचता रहा और तब उसी कमन्द के सहारे कूँए में उतर गया।

भूतनाथ के जाने के कुछ ही देर बाद न जाने कहां से वे पांचो आदमी पुनः उस जगह आ मौजूद हुए। सरदार ने झांक कर कूँए के अन्दर देखा कुछ हलकी हलकी आवाज आ रही थी जिस पर गौर किया और तब अपने आदमियों से कुछ बातें की। इसके बाद एक एक कर के वे चारों आदमी उसी कमन्द के सहारे कूँए के अन्दर उतर गये केवल वह सरदार बाहर रह गया जिसने कमन्द को खम्भे से खोल लिया और कमर से लपेट लेने के बाद हँस कर कहा 'वह मारा अब ये बच्चा जी कहां जा सकते हैं !! इनकी सब ऐयारी ताक ही पर रह जायगी और हम लोग अपना काम कर गुजरेंगे !!" इतना कह वह फिर जोर से हँसा और तब स्वयम् भी उसी कूँए में कूद पड़ा।

॥ तेरहवां हिस्सा समाप्त ॥
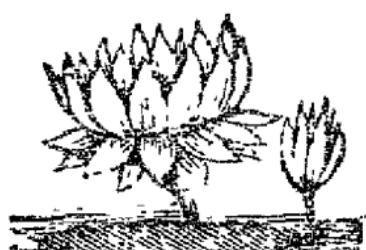
राजस्थान का इतिहास

राजपूतों के संबंध की ऐतिहासिक पुस्तकों में टाड साहब के लिखे "ऐनल्स आफ राजस्थान" का जितना मान है उतना और किसी पुस्तक का नहीं, कारण यह कि जहां और लेखकों ने बिना जांचे अपने मन की अप्रामाणिक बातें लिख दी हैं वहां टाड साहब ने उस बात को खोज कर, उसका प्रमाण ढूंढ़ कर और उसके संबंध की सब बातें विचार कर तब उसे लिखा है। यह उन्हीं की बनाई अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है। इसमें मेवाड़ तथा समस्त राजपूत जातियों का इतिहास बड़ी जांच और खोज के साथ लिखा गया है। राजपूत रियासतों का राजनैतिक प्रबन्ध कैसा था, उनकी आर्थिक अवस्था क्या थी, भीतरी और बाहरी शत्रुओं से लड़ने में वे किस तरह का प्रबंध करते थे, गृह प्रबंध कैसा था आदि बातों को यदि आप यथार्थ रूप में पूरी पूरी तौर से जानना चाहते हैं तो इस पुस्तक को पढ़ें, ५ भाग का मूल्य— २॥)

महेश्वर विलास

कवि लछिराम जी काव्य के अच्छे ज्ञाता हो गये हैं, उन्हीं का बनाया यह ग्रन्थ रत्न है। इसमें नव रसों तथा नायिका भेद आदि का सविस्तर वर्णन है तथा उनके उदाहरण स्वरूप उत्तम उत्तम कवितायें भी दी गई हैं। जो लोग काव्य के विषय में पूरी जानकारी चाहते तथा उनके भेदों आदि से परिचित होना चाहते हैं वे इस पुस्तक को एक बार अवश्य देखें। प्रत्येक काव्य प्रेमी के लिये यह पुस्तक आवश्यक है और इसकी एक प्रति उसे अवश्य अपने पास रखनी चाहिये। काव्य के विषय की बातें बतलाने वाली ऐसी और कोई पुस्तक न होगी। यदि आप काव्य सागर में गोता लगाना चाहते हैं तो इस ग्रंथ रत्न को देखें— १)

कुसुमकुमारी

कुछ लोगों का कहना है कि बिना ऐयार और तिलिस्मी हाल आये उपन्यास रोचक हो ही नहीं सकता, लेकिन यह खयाल गलत है और इसका सबूत है यह उपन्यास। यह बा० देवकीनंदन खत्री रचित है इसी से आप समझ सकते हैं कि यह कितना रोचक होगा। फिर भी हम अपनी ओर से इतना अवश्य कहेंगे कि यह रोचक से रोचक ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यासों से बाजी मार सकता है इसका घटना क्रम भी इतना अनूठा है कि पुस्तक समाप्त किये बिना आप उसे हाथसे रख न सकेंगे। इसमें मित्र की धोखेबाजी, स्त्री का सच्चा प्रेम, वीर की वीरता, स्वार्थी की दगा, डरपोक का कायरपन, डाकुओं की भयानक लीला, सभी दिखाया गया है पर अन्त में ज्योतिष विद्या का ऐसा चमत्कार दिखाया है कि आप पढ़ के दंग हो जायँगे। मूल्य— १)

चंद्रभागा

यों तो ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास रोचक होते ही हैं, पर अगर उसमें जादूगरी भी मिल जाय तो सोने में सुगंध का हाल होता है। इस पुस्तक में विचित्र तिलिस्म का हाल है, अनूठी ऐयारियों का वर्णन है और बीच बीच में ऐसी ऐसी जादूगरी की करामातें दिखाई गई है कि पुस्तक आरंभ करने पर आप मन्त्र मुग्ध की तरह उसे पढ़ते चले जायँगे और बिना समाप्त किये रुक न सकेंगे। बहुत दिनों से यह पुस्तक अप्राप्य थी, अब मोटे ऐन्टीक कागज पर रंग बिरंगी कई तस्वीरें दे कर छापी गई है। यदि आप अद्भुत घटना-पूर्ण उपन्यासों के प्रेमी हैं तो इसे अभी मंगवा लें और पढ़के अपना दिल खुश करें। बड़े बड़े जादूगरों, दैत्यों और यक्षों के आपस में युद्ध करने का हाल पढ़ आप को आश्चर्य होगा और आप अवश्य प्रसन्न होंगे। मूल्य ॥)

किले की रानी

यदि आप उपन्यासों के शौकीन हैं तो आप ने प्रसिद्ध औपन्यासिक 'रेनाल्ड साहब' के अनूठे अंग्रेजी उपन्यास "दि यंग फिशरमन" का नाम अवश्य सुना होगा। यह 'किले की रानी' उसी पुस्तक का अनुवाद है। इस में एक शराबी रईस का हाल लिखा है जो अपने रुपयों के जोर से एक सुन्दरी बालिका से विवाह करना चाहता था, पर वह बालिका उसे न चाह एक गरीब मछुये से प्रेम करती थी। उस शराबी रईस की दुर्दशा का हाल पढ़ हंसी आती है और बालिका का सरल सच्चा प्रेम पढ़ कर हृदय गद्गद् हो जाता है। अन्त में कई रोचक और विचित्र घटनाओं के बाद मछुये को एक डूबा हुआ बड़ा भारी खजाना मिल गया और उसकी मदद से उस शराबी रईस को हटा वह मछुआ अपने प्रेमिका से जा मिला और एक बड़े भारी किले का राजा हुआ। मूल्य— ।।।)

साहसी डाकू

हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध डाकूराज तांतिया भील का नाम प्रायः सभी जानते होंगे। जिस प्रकार यहां तांतिया भील हो गया है उसी प्रकार विलायत में डिक टर्पिन नाम का एक डाकू हो गया है। यह इतना वीर और निर्भय था कि दिन दहाड़े पुलिस के अफसरों को लूट लिया करता था, खुले आम अमीरों के यहां डाके डालता था और तिस पर भी पुलिस उसका कुछ कर नहीं सकती थी। यह इतना उद्दंड था कि बड़े बड़े चालाक जासूसों को इससे हार माननी पड़ी और देश भर की पुलिस एक साथ यत्न करने पर भी इसे न पकड़ सकी। अन्त में एक ऊंचे ओहदे के पुलिस अफसर ने इसे पकड़ने का बीड़ा उठाया। इस कोशिश में उसे कैसी कैसी जिल्लतें उठानी पड़ीं, कैसी आफ़तों में फंसना पड़ा, उसकी कैसी कैसी दुर्दशा हुई यह पढ़ के हंसी आती है १)

बलिदान

मनुष्य कितना नीच हो सकता है और पतिव्रता स्त्री अपने अधम, दुर्व्यसनी तथा पतित पति के लिये भी अपने प्राणों का किस प्रकार न्यौछावर कर सकती है यही इस पुस्तक में दिखाया गया है।—दुष्ट साधु महंत, रंगे कपड़ों में छिपे पतित, उनके लंपट चेले जो दुष्कर्मों में अपने गुरुओं से भी बढ़ चढ़ के होते हैं, ये सब किस तरह व्यभिचार की सृष्टि करते हैं, किस तरह सतियों को चरित्र-हीन बना के अपनी काम-पिपासा शान्त करना चाहते हैं, किस तरह धूर्तता कर के, मीठी बातें बोल के, ढोंग दिखा के पतिव्रताओं को वस में करने की चेष्टा करते हैं और सतियें, स्वच्छहृदया, पुन्याचारिणी कुल-ललनायें किस तरह उनके फंदे से बचती हैं यदि यह सब बातें आप देखना चाहें तो इस पुस्तक को पढ़ें। यह जितनी रोचक है उतनी ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य— १)

गुप्तगोदना

बा० देवकीनंदन खत्री रचित प्रसिद्ध उपन्यास। इसमें कुटिल यवनराज औरंगजेब की चालें और उस समय के दिल्ली राज्य की घटनायें दिखाई गई हैं। उस समय मुसलमान दर्बार में कैसे कैसे गुप्त षडयन्त्र चला करते थे, औरंगजेब और उसके भाइयों में दिल्ली के तख्त के लिये कैसी कैसी चालें हुईं, मुसलमान महल की उस समय कैसी अवस्था थी, बेगमें पहरेदारों से सुरक्षित, संतरियों से घिरे हुये, खोजों से भरे महल में भी कैसे मजे में अपनी कार्रवाइयें कर डालती थीं, आदि बातें आपको इस उपन्यास के पढ़ने से भली भांति मालूम हो जायंगी। इसका घटनाक्रम बड़ा ही रोचक है और चरित्र चित्रण भी बड़ा ही उत्तम है। यदि आप रोचकता के साथ ही साथ मुसलमानी जमाने के बारे में भी जान-कारी चाहते हों तो इस उपन्यास को पढ़ें। आपको यह अवश्य पसन्द आवेगा और आप पढ़ के प्रसन्न होंगे मूल्य २)

सुरसुंदरी

जिस समय यवन गण निरंतर उदयपुर का अधिकार में लाने की चेष्टा में लग हुये थे और बहादुर राजपूत पुत्र, स्त्री और प्राणों की आहुति दे कर अपनी जन्मभूमि को बचाने की चेष्टा कर रहे थे उसी समय की ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। इसमें आपको सभी बातें देखने को मिलेंगी वीर राजपूत योद्धा प्राणों का कितना मूल्य समझते हैं और किस तरह मरते हैं, वीरता किसे कहते हैं और सच्ची वीरता क्या है, राजपूत कुमारियों में प्रेम की परिभाषा क्या थी और वे उसे किस तरह पालन करती थी, निःस्वार्थ प्रेम कैसा होता है और उस में कितना हृदय बल, गांभीर्य आदि आवश्यक होता है, ये सभी बातें आप इस पुस्तक को पढ़ने से जान जायंगे। इसमें एक राजपूत युवती का अगाढ़ प्रेम और स्वार्थ शून्य स्नेह देख कर आप का हृदय गद्‌गद हो जायगा और अन्त में आप के मुंह से वाह वाह निकल पड़ेगा। रंगीन चित्रों सहित, मूल्य— १)

महेश्वर विनोद

इस ग्रंथ में भांति भांति के मनोहर छन्दों में कृष्ण जी की लीला का वर्णन है। रुक्मिणी हरण, मथुरा गमन, वियोग लीला आदि सभी प्रधान प्रधान बातें आ गई हैं। इन सब के बाद श्रीरामचन्द्र जी की बन गमन लीला का वर्णन है। सभी छन्द बड़ी ललित भाषा में लिखे गये हैं और ऐसे भावमय हैं कि पढ़ कर दृश्य नेत्रों के सामने घूम जाता है। सभी ईश्वर भक्तों के देखने योग्य है मूल्य ।)

मोतियों का खजाना

जैसे अंग्रेज औपन्यासिकों में 'रेनाल्ड साहब' का नाम प्रसिद्ध है वैसे ही फ्रांसीसी लेखकों में "एलेक्जेण्डर ड्यूमस" मशहूर होगये हैं। दोनों में कौन बढ़ के है इसके विषय में मतभेद है पर फ्रांसीसी लेखक के भक्तों का कहना है कि "एलेक्जेंण्डर ड्यूमस" अपनी लिखी पुस्तकों में जैसा अद्भुत घटना क्रम दिखाते हैं वैसा 'रेनाल्ड' की किताबों में नहीं पाया जाता। प्रस्तुत पुस्तक "एलेक्जेण्डर ड्यूमस" के सर्वोत्तम उपन्यास "दि कौंट आफ मान्ट क्रिस्टो" का अनुवाद है। प्रायः सभी भाषाओं में इस उपन्यास-रत्न का अनुवाद हो चुका था पर हिन्दी में अभी तक यह पुस्तक प्रकाशित न हुई थी। हिन्दी भाषा-भाषी भी इस रत्न से वंचित न रहें यह सोच के हमने इसका हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया है जो चौदह बड़े साइज के भागों में समाप्त हुआ है। यह पुस्तक कैसी है इस के विषय में अधिक कहना व्यर्थ है पर इतना हम जरूर कहेंगे कि मानुषिक भावों का ऐसा अच्छा खाका, घटना-क्रम का ऐसा अद्भुत सिलसिला, चरित्र चित्रण का ऐसा सुन्दर और सफल प्रयत्न किसी पुस्तक में आप न पायेंगे। पुस्तक का प्लाट बड़ा ही मनमोहक है और लेखनशैली इतनी अच्छी है कि आप जितना ही पढ़ें, और पढ़ने की आप की इच्छा बनी ही रहेगी। मूल भाषा में इस उपन्यास के सैकड़ों संस्करण हो चुके हैं और हिन्दी प्रेमियों ने भी इसका अच्छा आदर किया है। यदि आप अच्छे उपन्यासों का कुछ भी शौक रखते हैं तो इस को पढ़ें, कम से कम एक ही दो हिस्सा मंगवा कर देखें। हमें विश्वास है कि शुरू कर के इस पुस्तक को आप फिर बिना पढ़े छोड़ न सकेंगे। १४ भाग एक साथ लेने से मूल्य ७), अलग अलग लेने से प्रति भाग ॥)

नरेन्द्रमोहिनी

बा०देवकीनंदन जी खत्री कृत। कुछ लोगों को दुःखांत उपन्यास पसंद होता है और कुछ सुखान्त के प्रेमी होते हैं पर ऐसा होना बड़ाही कठिन है कि एक ही उपन्यास दुःखान्त और सुखान्त दोनों के प्रेमियों को सुख दे। इस पुस्तक की यही खूबी है कि यह दोनों प्रकार के लोगों को आनन्द देगी। इसमें चरित्र चित्रण बड़ा ही अनूठा हुआ है, पात्रों का चरित्र ऐसी सुन्दरता से खींचा गया है कि भावों का विचित्र उतार चढ़ाव उसमें बड़ी खूबी से दिखाई देता है। कुंवर नरेन्द्रसिंह की बहादुरी, रंभा का सच्चा प्रेम जगजीतसिंह का भ्रातृस्नेह, मोहिनी और गुलाब की कुटिलता, उनका धोखा दे के नरेन्द्रसिंह को जहर खिला देना और अन्त में विचित्र रीति से संखिया खा कर उनका अच्छा होना, बहादुरसिंह भंगेड़ी की मसखरी बातें, आदि ऐसे उत्तम रूप से लिखी गई हैं कि पढ़ कर आप अवश्य प्रसन्न होंगे। नया सचित्र संस्करण मूल्य— १॥)

कुसुमलता

आज कल सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासों की धूम है, पर यदि सच पूछा जाय तो ये उतने रोचक नहीं होते जितने ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास होते हैं। इस पुस्तक में आले दर्जे की ऐयारी और बड़े ही अनूठे तिलिस्म का वर्णन है और ऐसा अद्भुत घटना-क्रम है कि पढ़ने वाले को ताज्जुब पर ताज्जुब होता जाता है और एक घटना का भेद खुलता नहीं कि दूसरी विचित्र घटना फिर मन को अचंभे में डाल देती है। इस ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास की लोगों ने बड़ी ही प्रशंसा की है। यदि आप को इस किस्म के उपन्यासों का शौक हो तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि इसे पढ़ के आप अवश्य प्रसन्न होंगे। मूल्य २)

किसान की बेटी

उपन्यास क्षेत्र में 'रेनाल्ड साहब' का नाम खूब अच्छी तरह प्रसिद्ध है। यह कहना अनुचित न होगा कि घटना वैचित्र्य और चरित्र चित्रण में उनका मुकाबला अब तक कोई औपन्यासिक नहीं कर सका है। यह 'किसान की बेटी' उनके बनाये एक प्रसिद्ध उपन्यास 'मे मिडिल्टन' का अनुवाद है। इसमें एक सरल हृदया बालिका का ऐसा अच्छा चरित्र खींचा गया है और साथ ही साथ बदमाशों की बदमाशी, जालियों का जाल और लंपटों की विचित्र लीलायें ऐसी अच्छी तरह दिखाई गई हैं कि आप पढ़ कर प्रसन्न हो जायंगे। इस पुस्तक को पढ़ने वाला कभी किसी के धोखे में न पड़ेगा और दिलचस्पी के साथ ही साथ उसे शिक्षा भी मिलेगी। मूल्य— १।)

स्वर्णलता

सुन्दर सोने का घर कलहकारिणी स्त्रियों के कारण किस तरह मट्टी हो जाता है, कर्कशा स्त्रियें भरी पूरी गृहस्थी को किस तरह चौपट कर देती हैं, स्त्री के वचन बाण किस तरह शान्त घर में द्वेष का बीज रोप देते हैं और भाई भाई किस तरह स्त्रियों की बातों में पड़ स्नेह, ममता, दया, सौहार्द्र से शून्य हो एक दूसरे की जान के प्यासे हो जाते हैं यह इस उपन्यास के पढ़ने वाले भली भांति जान जायंगे। यही नहीं, सुशीला और पतिव्रता स्त्रियें उजड़े घर को भी किस तरह बसा देती हैं यह भी आप इस पुस्तक के पढ़ने से जान सकेंगे। आज कल हमारे समाज की दशा बड़ी शोचनीय हो रही है, घर घर कलह, अशान्ति, द्वेष फैला हुआ है, ऐसे समय में यह पुस्तक आप स्वयं पढ़िये और अपनी कुल ललनाओं को भी पढ़ाइये। मूल्य— ७)

रामरसायन

कवि पद्माकर कृत यह ग्रंथरत्न एक अनूठी वस्तु है जो आज तक हिन्दी भाषा में कहीं नहीं छपा। कवि गुरु वाल्मीकि जी ने जिस रामायण की रचना की है वह जगत में पूज्य और प्रसिद्ध है परन्तु अभी तक उसका कोई उत्तम हिन्दी अनुवाद उपलब्ध नहीं है इस ग्रंथ के द्वारा कविश्रेष्ठ पद्माकर ने इस कमी को बड़ी खूबी से दूर कर दिया है। अर्थात् उन्होंने वाल्मीकि रामायण का केवल अनुवाद ही नहीं किया है बल्कि उसका ललित पद्यमय अनुवाद किया है। एक तो वाल्मीकि रामायण स्वयं ही ग्रंथों में रत्न और जगत् प्रसिद्ध है उस पर यह हिन्दी के सर्व पूज्य कवि द्वारा अनुवाद, सोने में सुगन्ध का काम हो गया है। जो लोग रामचरित्र के भक्त हैं और साथ ही साथ पद्माकर को काव्य सुधा भी पान किया चाहते हैं वे इसे अवश्य पढ़ें। यह एक पंथ दो काज है। मूल्य बालकांड १) अयोध्या कांड १) आरण्य कांड— ॥।)

भूतों का मकान

इसमें एक विचित्र मकान का हाल लिखा गया है जिसमें बड़ी बड़ी अद्भुत घटनायें हुआ करती थीं। इसके अतिरिक्त धन को लोभ मनुष्य से कैसे कैसे काम करवाता है, मित्र लालच में पड के मित्र के साथ कैसा बर्ताव करता है, सच्चा प्रेम करने वाली बालिका किस तरह सच्चे हृदय से अपना तन मन धन अपने प्रेमी को सौंप देती है और बड़े बड़े प्रलोभन भी अटल प्रेम धारा को किस तरह रोकने में असमर्थ होते हैं ये सब बातें आपको इस पुस्तक में देखने को मिलेंगी। पुस्तक का घटनाक्रम अच्छा तथा पात्रों का चरित्र चित्रण उत्तम है। कई रंगीन और सादे चित्रों सहित नवीन संस्करण का मूल्य केवल ॥)

समस्यापूर्ति

इस पुस्तक में बहुत से भिन्न भिन्न कविसमाजों और नवीन कवियों द्वारा रचित कवित्तों का समस्यापूर्ति के रूप में संग्रह किया गया है। आज कल कई तरह की नवीन ढङ्ग की कवितायें देखने में आती हैं जो सामयिक तो होती हैं पर उनमें वह ओज, वह लालित्य, वह अद्भुत शब्दों का चुनाव, वह माधुर्य और वह भाव पूर्णता नहीं रहती जो प्राचीन कविताओं में देखने में आती है यद्यपि नई रोशनी के युवक नवीन ढंग और शैली की कविता ही पसन्द करते हैं पर अब भी प्राचीन कविताओं का कम आदर नहीं है। प्राय कविता की ओर से लोगों की रुचि कम होती जा रही है, ऐसे समय में प्रत्येक का कर्तव्य है कि ऐसी पुस्तक की एक प्रति अपने पास रक्खे। इससे हजारों अनूठी कविताओं का ललित संग्रह तो आप के पास रहेहीगा इसके अतिरिक्त पुराने कवियों की लुप्त-प्राय कीर्ति को भी एक आश्रय मिलेगा। ४ भाग। प्रत्येक का मूल्य— ।।।)

महेश्वर चंद्रिका

डा० महेश्वर बक्स सिंह कृत इस ग्रंथ में ब्रज निकुञ्ज विहारी भक्तभय हारी कंसारि श्रीकृष्णचन्द्र जी की लीला का वर्णन काव्य में किया गया है। कंस जन्म से ले कर भगवान की बाल लीला, गोकुल क्रीड़ा, पूतना, अघासुर, धेनुक आदि बध, फिर काली मर्दन, गोवर्धन धारण, इन्द्रमय भंजन, गोपी विरह वर्णन, मथुरा गमन, कंस बध, रुक्मिणी हरण, शिशुपाल बध, आदि वर्णन करतेहुए अंत में कुरुक्षेत्र युद्ध, सुभद्रा विवाह, द्वारिका विहार, आदि का वर्णन किया है। यह पुस्तक प्रत्येक कृष्ण भक्त के देखने योग्य है। छन्द ऐसे ललित पद्यों में लिखे गये हैं कि पढ़ कर उस समय के दृश्य आंखे के आगे घूम जाते हैं। बड़े साइज के ४१८ पृष्ठों की बड़ी पुस्तक का मूल्य केवल १॥)

उपन्यास—सागर

कथा सरित्सागर संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसमें प्रेम और भावपूर्ण हजारों ही कहानियां हैं। बड़े ही परिश्रम और व्यय से हमने इस विराट ग्रन्थ का सरल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराया है। यह ग्रंथ हिन्दी अलिफलैला कहा जा सकता है, बल्कि यह उससे भी बढ़ कर है क्योंकि इसमें अश्लीलता की गंध भी नहीं और सभी कोई स्त्री पुरुष या बच्चे इसे बिना संकोच के पढ़ सकते हैं। इसमें पांच सौ से अधिक किस्से हैं जिन में एक से एक अद्भुत कहानियां, विचित्र से विचित्र रहस्य, जादूगरों की जादूगरी, धूर्तों की धूर्तता, कपटियों का कपट, योगियों का योग, सती का सतीत्व, प्रेमी का प्रेम और तेजस्वी का तेज दिखाया गया है जिन्हें पढ़ कर आप एक दम मुग्ध हो जायेंगे। बड़े २ सोलह सौ से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ८। थोंहो नहीं के बराबर था फिर भी केवल थोड़ समय के लिये हमने इसको और भी घटा कर केवल ६) कर दिया है। शीघ्रता कीजिये और अभी इस पुस्तक की एक प्रति मंगा कर पढ़िये। देर होने से मूल्य बढ़ जायगा और फिर आपको पछताना पड़ेगा यह एक ही पुस्तक आपके लिये महीनों पढ़ने का मसाला होगी। मूल्य- ६)

काजर की कोठरी

यह बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित प्रसिद्ध उपन्यास है। रंडियों और उनके आशिकों का जैसा सच्चा खाका इस उपन्यास में उतारा गया है वैसा और किसी जगह आपको नहीं मिलेगा। इसे पढ़ने से आप को यह भी मालूम होगा कि किस तरह धूर्त और होशियार लोग रंडियों के भी कान काटते हैं और उन्हें धोखा दे अपना काम बनाते हैं। मूल्य ॥।

क्षात्रतेज

सुप्रसिद्ध नाट्यकार बा० आनन्द प्रसाद कपूर रचित। अगर आप उत्तम श्रेणी के नाटकों के शौकीन हैं तो आप बा० आनन्दप्रसाद कपूर से अवश्य ही सुपरिचित होंगे। उन्हीं ख्यातनामा नाट्यकार का लिखा यह नवीन नाटक अभी अभी छप कर प्रकाशित हुआ है। अगर आप अपने पूर्वजों की वीरता, क्षत्रियों का आत्म-गौरव और वीर क्षत्राणियों के तेज का हाल पढ़ना चाहते हों, अगर आप केवल 'सत्यबल' से बड़े बड़े पापियों का नाश देखना चाहते हों, अगर आप ब्रह्मतेज का प्रताप देखना चाहते हों, यदि आप सतीत्व का बल देखना चाहते हों, यदि आप आप नारि का गौरव देखना चाहते हों और यदि आप छोटे छोटे क्षत्रिय बालकों की वीरता देख मुग्ध होना चाहते हों तो इस नवीन नाटक को अवश्य पढ़िये। बहुत ही सुन्दरता से कई रंगीन और सादे चित्रों सहित, मोटे कागज पर बहुवर्ण मुख पृष्ठ सहित छापा गया है। मूल्य १)

अमलावृत्तांत माला

कचहरी के अमलाओं को यदि कलियुग के दर्बारी कहा जाय तो उचित होगा। वर्त्तमान समय की कचहरियों की तरफ से लोगों का विश्वास हटाने और उन्हें बदनाम करने का पूरा श्रेय इन्हीं को प्राप्त है। ये अमले ऐसी धूर्तता, चालाकी और बेईमानी से लोगों से रुपया भसते हैं और गरीबों के साथ भी ऐसी संगदिली से पेश आते हैं कि जिसका बयान नहीं हो सकता। इस पुस्तक में इन अमलाओं की पोल खूब अच्छी तरह खोली गई है और बताया गया है कि इनकी चालाकी का ढंग क्या है, ये धूर्तता की चालें कैसे चलते हैं, है और इनके बेईमानी करने के तरीके क्या क्या हैं, पुस्तक उपन्यास के रूप में लिखी गई है इससे खूब रोचक है और साथ ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य ।।)

मधुमालती

एक बहुत ही रोचक भावपूर्ण उपन्यास, इस पुस्तक का घटना क्रम बड़ा ही विचित्र है। इसमें एक वेश्या का चरित्र दिखाया गया है। कैसे वह पहिले वेश्या थी, कैसे एक चरित्रभ्रष्ट युवक ने अपनी सती साध्वी स्त्री को त्याग उस वेश्या के नाम अपनी जायदाद लिख दी, कैसे उस वेश्या को पीछे पश्चात्ताप हुआ और अन्त में उसने अपनी निकृष्ट वृत्ति को त्याग कैसे कैसे उत्तम कार्य किये यह पढ़ आप अवश्य प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त लीला का पातिव्रत रक्षण, डाकुओं की बदमाशी, भिखारिनी का नीचों को उत्तम पथ पर लाने का उद्योग और उसका फल आदि बातें पढ़ कर आप अवश्य प्रसन्न होंगे। पुस्तक में पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही उत्तम हुआ है और यह रोचक होने के साथ ही शिक्षाप्रद भी है। यदि आप उत्तम उपन्यासों के सचमुच शौकीन हैं तो इसको अवश्य पढ़ें। मूल्य— १॥)

भयानक भ्रमण

एक अंग्रेज अफ्रिका के भयानक जंगलों में जा कर गायब हो गया था। उसे खोजने के लिये उसके कई दोस्त एक बड़े भारी गुब्बारे पर बैठ कर चले। रास्ते में उन पर बड़ी बड़ी आफतें आईं आदमी को समूचा निगल जाने वाले दैत्य मिले, सिंह को खाली हाथों मारने वाले राक्षस मिले, नरमुंडों की माला पहिनने वाले जंगली मिले, बड़े बड़े तूफान आये पर उन्होंने हिम्मत न छोड़ी। कई बार तो वे ऐसी हालत में पड़े कि उन्हें अपने मरने का निश्चय हो गया, पर फिर भी ईश्वर ने उनकी रक्षा की और अन्त में अपनी धीरता वीरता और बुद्धि से विघ्न बाधाओं को पार कर वे अपने खोये हुये दोस्त के पास पहुंच गये और बड़ी कारीगरी से उसे छुड़ा लाये। मूल्य— १)

सती चरित्र संग्रह

इस पुस्तक में भारतवर्ष की कई सौ प्राचीन, सती, पतिव्रता स्त्रियों का जीवनचरित्र दिया हुआ है। इसे पढ़ने से मालूम होगा कि पहिले समय में हमारी स्त्रियें कैसी वीर हुआ करती थीं वे कैसी दृढ़ प्रतिज्ञ, सत्यनिष्ठ, धर्माचारिणी और बुद्धिमती होती थीं, आपत्ति काल में उनकी बुद्धि कैसी स्थिर रहती थी और घोर से घोर विपद्काल में भी वे किस तरह अपने जीवन का मोह तकत्याग कर धर्म की रक्षा करती थीं। आजकल स्त्रियों में शिक्षा का अभाव है, परन्तु अंगरेजी पढ़ाने की अपेक्षा उन्हें अपने धर्म की शिक्षा देना, अपनी बीती मर्यादा का स्मरण कराना, अपने अतीत गौरव की बातें बताना और उसके विषय में उन्हें समझाना अधिक अच्छा होगा। इस पुस्तक को आप स्वयं पढ़िये और अपनी कुल ललनाओं को भी पढ़ाइये। मूल्य बड़े साइज के दो भागों का केवल— २)

काव्यनिर्णय

कविवर भिखारीदास जी एक प्राचीन कवि हुये हैं जिनके बनाये छन्दार्णव, शृङ्गार निर्णय आदि काव्यग्रंथ प्रसिद्ध और प्रमाणिक हैं। उन्हीं का बनाया हुआ यह काव्यनिर्णय है। इस पुस्तक में काव्य का समस्त वर्णन आ गया है। काव्य किसे कहते हैं, उसमें क्या क्या होना चाहिये, उसकी भाषा कैसी होनी चाहिये, उसके गुण दोष क्या क्या हैं, लक्षण, अलंकार और भाव क्या रस क्या है और कैसे बनता है, सारांश यह कि काव्य के विषय की कोई भी बात इससे छूटी नहीं है। यदि आप कविता के विषय में पूरी जानकारी चाहते हैं और यह नहीं चाहते कि बहुत परिश्रम कर के पचासों किताबें पढ़ी जांय तो केवल यह पुस्तक आरंभ से अन्त तक ध्यान से पढ़ जांय। आपको इस विषय की सब बातें मालूम हो जायंगी। मूल्य १)

मायावती

तीन वीर पुरुष घर से उदास हो यात्रा कर के अपना मन बह लाने के लिये बाहर निकले हिमालय पर्वत श्रेणी को पार करके तिब्बत में प्रवेश करने और फिर बहुत दूर उत्तर की ओर चले जाने पर ये एक विचित्र अग्नि और सूर्यपूजकों के देश में पहुंचे। रास्ते में बड़ी बड़ी घटनायें हुई, डाकुओं से लड़ाई, आग का फौआरा ज्वालामुखी पहाड़, विचित्र जन्तुओं से युद्ध, आदि कई आफतों से पार होने पर जब वे उस देश में पहुँचे तो वहां के विचित्र पुरुषों, अद्भुत रीति रिवाज और आश्चर्य जनक बातों को देख ये घबड़ा गये। वहां भी इन्हें कई चक्करों में फंसना पड़ा रानियों में गृहयुद्ध, सूर्यपूजकों का अन्ध विश्वास, बलिदान की प्रथा आदि से इन्हें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी। अन्त में सब आफतों को पार कर ये उस देश में राजा हो गये। बड़ी रोचक पुस्तक है मूल्य— २।

अर्थ का अनर्थ

आज कल इटली स्वतंत्र है और अच्छे सभ्य राष्ट्रों में गिना जाता है। पर दो ही तीन सौ वर्ष पहिले उसकी दूसरी ही अवस्था थी। उस समय पादड़ियों का प्राधान्य था, उनका दबदबा सब फैला हुआ था, धर्म के नाम पर बड़े २ अत्याचार होते थे, राजा रानियें और राजकुमारियें विलासिनी और चरित्रहीना थीं, प्रजा मूर्ख थी और डाकू इतने प्रबल थे कि वे मौका पाकर राजा को भी लूट लिया करते थे। इस उपन्यास में इटली की उसी समय की अवस्था का हाल है। इसमें धर्म के नाम पर पाद्ड़ियों की करतूतें, राजमहलों के गुप्त षड्यंत्र, राजकुमारियों की प्रेम लीला, और डाकुओं के जाल का रोचक हाल ऐसी सुन्दरता और अनूठेपन से लिखा ग[illegible] कि किताब शुरू करने पर फिर छोड़ने का मन नहीं करेगा। मूल्य— १।।=

हवाई डाकू

एक रोचक वैज्ञानिक और जासूसी उपन्यास। इस पुस्तक में एक डाकू दल का हाल लिखा गया है जो एक विचित्र प्रकार के नये आविष्कृत हवाई जहाज पर चढ़ कर जगह जगह डाके डाला करता था। कोई नहीं जानता था यह कहां रहता है कहां से आकर डाका डालता और फिर कहां चला जाता है। गुप्त रहं कर इसने सैकड़ों वायुयान तोड़े, पचासों बड़े बड़े जहाज डुबाये और अपने विचित्र और भयानक वैज्ञानिक यंत्रों की सहायता से हर कईबर्बाद कर हजारों आदमियों की जानें मारीं। अन्त में, एक औरत ने बड़ी चालाकी से इसके रहने की जगह का पता लगाया और स्वयं एक विचित्र यंत्र बना कर उसकी मदद से इसका नाश किया। बड़ा ही रोचक उपन्यास है। कई रंगीन और सादे चित्रों सहित। मूल्य केवल— १॥)

जीवन संध्या

प्रसिद्ध बंगाली लेखक श्रीयुत आर० सी० दत्त महाशय का नाम प्रायः अधिकांश उपन्यास प्रेमियों ने सुना होगा। यह उपन्यास उन्हीं ख्यातनामा लेखक की लेखनी से निकली मूल पुस्तक का अनुवाद है। उपन्यास उस समय की घटनाओं के आधार पर है जब कि राणा प्रताप सिंह अपना सुख, राज्य और प्राणों का मोह त्याग यवनों से अपनी जन्म भूमि के उद्धारार्थ युद्ध कर रहे और प्रबल यवन गण राजपूतों का मान मर्दन कर उनका सिर नीचे झुकाना चाहते थे। इस पुस्तक में स्त्री का अटल स्नेह, शील बाला का स्वार्थ त्याग प्रेम को विजय संतोष के फल का मूल्य क्या होता है यह भी आप देखेंगे। करीब ३०० पृष्ठ की मोटी पुस्तक का मूल्य केवल— १॥)

भारत-जीवन

(साप्ताहिक पत्र)

इस प्रान्त में हिन्दी भाषा का यह सब से प्राचीन साप्ताहिक पत्र है। इसके जन्मदाता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र थे। वे इसका प्रारंभ कर कुछ ही महीनों के बाद स्वर्गवासी हुए अतएव यह उनका स्मारकस्वरूप भी है, अस्तु प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को इसका ग्राहक होना चाहिये। इसके प्रत्येक अंक में विचारपूर्ण लेख, गंभीर टिप्पणियाँ, ताजे समाचार, खेल सामग्री, मनोरंजक हास्य, विनोद, वैज्ञानिक बातें, कविता, गायन, किस्सा, उपन्यास, कहाँ तक गिनावें सभी कुछ रहता है। अगर आप इसके एक बार ग्राहक हो जायँगे तो फिर कभी इसे छोड़ना पसंद न करेंगे। वार्षिक मूल्य केवल ५) नमूना मुफ्त भेजा जाता है।

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर भारत-जीवन

कहरी कुड़ियाँ,

बनारस सिटी।

उपन्यास-लहरी

(मासिक पत्र)

इस मासिक पत्र में केवल उपन्यास और छोटे छोटे किस्से निकलते हैं। जिस समय आपको और कोई काम न हो और फुरसत के दो चार घंटे आप आराम के साथ बिताया चाहते हों तो इस मासिकपत्र को उठा लीजिये। इसकी रोचक कहानियें और घटनापूर्ण उपन्यास आपके मन को शान्त भी करेंगे और विश्राम भी देंगे। हर एक अंक में कई छोटी छोटी कहानियां और एक सिलसिलेवार बड़ा उपन्यास रहता है। प्रायः चित्र भी रहते हैं। इसके टक्कर का ऐसा मासिक पत्र आपको और कहीं न मिलेगा। वार्षिक मूल्य केवल— ३)

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर, उपन्यास लहरी,

लहरी बुकडिपो,

बनारस सिटी।